पुराण दिग्दर्शन
परिशिष्ट
—माधवाचार्य शास्त्री
माधव पुस्तकालय १०३ ए कमला नगर दिल्ली

पुराणदिग्दर्शन–परिशिष्ट

(प्रत्यक्षाध्यायः)

...०००...

लेखकः—
पं० माधवाचार्य शास्त्री

प्रकाशक—
माधव-पुस्तकालय
१०३ ए, कमलानगर, दिल्ली-७

मुद्रक—श्रीकण्ठ शास्त्री व्याकरणाचार्य एम. ए.
धर्मप्रेस १०३ ए, कमलानगर, देहली।

दो शब्द

पुराणदिग्दर्शन प्रत्यक्षाध्याय को परिशिष्ट रूप में पुनः प्रकाशित करते हुए आज हमें महान् हर्ष है। प्रस्तुत पुस्तक में पुराण वर्णित उन मुख्य २ तथ्यों को—जिन्हें कि आज का कथित बुद्धिवादी असम्भव और गप्प बताकर काल्पनिक गाथा (Mythology) मात्र मानता है, साम्प्रतिक जगत् में उपलब्ध घटनाओं से तुलित कर प्रत्यक्षवाद की कसौटी पर परखा गया है और हमें प्रसन्नता है कि प्रत्यक्षवाद की इस परीक्षा-अनल में तप कर पुराणों के ये वर्णन और भी निखर कर कुन्दन की भाँति देदीप्यमान हो उठे हैं।

आज का युग समाचारपत्रों का युग है। संसार का कोई कोना, भूमण्डल का कोई अंचल ऐसा नहीं है जहां इनकी पहुंच न हो। संसार में प्रतिदिन प्रकाशित होने वाले समाचारपत्रों की संख्या १८ सौ से अधिक है साप्ताहिक और मासिक भी खूब निकलते हैं। अकेले भारत में ही सैंकड़ों दैनिक-पत्र प्रकाशित होते हैं। आज का सभ्य संसार बैड टी की तरह अखबार भी बिस्तर पर चाहता है। पौष माघ की कड़कती सर्दी में, और वैशाख ज्येष्ठ की मादक प्रभात वेला में जब कि लोग बिस्तर में पड़े हुए आराम से नींद के खुर्राटे लेते हैं, हॉकर लोग जनता की इस इच्छापूर्ति के लिये 'पेपर पेपर' चिल्लाते हुये गली २ का चक्कर लगाया करते हैं। सच पूछिये तो समाचारपत्रों की महत्ता के सामने आज वेद पुराण स्मृति शास्त्र सभी फीके से पड़ गये हैं। लोग प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में वेदों के स्थान पर आज समाचारपत्र का ही पारायण करते हैं। ऐसे महत्त्वपूर्ण बीसवीं सदी के साक्षात् वेद रूप समाचार पत्रों से उन २ पौराणिक वर्णनों के पोषक निदर्शन प्रस्तुत करके लेखक ने एक बार बुद्धिवादियों को भी यह सोचने के लिए विवश कर दिया है कि अपनी अल्पाति अल्प मति में न समा सकने वाली बात को असम्भव या गप्प बतला देना अपनी बुद्धिहीनता का प्रमाण उपस्थित करना है। हमें आशा है पुराणप्रेमियों और पुराणविरोधियों दोनों को ही इस पुस्तक से लाभ पहुँचेगा और वे पुराणों को हेय न समझ कर उनके स्वाध्याय की ओर संलग्न होंगे।

गुरुपूर्णिमा/२०२७ —श्रीकण्ठ शास्त्री

विषय-सूची

विषय सूची

* श्री: *

परिशिष्ट भाग:

प्रत्यक्षाध्याय

पुराण-घटना: काश्चिदाक्षिप्यन्तेऽल्पबुद्धिभि: ।
अध्यायेऽस्मिन् समर्थ्यन्ते तास्ता: प्रत्यक्ष-हेतुभि: ।।

असंभव की अदुष्ट परिभाषा

यह निखिल विश्व-प्रपञ्च, सर्वशक्तिमान् भगवान् के असीम और अगाध लीलासागर की एक नगण्य तरङ्ग से समुद्-भूत अल्पकाय-विन्दु की भी लघुतम सीकर का परिणाम है । भगवान् की अघटित-घटना-पटीयसी महीयसी माया से मुग्ध यह जीव जब अपने आपको जान सकने में ही असमर्थ है तब वह विश्व को 'इदमित्थम्' जान सकेगा—यह सम्भावना तो मृगमरीचिका के समान केवल विडम्बना मात्र है ।

जबकि यह समस्त ब्रह्माण्ड ही सर्वथा अज्ञेय, अनिर्वचनीय एवं आपातत: 'असम्भव' से समुद्भूत है तब भला वह मानव-कल्पित

सम्भावना की कोटि में कैसे आ सकता है ? मनुष्य ने प्रकृति-जन्य सव कृत्यों को अपनी कल्पना के अनुसार (१) सम्भव (२) विचित्र एवं (३) असम्भव इन तीन भागों में विभक्त कर रक्खा है। जिन कार्यों को वह नित्य होते देखता है—फिर चाहे वे कितने ही असम्भव क्यों न हों—उन्हें वह सतत आभास के कारण 'सम्भव' कहता है। और जो कार्य जीवन भर में कभी २ एक दो बार ही अनुभव में आते हैं—तादृश क्वाचित्क कृत्यों को वह अद्‌भुत विचित्र किंवा आश्चर्यजनक मानता है परन्तु जो घटनाएं उसे अपने छोटे से जीवन में कभी घटती प्रत्यक्ष न दीख पड़ती हों किन्तु इतिहास पुराण आदि ग्रन्थों में ही 'युग-युगान्तर और कल्प-कल्पान्तर में कभी ऐसी घटना घटी थी'—ऐसा उल्लेख विद्यमान हो तादृश घटनाओं को वह 'असम्भव' नामुमकिन प्रकृति के विरुद्ध आदि २ नामों से घोषित कर डालता है। अब पाठक जरा मनोविज्ञान के अनुसार अल्पज्ञ मनुष्य की उपर्युक्त विभाग कल्पना पर विचार करेंगे तो सुस्पष्ट विदित होगा कि उसकी यह विभाग कल्पना ही अविचार पर आधारित है। उदाहरणार्थ वह निरन्तर देखता है कि मनुष्य आदि थलचर प्राणी जल में डूब मरते हैं परन्तु मछली आदि जलचर जल में ही जीवित रहते हैं और स्थल में मर जाते हैं। सतत अवलोकन के आधार पर मनुष्य ने उपर्युक्त घटना को सम्भव और सत्य मान रक्खा है, परन्तु इससे आगे वढ़कर यदि उसे यह कहा जाय कि 'जलचर मत्स्य की भान्ति आग्नेय परमाणुओं से संघटित देह वाले प्राणी भी होते हैं जो अग्नि में ही जीवित रहते हैं और वाहिर निकलते ही मर जाते हैं'—तो इस अदृष्ट तथ्य को वह मानने के लिये कभी प्रस्तुत न होगा। इसे असम्भव और नामुमकिन ही मानेगा। फिर चाहे है यह त्रिकालाबाधित एकांत सत्य !

यह मानव-शरीर जिस भ्रूणकीट से बढ़ कर साढ़े तीन हाथ

लम्वा और मनों भर तोल वजन का आज दीख पड़ रहा है वीर्य की एक विन्दु में—तादृश कीट अन्यून सत्रह लाख से अधिक विद्यमान रहते हैं। माता की जिस उदर-दरी में, जाठराग्नि की धधकती भट्टी की प्रचण्ड ज्वालाओं में—गाड़ियों अन्न, कोठा भर चीनी के थैले और घृत के टीन के टीन भस्मसात् हो जाते हैं उसी भट्टी के एक कोने में नौ दस महीने पड़ा वह नगण्य भ्रूणकीट क्यों नहीं भस्मसात् हो गया ? यह एक अतीव असम्भव कृत्य भी सतत दर्शन के कारण ही हमने सम्भव मान रक्खा है। इसीलिये अद्यावधि सम्भव और असम्भव की ऐसी कोई अदुष्ट परिभाषा ही नियत नहीं की जा सकी कि जिसके आधार पर बिना 'अव्याप्ति' और 'अतिव्याप्ति' के हम किसी कृत्य को वैसा कह सकने में साधिकार हो सकते हों !

प्रत्यक्षवादी भी निराश न हों

विगत अध्यायों में हमने वेदादि शास्त्रों के प्रमाणों और वैज्ञानिक युक्ति प्रत्युक्तियों द्वारा पुराणवर्णित तत्तत् कथाओं का समाधान किया है परन्तु 'लातों के भूत बातों से नहीं मानते ।' हमने अनेक बार यह अनुभव किया है कि हमारी सब शास्त्रीय बातें सुनने के बाद और अगत्या मूक हो जाने के अनन्तर भी वहुत से आधुनिक शङ्कावादी विचलित से ही रहते हैं अर्थात् उन्हें हमारे कथन से पूर्ण आत्म सन्तोष नहीं हो पाता। क्योंकि इस श्रेणी के शङ्कावादी न तो वेद-शास्त्रों पर दृढ़ आस्था रखते हैं और नाही वर्तमान भौतिक-विज्ञान का उन्हें उतना परिचय होता है अतः वे सब कुछ सुन कर भी शङ्कित से ही बने रहते हैं अन्त में जब हमने पुराण-वर्णित घटनाओं से मिलती जुलती आजके युग में घटने वाली घटनाओं का समाचार पत्रों में छपा विवरण पढ़कर सुनाया और उस समाचार पत्र का तिथि सहित कटिङ्ग दिखाया तो

शङ्कावादी महाशय आनन्दोद्रेक से फुंवकारें भरने लगे और हमारी बलैयां लेने लगे ।

यह एक नग्न सत्य है कि आज के युग में भारत में इस कोटि के मनुष्यों की संख्या कम नहीं है जोकि वेद-शास्त्र और विज्ञान की अपेक्षा समाचार पत्रों की खबरों को अधिक प्रामाणित मानते हैं। इसलिये इस कोटि के पाठकों के लिये हमने इस संस्करण के समय परिशिष्टरूप से उक्त प्रत्यक्षाध्याय को भी सम्मिलित करना उचित समझा है। प्रमाण-वादी विद्वान् हमारे उद्धृत किये वेद-शास्त्रों के प्रमाणों से सन्तोष अनुभव करते हैं और विज्ञान-प्रिय सज्जन हमारी वैज्ञानिक विवेचना से सन्तुष्ट हो जाते हैं फिर हम अपने प्रत्यक्ष-प्रमाणाग्रही महानुभावों को ही असन्तुष्ट क्यों होने दें ! एतदर्थ इस अध्याय में 'शीर्षक' हमारे हैं जो कि पुराण-वर्णित किसी असम्भवाभासोपलक्षित घटना का स्मरण दिलाते हैं और नीचे अमुक समाचार पत्र में छपा विवरण ज्यों का त्यों 'मक्षिकास्थाने मक्षिका' रूप से उद्धृत किया गया है। इसमें समाचार-पत्र और प्रकाशन स्थान एवं प्रकाशन तिथि का पूरा २ ब्यौरा भी छाप दिया गया है। कहीं २ उचित टिप्पणी भी हमारी अपनी हैं। हमारे कार्यालय में उक्त उद्धरणों के असली कटिङ्ग भी सुरक्षित रहेंगे जिससे कोई शङ्कालु महाशय चाहें तो स्वयं उपस्थित हो कर अपनी आंखों देख कर भी तसल्ली कर सकेंगे। हमने अपने उद्धृत किये सभी समाचारों की अन्य सूत्रों से भी यथासम्भव प्रायः पुष्टि करवा ली है तथापि इनकी प्रामाणिकता का अन्तिम दायित्व तो संविधान के अनुसार उन २ पत्रों पर ही निर्भर करता है।

इस अध्याय की अधिकांश सामग्री जुटाने में सुप्रसिद्ध भक्त रामशरण दास जी स्थान—पिलखुवा जिला मेरठ निवासी ने अत्यधिक परिश्रम किया है, जिससे वे धन्यवाद और शुभाशीर्वाद के पात्र हैं।

इन २ अंशों के असली कटिङ्ग भी भक्त जी के संग्रह में ही सुरक्षित हैं बहुत सी घटनाएँ तो उनकी अपनी आंखों देखी है अतः पाठक चाहें तो उनसे मिल कर या उपर्युक्त पते पर पत्रालाप द्वारा भी उनसे अधिक जानकारी प्राप्त करके अपनी तसल्ली कर सकते हैं।

जादू वही जो शिर चढ़ बोले

सत्य घटनायें सामने रखने से पहले यह भी बता देना चाहते हैं कि जिन पुराणों को कभी नास्तिक गपोड़े कपोलकल्पित और झूठे बता कर हँसा करते थे अभी अक्तूबर सन् १६५७ में रूस ने आकाश में उपग्रह छोड़ा है और चन्द्रलोक में जाने की घोषणा की है। इससे आर्यसमाजी, कांग्रेसी, ईसाई और मुसलमानों के छक्के छूट गये हैं और उन्हें पुराणों के सामने नतमस्तक होना पड़ा है तथा पुराणों की बातें अक्षरशः सत्य हैं यह मानना पड़ा है। इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हम आपके सामने रखते हैं जो डंके की चोट पुराणों की सत्यता सिद्ध करते हैं।

श्री जगजीवनराम की पुराणों में आस्था

सुप्रसिद्ध कांग्रेसी, गांधी जी के परम भक्त, अन्त्यज नेता रेलवे मंत्री श्री जगजीवनराम ने १२ अक्तूबर १६५७ में पिलखुवा कांग्रेसियों की विराट् सभा में बोलते हुये कहा कि—

(१) 'हम जब पहले बच्चे थे तब स्कूलों में जब कभी रामायणों में पुराणों में यह पढ़ा करते थे और सुना करते थे कि रामचन्द्र जी पुष्पक विमान में बैठ कर आये और हमारे पूर्वज विमानों में चलते थे और चन्द्रलोक में जाते थे तो इसे गप्प मानते थे और झूठ समझते थे परन्तु आज जब आकाश में हवाई जहाज उड़ते देखते हैं और रूस ने

टिप्पणी * अब अमेरिकन चन्द्रयान (अपोलो १२) वहां हो भी आया है।

जो उपग्रह छोड़ा है, राकेट बनाया है और वह चन्द्रलोक में जाने की तैयारी कर रहा है, तो यह देखकर हमें बरबस अपनी रामायण की और पुराणों की बातों को सत्य मानना पड़ता है। जो बातें आज होने जा रही हैं वह हमारे पूर्वजों ने पहले ही लिख डाली हैं।'

हिन्दुस्तान सम्पादक का सही दृष्टिकोण

दूसरा प्रमाण और लीजिये। यह कांग्रेसी पत्र 'हिन्दुस्तान' दिल्ली (ता० १३ अक्तूबर सन् ५७ पृष्ठ ८) की सम्पादकीय टिप्पणी, जो इस प्रकार है—

(२) 'कुछ दुर्भाग्य ही ऐसा हो गया है कि हमारे देश को किसी बात की महत्ता तब तक नहीं मिलती जब तक विदेशी लोग उसकी सराहना न कर दें। हमारे पंडित संस्कृत भाषा के गुण गाते रहे, किसी ने न सुना। पर जब मैक्समूलर उसको तरफ मुखातिब हुये तो तत्काल संस्कृत भाषा महान् बन गई।

जब हम भास का और कालीदास का, सूर का और तुलसीदास का गुणगान करते थे तो आज के पढ़े-लिखे अंग्रेजीदां लोग मुंह बिचकाते थे, पर रूस में, चीन में शाकुन्तल खेला गया, रूस में तुलसीकृत रामायण का अनुवाद हुआ, प्रेमचन्द की कृतियों की प्रतियाँ सारे संसार में छपने-बिकने लगीं तो लोग चौकन्ने हो गये।

इसी तरह जब हमने कहा कि प्राचीन भारत में विमान उड़ा करते थे तो किसी ने नहीं माना। हमने कहा कि भाई, हमारी पुरानी पुस्तकें जर्मनी चली गई हैं, उनमें यान-विमान के सब भेद बताये गये हैं, तो लोग हँसने लगे। हमें दुःख है कि स्वयं बड़ाई लूटने की गरज से इस मामले में विदेशी विद्वानों ने हमारा साथ नहीं दिया। यानी इस बारे में हमें कोई विदेशी समर्थक नहीं मिला और हमारी बात खटाई में पड़ गई।

अब फिर हम कहते हैं कि रूस ने यह क्या मामूली सा हथियार निकाला है, जिसका संसार में इतना शोर मचा हुआ है ! लोग हमारी किताबों को, पुराण-इतिहास को पढ़ कर देखें, हमने भूतकाल में ऐसे २ शस्त्र बनाये हैं कि जिनके मुकाबले में ये बालचन्द या लालचन्द एकदम मन्द साबित होते हैं।

तरह २ के आग्नेय अस्त्रों के नाम तो आपने सुने ही होंगे। पाशुपत, नारायण और ब्राह्म अस्त्रों के वर्णन जिन्होंने पढ़े हैं, वे जान सकते हैं कि उनके मुकाबले में ये राकेट-फाकेट तो रत्ती भर भी नहीं हैं। रूस ने न जाने कितने वर्षों की तैयारी के बाद लोहे का न जाने कितने मन का यह गोला उसमें तरह तरह की चीजें रखकर और उसे भी एक राकेट पर लाद कर राम-राम करके भेजा, मगर हमारे यहां बनवासी राम ने जब वे सीता के पास रहस्य में बैठे हुये थे और लोहे का क्या बाँस तक का भी तीर नहीं था, जयंत के शैतानी करने पर बुहारी की सींक का जो बाण चला दिया था उसने इन्द्र-पुत्र जयंत को तीनों लोकी की हवा खिला दी। वह चोदह लोकों में भागा भागा फिरा मगर सींक के बाण ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। बताइये, रूस या अमेरिका तीन जन्म में भी ऐसी अस्त्र-सिद्धि कर सकते हैं ? रूसी लोगों ने अपने इस उपग्रह छोड़ने की सफलता को चन्द्रलोक की तैयारी कहा हैं और सारे संसार में इसकी भांति-भांति की प्रतिक्रियाएँ हो रही है। लेकिन लोग यह नहीं जानते कि हमारे यहां बिश्वामित्र नामक एक ऐसे ऋषि हो गये हैं, जिन्होंने वशिष्ठ से रूठ कर नई दुनिया ही बना डालने का निश्चय कर लिया था। उनके बनाये हुये सप्तऋषि आज भी अलग से आकाशमंडल में देखे जा सकते हैं। वह दूसरे सूर्य और चन्द्र, धरती और आकाश को भी बनाने चले थे, मगर संसार में हाहाकार मच गया। सुर, नर, गंधर्व, मुनि त्राहिमाम् करने लगे और सृष्टि के कल्याण के लिए महामुनि विश्वामित्र ने नई सृष्टि रचना का विचार छोड़ दिया।

अब आप ही बतायें कि कहां तो आज के वैज्ञानिक यह तक नहीं जानते कि चन्द्रमा में क्या है और वहां तक कैसे पहुंचा जा सकता है, और कहाँ हमारे यहाँ दूसरा चन्द्रमा बना देने की ताकत रखने वाले लोग विद्यमान थे।'

पुराणों को दिनरात गप्प बताने वाले घोर विरोधियों को भी पुराणों की महत्ता लिखने को बाध्य होना पड़ा। इससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है? अब हम आपके सामने पुराणों की बातें अक्षर अक्षर सत्य कैसे हैं यह डंके की चोट बिलकुल सत्य घटनायें सामने रखकर सिद्ध करने चले हैं और वह भी आपके प्राणप्रिय अखबारों द्वारा प्रमाणित एवं आँखों देखी घटनाओं के आधार पर।

पुराणों में दीर्घकाय मनुष्यों के निदर्शन

'दुनिया न माने' नामक पुस्तक में सांप्रतिक दीर्घकाय और लम्बे मनुष्यों का सचित्र उल्लेख विद्यमान है, परन्तु हम उससे भी अधिक लम्बे और दीर्घकाय मनुष्यों का यहां सप्रमाण उल्लेख करते हैं जिससे पुराण-वर्णित तादृश पुरुषों के वर्णनों को अतिरंजित और अतिशयोक्तिपूर्ण कहने का अवसर न रहे।

सवा नौ मन तोल का व्यक्ति

(३) 'समस्त संसार में (प्रसिद्ध योरुपियन) मिस्टर टैनीपललेम्बर्ट नामक एक व्यक्ति ऐसा स्थूलकाय था कि जिसका मान नौ मन साढ़े नौ सेर तोल में था। इसकी कटि तीन गज दो गिरह के लगभग थी।'

(हिन्दू-सर्वस्व' हरिद्वार २४-८-५५)

नौ गज लम्बा व्यक्ति

(४) मुलतान नगर में पिछले शीत में एक नौ गज लम्बा व्यक्ति विद्यमान था, जिसे सब लोग 'नौ गजा पीर' कहते थे। उसकी कब्र आज भी वहां के कब्रिस्तान में विद्यमान है जो हमने भी स्वयं अपनी आंखों देखी है, वहां के सभी नागरिक इससे सुपरिचित हैं।

'हिन्दुस्तान' दिल्ली ता० ३० अगस्त सन् १९४१ में छपी एक बिल्कुल सत्य घटना इस प्रकार है—

१३ गज लंबे पुरुषका अस्थिपिंजर मिला

दिल्ली के एक गाँव में जमीन खोदते समय अधिकारियों द्वारा छानबीन

(५) 'देहली प्रांत के एक गांव में खुदाई करते समय एक विचित्र अस्थिपिञ्जर मिला है, जिसके सम्बन्ध में यह ख्याल किया जाता है कि यह प्राचीनकाल के किसी व्यक्ति का है। इस पिंजर की कुछ हड्डियाँ देहली अधिकारियों के पास लाई गई हैं जिससे इस मनुष्य के डीलडौल का अनुमान लगाया जा सकता है। बयान किया जाता है कि यह अस्थिपिंजर १३ गज लम्बा है। इसकी खोपड़ी धोबियों के कपड़े धोने के कूंडे बराबर है और आंखों की खाली जगह आजकल के औस्तन मनुष्य की खोपड़ी के समान है। इसकी नाक के सुराख इतने चौड़े नापे जाते हैं कि आजकल के आदमी की मुठ्ठी बन्द होकर इसमें घुस सकती है। इसके दाँत ८-९ इञ्च लम्बे हैं। घुटने से लेकर टकने तक की पिण्डली की हड्डी दो गज के बराबर है। इसकी छाती ५ गज बताई जाती है। कुछ हड्डियाँ अधिकारियों के पास हैं और मालूम हुआ है कि जिला मजिस्ट्रेट श्री एच. जे. इविन्स ने पुलिस को हुक्म दिया है कि वह

इस अस्थिपिंजर के बाकी हिस्से भी तलाश करके लावे। इसके साथ साथ केन्द्रिय सरकार के अनुसन्धान-विभाग के विशेषज्ञ की राय भी ली जा रही है ताकि वे बता सकें कि यह अस्थिपिंजर किसका है।

अस्थिपिंजर कैसे मिला ?

बताया जाता है कि गांव तिलौकड़ी चौकी बदरपुर थाना महरोली में एक भट्टे के लिए जमीन खोदी जा रही थी जब कि मजदूरों को जमीन के अन्दर दबा हुआ हुआ यह मुकम्मिल ढाँचा मिला, परन्तु उन्होंने इसे तोड़ फोड़ कर हड्डियों के टुकड़े फैंक दिये। आस सास के गांव के लोगों को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने इसमें बड़ी दिलचस्पी दिखाई। कहा जाता है कि कुछ अस्थिपिंजर की हड्डियाँ उठा कर वे अपने साथ ले गये और कुछ हड्डियां पुलिस तक भी पहुँचीं। और जब मामला अधिकारियों के नोटिस में आया तो उन्होंने इस बात पर अफसोस प्रकट किया कि ऐसी महत्वपूर्ण वस्तु को इस प्रकार खराब कर दिया गया और हुक्म दिया गया कि इसके जितने भी हिस्से मिल सकें लाये जावें। मालूम हुआ है कि कुछ हिस्से मेरठ और बुलन्दशहर के जिलों में लोगों के पास पहुँच चुके हैं जिन्हें वापिस मंगाने की कोशिश की जा रही है।'

हमने स्वयं अपनी आंखों क्या देखा ?

यह समाचार हमने हिन्दुस्तान से ज्यों का त्यों दिया है। अब हमने अपनी आंखों से क्या देखा जरा यह भी ध्यान से सुनिये—

जिन दिनों यह १३ गज का अस्थिपिंजर पृथ्वी से निकला तो ठीक उसी समय पिलखुवा में खुड़ा नामक ग्राम के एक मास्टर श्री मुन्शी-लाल जी जो हमारे मित्र थे पढ़ाया करते थे। उनकी उस तिलोकड़ी

ग्राम में जहां कि यह १३ गज लम्वे मनुष्य का ग्रस्थिरपिञ्जर मिला था कोई रिश्तेदारी थी। वह भी अकस्मात् अपनी रिश्तेदारी में गये हुये थे। जब उन्होंने १३ गज लम्वे मनुष्य का अस्थिपिञ्जर अपनी आंखों से देखा तो उन्हें यह देखकर वड़ा आश्चर्य हुआ और जिस प्रकार और लोग अस्थि पिञ्जर के हिस्से ले जा रहे थे तो वह भी अपने साथ उस अस्थि पिञ्जर का एक दाँत ले आये। अपने गांव खेड़ा में आने के पश्चात् ये उस दाँत को हमें दिखलाने के लिये पिलखुवा हमारे स्थान पर भी ले आये। हमारे अतिरिक्त और भी सैंकड़ों मनुष्यों ने उस दाँत को देखा और जब उस दांत को सबके सामने तराजू में रखकर तोला तो वह दांत ११॥ साढ़े ग्यारह छटांक का निकला जिसे देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गये। ११॥ छटांक का ता वह इस समय था जवकि वह न जाने कितने हजार वर्षों से पृथ्वी में दवा पड़ा हुआ था और कम हो गया होगा। जब यह जीवित मनुष्य के होगा तो न जाने कितना भारी होगा? बाद में एक दिन पुलिस मास्टर मुंशीलाल जी से वह दाँत लेकर चली गई। इस प्रकार पुलिस ने जहां भी कोई भी हिस्सा ले गया था सभी को एकत्र करके एक जगह इकठ्ठा किया और उन सब को मशीनों द्वारा यथास्थान लगाकर जोड़ कर दिल्ली ले जा कर खड़ा कर दिया जिसे लाखों मनुष्यों ने देखा और समाचारपत्रों ने अद्भुत आश्चर्यजनक समाचार को छापा। बड़े-बड़े घोर नास्तिकों ने, पुराणों के विरोधियों ने इसे अपनी आंखों से देखा, दांतों तले अंगुली दबाई और पुराणों को माना।

कहिये महाशयो! अब क्या कहते हो, क्या अब भी पुराणों को गप्प बताओगे या सत्य मानोगे। अब तो यह बात पुराण नहीं बल्कि आपके प्राणप्रिय आर्यसमाजी और कांग्रेसी पत्र लिख रहे हैं, क्या इन्हें भी गपोड़े-बाजी बताओगे? अब तो आपके घर में ही पोप पैदा हो गये जो १३ गज लम्वे मनुष्य की बात सुनाने लगे।

पुराणोक्त बहुमुखों के निदर्शन

जब सुधारक पुराणों में 'रावण के दस सिर थे और बीस भुजायें थीं' यह पढ़ते हैं और भगवान् ब्रह्मा के चार मुख थे, भगवान् श्री दत्तात्रेय के तीन मुख थे, भगवान् श्री कार्तिकेय के छः मुख थे, यह पढ़ते हैं तो वह नाक भौं सिकोड़ कर इसे गपोड़ेबाजी बताने लगते है। कुएँ के मेंढक के दिमाग में भला यह क्योंकर आने लगा कि इस कुएँ से बढ़कर और भी कुछ होता है। वह तो समुद्र की बात सुनते ही कोरी गप्पबाजी बताने लगता है। अब अपने सुधारक पत्रों के द्वारा ही सुनिये कई कई मुखों वाली घटनाओं को !

तीन मुंह का बच्चा मुरादाबाद अस्पताल में

(६) 'मुरादाबाद १२ अगस्त सन् ४१। स्थानीय विक्टोरिया अस्पताल में एक तीन मुंह का बच्चा पैदा हुआ है जिसकी यहाँ बड़ी हलचल है। बच्चा अभी जिंदा है। कुछ ही दिन पहिले इस अस्पताल में चार हाथों व चार पैरों वाला एक बच्चा पैदा हुआ था, जिसे प्रदर्शन करने के पश्चात् लखनऊ अजायबघर में भेज दिया गया।'

(हिन्दुस्तान दिल्ली ता० १२ अगस्त १९४१)

पानीपत में पाँच सिरों वाली बालिका

ता० १६ जून सन् १९५४ के दिल्ली के सभी दैनिक समाचार पत्रों में यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि—

(७) 'पिछले दिनों पानीपत में यहां वार्ड नं० ११ में एक स्त्री के एक लड़की ने जन्म लिया है जिसके पांच सिर थे और इसके अतिरिक्त उसके हाथ पांव की उंगलियां पांच पांच की बजाय छः छः थी। सैंकड़ों लोग इस विचित्र बालक को देखने के लिए एकत्र हो गये।'

अद्भुत दोमुखी बछड़ा

(८) 'वीर अर्जुन' दिल्ली ता० ८ अगस्त सन् १९५६ में छपा है कि—बईली नगर में कल सनसनी फैल गई जब कि यह मालूम हुआ कि एक गाय के दोमुखी बछड़ा उत्पन्न हुआ है। उस बच्चे का एक मुख तो बछड़े जैसा है और दूसरा मुख शेर जैसा है और गर्दन भी उस बच्चे की पीली बताई जाती है और उसकी गर्दन पर बाल भी शेर जैसे थे। जिस समय यह बात नगर में फैली तो सहस्रों नर-नारी उस बछड़े को देखने के लिये पहुँच गये।

दो सिर चार भुजा का शिशु

सुप्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक 'हिन्दुस्तान टाइम्स' ता० २४ अगस्त सन् १९५५ प्रकाशित करता है :

Bhatinda Wonder, Baby

(9) Bhatinda, Aug. 23 —The hut where a Railway labourer's wife recently gave birth to a girl with two faces and four arms has become a centre of attraction.

People stop every train passing through
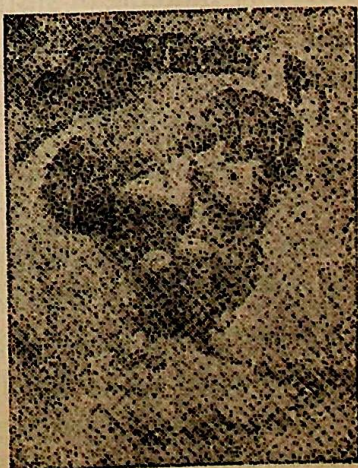
Kaulsaheri Railway station, near Dhuri on the Bhatinda Ambala line for about 10 minutes to have a glimpse of the strange baby.

The rush of visitors to the hut and later to Dhuri, where the Harijan family later shifted, could be imagined from reports that not less than Rs. 4,000 have been offered to the baby by the visitors.

An official here said that hundreds of letter had been received from all parts of the country, including Bombay, Calcutta and Madras, inquiring about the place where the baby could be seen. The parents of the girl are reported to the seriously thinking of shifting to Delhi for some time to make the best out of the "Gift" of nature.

The pictures of the baby are now in the market, Few would like to miss the baby from adorning their Albums.

The baby has a double set of human body up to the abdoman. The two function seperately, only legs make them look like one. The babies are being fed on artificial milk.

उपर्युक्त तिथि का 'हिन्दुस्तान' देहली भी लिखता है कि—'दो सिर और चार हाथों वाला असाधारण शिशु हाल ही में भटिंडा जिले

के कौलसाहरी ग्राम में एक हरिजन घर में उत्पन्न हुआ है। भटिंडा में एक रेलवे कुली की झोंपड़ी, जिसमें उसकी पत्नी ने एक दो सिर और चतुर्भुज बालिका को जन्म दिया है, हजारों लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन गई है। भटिंडा अम्बाला लाइन पर धुरी के निकट कौलसाहरी स्टेशन पर यात्री प्रत्येक गाड़ी को रोक लेते हैं जिससे वे इस अद्भुत शिशु को देख सकें। इस झोंपड़ी को देखने वालों तथा बाद में धुरी—जहाँ इस हरिजन परिवार को स्थानान्तरित कर दिया गया है—जाने वालों की संख्या की अधिकता का अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि इस शिशु पर अब तक दर्शकों ने ४००० चार हजार रुपये चढ़ा दिये हैं। एक अधिकारी ने बताया कि प्रतिदिन देश के सभी भागों से सैंकड़ों पत्र आ रहे हैं जिनमें यह पूछा जा रहा है कि शिशु को देखने आने के लिये किस प्रकार तथा कहाँ जाना चाहिये ? शिशु के माता पिता उसे दिल्ली ले जाने की सोच रहे हैं जिससे प्रकृति-प्रदत्त इस उपहार से वे अधिकतम लाभ उठा सकें। पेट तक शिशु के सब अङ्ग डबल हैं केवल कमर से लेकर वे एक हो गये हैं।'

पिछले दिनों श्री विनोबा भावे ने कहा था कि—जब आज तक संसार में कोई दो सिर का व्यक्ति भी नहीं हुआ तो दस सिर बीस भुजा का रावण कैसे हो सकता है ? इसलिये रामायण काल्पनिक है। हम ने उस दो सिर चार भुजा के शिशु का चित्र पीछे दिया है और इसे ट्रेन रोक रोककर हजारों लाखों मनुष्य ने देखा है। क्या इसे भी झूठ गपोड़े-बाजी कहा जायगा। जब आप प्रत्यक्ष सब बातें सामने देख रहे हैं फिर भी पुराणों को गप्प बता रहे हैं इससे बढ़कर अज्ञता की पराकाष्ठा और क्या होगी ?

'नवभारत टाइम्स' २६-२-५६ में छपा है कि—

(१०) जोधपुर २५ दिसम्बर। ज्ञात हुआ है कि यहां से ४० मील

दूर ओसिया तहसील के वाम्रोरी गांव में एक जाट स्त्री ने तीन सिर वाले एक बच्चे को जन्म दिया जिसके दो पुरुषेन्द्रियाँ और एक प्रजननेन्द्रिय थी। शिशु के तीन मुंहों में दांत थे।

दो सिर वाली कन्या

'नवभारत टाइम्स' दिल्ली ता० ४-७-५७ लिखता है कि—

(११) ,वैलोहोरी जोन्टी (ब्राजील) २२ दिसम्बर। निकट के एक ग्राम में दो सिर वाली कन्या का जन्म हुआ है। डाक्टर का कहना है कि शिशु की हालत अच्छी है। यह संभव है कि वह जीवित रह जाय। डा० आनिपो रिवैरीऐ डा० सिलवेरा का कहना है कि उक्त बालिका के दो आमाशय व दो छोटी अंतड़ियाँ हैं। छोटी अंतड़ी और गुदा भाग एक एक ही है। कई आंतरिक अवयव दुहरे हैं। सेन्ट विनसेन्ट अस्पताल में बालिका की परीक्षा की जा रही है।'

तीन भुजा और दो सिरों वाला बालक

'नवभारत टाइम्स' दिल्ली ता० ४-७-५७ लिखता है कि—

'औरैया ४ जुलाई। अकबरपुर गांव में एक विचित्र बालक के जन्म लेने का समाचार मिला है। बताया जाता है कि बच्चे के दो सिर मुंह, चार कान, चार आंखें और तीन भुजायें हैं एक मुंह में दो दाँत भी बताये जाते हैं। एक मुंह से दूध पिलाये जाने पर वह दूसरे से निकाल देता है। बालक स्वस्थ अवस्था में बताया जाता है।

दो सिर के १२ वर्षीय बालक से हमारी भेंट

(१२) लगभग ११-१२ वर्ष हो गये होंगे कि हम ने मथुरा में एक दुकान पर मोटे २ अक्षरो में यह लिखा हुआ देखा कि 'आइये आइये एक आना दीजिये और दो सिर के १२ वर्ष के अद्भुत बालक को देखिये।' मैंने अपने जीवन में कभी साँग, तमाशा, सिनेमा नहीं देखा है पर दो सिर

के वालक की वात सामने आई तो सहसा मन नहीं माना। जी में आया चलो देख लो। यदि वास्तविक में दो सिर का होगा तो शास्त्रों में, पुराणों में अविश्वास करने वालों के लिये मुंहतोड़ उत्तर हो जायगा। एक आना दिया और मैं अन्दर चला गया। जाकर देखा कि एक मेज पर एक वारह वर्ष का लड़का लेटा हुआ है उसके दो सिर हैं। उसने पर्दे को हटाते ही—वावू जी सलाम! वाव् जी सलाम!' कहना शुरू कर दिया। हम उससे ज्यों ही वातें करने के लिये कुछ आगे बढ़े कि झट से मालिक ने आगे आकर हम से कहा कि वावू जी, वापिस चलिये और वहुत से दर्शक आ रहे हैं उन्हें भी देखना है। मैं बाहर लौट आया पर मुझे यह देखकर भी कि उसने मुझे दोनों मुखों से एक साथ सलाम की है फिर भी संतोष नहीं हुआ और मन में वरावर यह शङ्का वनी रही कि हो न हो यह कोई चलाकी है और इसने कोई ऐसे ऐसे शीशे लगाये हुये हैं कि जिससे दो सिर है नहीं, लेकिन प्रतीत होते हैं। मैं फिर दोवारा गया और मालिक से कहा कि भाई मैं इसे अच्छी तरह से देखना चाहता हूँ और बातें भी करना चाहता हूं। मालिक ने कहा कि बाबू जी, एक आना खाली देख लेने मात्र का है और देखते ही बाहर आ जाने का है। आप आठ आने खर्च कीजिये और लड़के से बातें करिये। मैंने झट जेब से आठ आने निकाले और उसे देकर मैं अन्दर चला गया। मैंने लेटे हुये उस लड़के को अपने हाथों से उठा कर बैठाया और देखा तो वास्तव में लड़के के हाथ पैर तो सब दो ही हैं पर मुख दो हैं, चार आखें, चार कान हैं और लड़का दोनों मुखों से एक साथ बोलता भी है और जी चाहे तो एक से वातें करने लगता है और दूसरा मुख बन्द कर लेता है। इस अद्भुत आश्चर्यजनक सत्य घटना को देखकर और पुराणों की बातों को अक्षर अक्षर सत्य पाकर मैं चकित हो गया। लड़के ने मुझे एकान्त में पाकर कहा कि बावू जी, मैं आसाम की ओर का रहने वाला हूं, मैं जाति का हिन्दू हूं और व्राह्मण का लड़का हूं, यह मुसलमान मुझे गर्मी में इसी प्रकार मेज पर डाले रखते हैं और मुझे सारे दिन इसी प्रकार सब को जो भी देखने आता है सलाम सलाम करनी पड़ती है। मैं वड़ा ही परेशान हूं क्या

करूँ ? हमने जब बाहर आकर मालिक से कहा कि तुम इसे कहाँ से लाये हो और यह हिन्दू का लड़का है तो उसने झट पेटी में से कुछ कागज निकाल कर दिखाये और कहा कि वास्तव में यह हिन्दू ब्राह्मण का लड़का है पर मैं तो इसे भगाकर नहीं लाया। इसके माता पिता ने हमें इसे ६ महीने के लिये ५००) रु० लेकर के दिया है और बाद में अवधि पूरी होने पर जैसा फिर से तै होगा कर लेंगे, नहीं हुआ तो वापिस दे देंगे।

मैंने यह बात एक प्रत्यक्षवादी से आकर कही तो वह तो चार्वाक का चेला ठहरा। उसने झट मे इसे एकदम गपोड़बाजी, झूठ, कपोल-कल्पित पुराणों की गप्पाष्टक न जाने क्या २ बताना शुरू कर दिया और कहने लगा तुम्हारी इन बातों ने ही देश का सत्यानाश किया है और तुमने इसी प्रकार रावण के दस सिर, ब्रह्मा के चार मुख और भी न जाने क्या २ पुराणों मे भर रक्खा है। मैं तुम्हारे धोखे में नहीं आ सकता। मैं उसे अपने साथ लेकर वहां गया और तीसरी बार फिर अन्दर जाकर देखा और उसे दिखाया। वह प्रत्यक्ष-प्रिय सुधारक आंखों देखी इस सत्य घटना को देखकर दांतों तले अंगुली दबाने लगा और पुराणों की बातों को अक्षर अक्षर सत्य ही नहीं मानने लगा किन्तु पुराणों का परम भक्त भी बन गया।

चार हाथ दो सिर का बालक

(१३) '२६ जून—राजकोट का समाचार है कि वहां पर दो सिर चार हाथ केवल दो पैर वाला एक बालक जैनपुर के पास गोपालपुर गाँव में एक राजपूत गृह में उत्पन्न हुआ है। जैनपुर से राजकोट चार मील की दूरी पर है।'

(हिन्दी मिलाप २८ जून ५६)

दो सिर और तीन पैरवाला अद्भुत शिशु

(१४) चाँदा (उ० प्र०) यहाँ एक बहुत ही विलक्षण व अद्भुत बालक का जन्म हुआ है। उस बालक के हाथ व पैर तो दो ही हैं परन्तु सिर एक की जगह दो हैं। जनता भारी संख्या में इस बालक को देखने

के लिये आ रही है। इस घटना से पुराणों में आई राक्षसों की बात व कई २ सिर वाले दैत्यों की बात प्रत्यक्ष सिद्ध होती है।

(२७-१०-५७ हिन्दुस्तान दैनिक नई दिल्ली।)

दो सिर वाला बालक हमने स्वयं देखा

(१५) नीचे जिस बालक का चित्र दिया जा रहा है इसे हमने स्वयं अफ्रीका की यात्रा के समय केनिया की राजधानी नैरोबी के निकट एक घने जङ्गल में सन् १९२७ में हवशियों के घर में देखा था। और उसका तत्काल ही यह फोटो लिया गया था फिर भी हम कई बार इसकी विद्यमानता के समाचार जानते रहे हैं।
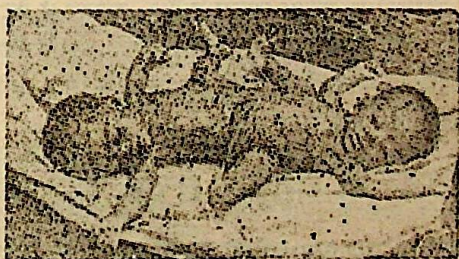
पुरुषके पेटसे बालक उत्पत्तिके निदर्शन

जब पुराणों में पुरुषों के पेठ से बच्चे उत्पन्न होने की घटनायें आती हैं तो महाशय उन्हें गप्प बताने लगते हैं। हम इस सम्बन्ध की सत्य घटनाओं का सप्रमाण उल्लेख करते हैं।

पुरुष के पेट में बच्चा

(१६) 'नवभारत टाइम्स दिल्ली' ता० ६ मार्च सन् १९५४ पृष्ठ १ में तथा हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी के सभी समाचार पत्रों में और खासकर पाकिस्तान के पत्रों में मोटे मोटे शीर्षकों में छपा है यथा—

'लाहौर ५ मार्च। वहावलपुर के विक्टोरिया अस्पताल में २५ वर्षीय एक पुरुष को वच्चा पैदा होने की संभावना है। पुरुष उमरवाडा के प्रारम्भिक आपरेशन से पता चला है कि सिर व दाँत आदि वाला पूर्ण विकसित वच्चा छोटे रूप में उसके पेट में पड़ा है। उमरवाड़ा का कहना है कि उसका पेट फूला था और कभी कभी दर्द के वावजूद वह इसे मामूली तकलीफ समझता रहा लेकिन सर्जन ने आपरेशन करके पेट में वच्चा पाया है। सर्जन का कहना है कि वास्तविकता में वच्चा उमरवाड़ा का जुड़वां है और उसी की आयु का है। माँ के गर्भ में यह जुड़वां किसी तरह उमरवाड़ा के पेट में चला गया है और २५ वर्ष तक उमरवाड़ा के पेट में रहा। चीरफाड़ के इतिहास में यह दूसरी घटना है और डाक्टर को पूरी आशा नहीं है कि वच्चे को पेट से अलग करने पर उमरवाड़ा जीवित रह सकेगा अथवा नहीं। डाक्टर ने पेट में पड़े वच्चे के वाल काट लिये हैं और उससे १० गज लम्वी रस्सी तैयार की है जो दर्शकों को दिखाई जाती है। रोगी को देखने के लिये आने वाली भीड़ को रोकने के दिये नियम वना लिये गये हैं।'

युवक के पेट से बच्चे का जन्म

'वीर अर्जुन' (देहली) ता० ९ सितम्वर सन् १९५५ का समाचार है कि—

(१८) 'कलकत्ता ७ सितम्वर। हम कितने विचित्र संसार में रहते हैं इसका एक और आश्चर्यजनक उदाहरण मिला है। उत्तर वियतनाम के एक पुरुष ने वच्चे को जन्म दिया है, जो १२ घण्टे जीवित रहने के पश्चात् मर गया। हुनोई नामक एक वियतनामी १८ वर्षीय युवक के पेडू में पीड़ा होती रही और गर्भवती स्त्री के समान उसका पेट भी फूलने लगा। तव उसे हनोई के परसिन अस्पताल में भर्ती किया गया। २६ अक्तूवर को सफल आपरेशन से उसने एक जीवित नर शिशु को जन्म दिया। कलकत्ते के एक वंगाली सज्जन श्री अजीत कुमार तरन ने इस घटना को हनोई में अपनी आँखों देखा।'

लड़के में लड़का

(१७) 'वीर अर्जुन' (दिल्ली) जो एक आर्यसमाजी महाशय का पत्र है ता० ८-९-५६ में लिखता है—

टोकियो ६ सितम्वर। कल यहां एक ८ वर्षीय जापानी लड़के के पेट से ११ औंस का एक अपरिपक्व वच्चा निकाला गया जिसकी बाहें, टांगें, दाँत, व वाल थे। अस्पताल के डाक्टरों का कहना है कि आपरेशन के पश्चात् लड़का आराम कर रहा है।

१७ वर्ष के नवयुवक ने बच्चे को जन्म दिया।

एक सत्रह वर्ष के ल ड़के ने एक वच्चे को जन्म दिया। यह वच्चा जिसका वजन ३ पौण्ड १५ औंस है, पेरिस के एक अस्पताल में आपरेशन करके एक लड़के के पेट से निकाला गया।
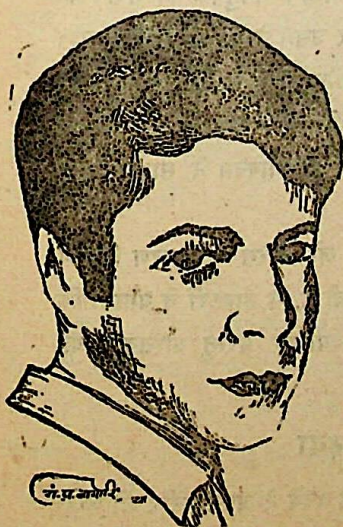
यह नवयुवक लड़का जिसका नाम जीन लीक्वस है अपनी माँ के साथ पैरिस में रीऊगुटेन वर्ग शहरमें रहता था। वह अब बिल्कुल ठीक है। इस वच्चे का जो जीन लीक्वस का जुड़वाँ भाई कहा जायगा, शरीर नौ इञ्च लम्बा है। इसके शरीर में हड्डियाँ अंतड़ियां वाल तथा साथ ही साथ दाँत भी मौजूद हैं जीन-लीक्वस ने इस वच्चे को साधारण रूप से जन्म दिया और उसके बच्चे का गर्भ उसके स्वयं के फेफड़े के पास अन्दर ही विकसित हुआ। यह गर्भ सत्रह वर्ष से ठहरा हुआ

था और वहां अभी कुछ सप्ताह पूर्व तक धीरे धीरे विकसित हो रहा था। जीनलीक्वस ने अपनी छाती में दर्द की शिकायत की जिसके परिमाण स्वरूप इस आश्चर्यजनक सत्य का स्पष्टीकरण हुआ।

ब्रिटेन के एक सुविख्यात पैथोलोजिस्ट ने अपने विचार प्रकट करते हुये कहा है 'मैंने कभी इस प्रकार की घटना नहीं सुनी है।' यह वास्तव में वीर्य के अन्दर जुड़वाँपन होने की आश्चर्यजनक घटना है। जिसमें दोनों त्वचा के साथ मिले हुये होते हुये भी एक जीव—पूर्णतया दूसरे के अन्दर स्थित हुआ है।"

जब जीनलीक्वस ने सर्व प्रथम अपने दर्द के बारे में कहा तो डाक्टरों ने कुछ दिल की बीमारी बताया। इसके पश्चात् X Ray ऐक्सरे लिया गया। और उसे तपोदिक का सन्देह समझा गया। इसके बाद उसमें आपरेशन करने का निर्णय हुआ। इस आपरेशन को बोसिकट अस्पताल में एक घण्टा पैंतालिस मिनट लगा। नवयुवक की शरीर की दाहिनी ओर का हिस्सा खोला गया और उसमें फेफड़े की दाहिनी ओर अन्दर डाक्टर और सर्जन ने उस छोटे जीव को पाया जो उस समय भी विकास की ओर था। यह बड़ा गम्भीर आपरेशन था फिर भी यह पूर्णतया कामयाब रहा और इस प्रकार जीनलीक्वस ने साधारणतया एक बच्चे को जन्म दिया।

जीनलीक्वस की माँ श्रीमती लारेन्ट, जो पैरिस में प्रसारण विभाग के दफ्तर में एक अधिकारी का काम करती है, से डाक्टरों ने बताया कि सत्रह वर्ष पूर्व तुमने एक पुत्र को जन्म दिया था परन्तु वास्तव में यह दो जुड़वां जीव थे।

जीवित अवस्था

जीनलीक्वस के पेट में जहां इस छोटे बच्चे ने अपने शरीर को धीरे-

धीरे विकास किया अपनी दशा से आशावान् है कि वह जीवित रह सकता है। बिलकुल अविश्वसनीय था कि वह गर्भाधान इस प्रकार से विकसित होगा। एक बच्चे की साधारणतया जिसका वजन ३ पौंड ५५ औंस है, बहुत हद तक जीवित रहने की सम्भावना है।

जीन लीक्वस ने अस्पताल में लेटे हुये कल ही यह बताया कि मुझे डाक्टरी का तो पता नहीं लेकिन जब मुझे यह छोटा जीव, जो मेरे पेट से निकाला गया था, दिखाया गया तो इस कल्पना ने मुझे आश्चर्य चकित कर दिया कि जुड़वाँ जीव उतनी ही आयु का है कि जितना मैं स्वयं हूं।"

जीनलीक्वस धीरे धीरे ठीक हो रहा है और कुछ ही दिनों में वह अपने दोस्तों के साथ उसी टैकनीकल स्कूल में चला जायेगा, जहाँ वह अब तक औद्योगिक कारीगरी का अध्ययन कर रहा था। और इसके अतिरिक्त कि यह डाक्टरी क्षेत्र में विख्यात हो गया, इसके पिता जो बहुत दिनों से नहीं मिल पा रहे थे इसे देखने के लिये वहाँ पर आये। इसके माता पिता जो बहुत दिनों से इस नवयुवक से जुदा थे इस असाधारण घटना ने इस समूचे परिवार को एक जगह मिला दिया और इसके माता पिता अपने पुत्र को बिछोने पर इस हालत में पड़ा हुआ देखकर हँस रहे थे।'

(Sunday Graphic
19-4-1964 Page 9)

पाठको, यह हमने अंग्रेजी अखबार का अनुवाद ज्यों का त्यों दिया है। इस सत्य घटना से जहाँ मान्धाता आदि के पेट से बच्चा पैदा होने की बात की पुष्टि होती हैं वहाँ पूज्य महर्षि श्री शुकदेव जी महाराज के सम्बन्ध में जब पुराणों में यह आता है कि वह अपनी माता के पेट में १२ वर्ष तक रहे तो इसे भी आर्यसमाजी लोग सत्य नहीं मानते। लेकिन इस अंग्रेज मि० जीन लीक्वस लड़के के पेट में १७ वर्ष तक

बराबर इस बच्चे के रहने से पुराणों की श्री शुकदेव जी महाराज वाली घटना की भी पुष्टि हो जाती है। कहिये आर्यसमाजी महाशय अब भी क्या पुराणों को गप्प बताने की धृष्टता करोगे या पुराणों की शरण में आ अपना कल्याण करने का निश्चय करोगे ?

तोते ने अंडे दिये

(१९) अब तक तो हम ने मनुष्यों ने बच्चे दिये ऐसी घटनायें उद्धत की हैं। अब हम एक बहुत बड़ी आश्चर्यजनक सत्य घटना दे रहे हैं जो 'नवभारत टाइम्स' आदि कितने ही समाचार-पत्रों में निकली है और जो सन् १९५७ की है, इस प्रकार है—

'शाहजहांपुर (डाक से) स्थानीय मुहल्ला बक्सरियां में पिञ्जरे में बन्द एकान्तवासी एक तोते ने अण्डे दिये। हमारे सम्वाददाता ने भी सत्यता के लिये देखा तो तोता ३ अण्डों पर बैठा सो रहा था। बताया गया है कि इस तोते ने गत माह एक अण्डा दिया था जो बाद को फट गया। इस माह भी उसने ३ अण्डे अब तक दिये हैं जिनमें से दो लोगों को दिखाने में टूट गये व एक अब भी मौजूद है। तोता पिञ्जरे में ४-५ साल से बन्द है। प्रकृति की अलौकिकता पर सब को आश्चर्य है।'

यह कितनी विचित्र बात है कि तोता भी अण्डा देने लगा और वह भी ५ वर्ष से अकेला पिंजरे में बन्द ! संगम के बिना अकेले तोते के पेट में गर्भाधान कैसे हो गया ?

नर खच्चर ने बच्चा जना

(२०) 'नवभारत टाइम्स' दिल्ली ता० २० मार्च १९५४ में विचित्र घटना छपी है कि जिला मेरठ में एक नर खच्चर ने बच्चे को जन्म दिया है। प्रायः सभी अखबारों में यह समाचार तथा उस खच्चर के चित्र भी छपे हैं।

दैत्य दानव और राक्षसों के निदर्शन

जब कभी पुराणों में बड़े बड़े भयंकर राक्षसों का वर्णन आता है कि राक्षस काले होते हैं, उनके सिर पर सींग और उनकी सूरत भयानक डरावनी होती है और वे पैदा होते ही मारने दौड़ने लगते हैं। या जब कभी पुराणों में ऐसे शिशुओं का वर्णन आता है कि उन्होंने पैदा होते ही बोलना दौड़ना प्रारम्भ कर दिया तो इसे महाशय लोग गप्प बता दिया करते हैं। परन्तु इस सम्बन्ध की बिल्कुल सत्य घटनायें हम पाठकों के सामने रखते हैं जिनसे पुराणों की बातें अक्षर २ सत्य सिद्ध होती हैं।

सींगों वाला बालक

दिल्ली का प्रसिद्ध आर्यसमाजी पत्र 'वीर अर्जुन' (ता० २ जुलाई सन् १९५४) लिखता है कि—

(२१) 'रुड़की ३० जून। रामपुर से समाचार मिला है कि सिविल लाइन के क्षेत्र में एक विचित्र बच्चे ने जन्म लिया है जिसके सिर पर बैल की तरह सींग हैं और उसका रूप बन्दर जैसा है। टाँगें नीले रंग की और आधा सिर जरद रंग है। आंखें बहुत बड़ी बड़ी हैं। उसके दांत भी हैं। घर वालों ने बच्चे को दरवाजे पर लिटा दिया है। हजारों लोग देखने जा रहे हैं।'

दो जिह्वा वाला राक्षस बालक

'नवभारत टाइम्स' १ अप्रैल सन् १९५७ लिखता है कि—

(२२) 'सोनापुर ३१ मार्च। यहां प्राप्त समाचारों से ज्ञात हुआ है कि सब्बलपोल ग्राम में एक स्त्री ने एक अद्भुत शिशु को जन्म दिया है। कहा जाता है कि उक्त शिशु किसी भी लिङ्ग का नहीं है और उसकी

दो जिह्वायें हैं। जो भी उसके समीप जाता है उसको काटने के लिये वह अपने मुंह को खोल लेता है। शिशु के शरीर के शेष अवयव भी राक्षसों के समान हैं। इसकी मां की इसके जन्म के अगले दिन ही मृत्यु हो गई।'

तोते के सिर पर सींग

तोते के सिर पर सींग नहीं होते पर हो गये। जरा शङ्कावादी ध्यान से पढ़ें। 'नवभारत टाइम्स' ता० २८-५-५७ लिखता है कि—

(२३) 'बाराबंकी २७ मई। यहां के एक निवासी के घर में पले हुए तोते के सिर पर सींग उगने का कौतुहल पूर्ण समाचार मिला है। बताया जाता है कि तोते के सिर पर एक ओर तो सींग है और दूसरी ओर निकलने के आसार दिखाई दे रहे हैं।'

सिर पर सींग

'नवभारत टाइम्स' (दिल्ली), ता० ३-८-१९५७ में छपा है कि—

(२४) जोधपुर। अमर शहर दवाखाने के डाक्टर ए० आर० शेख ने संग्रहालय को एक चार इञ्च लम्बा बकरी के सींग की तरह का एक सींग भेजा है जो एक महिला के सिर पर उग आया था। गांव आवतरा दौरे के अन्तर्गत एक वृद्धा ९५ साल उमर की सिर की पीड़ा में उनके सम्मुख लाइ गई और कहा गया कि इस वृद्धा का सिर हर समय चकराता रहता है आप इसके रोग का निर्णय करें। डाक्टर ने उसके शरीर को भली भान्ति देखा, परन्तु सिवाये बुढ़ापे के और कोई बीमारी के लक्षण नहीं देखे। उस बुढ़िया ने शरमाते हुये उन्हें एकान्त में बुलाकर अपना चेहरा दिखाया जिस पर बकरी के सींग की तरह धारीदार चार इञ्च लम्बा सींग उगा देखा। पहिले तो वे डर गये और हिम्मत न पड़ी

कि उसको छूयें। परन्तु चिकित्सक के नाते हिम्मत करके बड़ी होशियारी से इस सींग को आपरेशन करके निकाला। यह सींग बाईं कनपटी पर उगा और मजबूत हालत में था, इस पर कुछ बालों के भी अवशेष हैं जो एक मनुष्य के जैसे हैं। इतिहास में पढ़ते हैं कि राक्षसों के सिर पर सींग होते थे परन्तु यह सींग सिर पर न होकर कनपटी पर उगा मिला। आज के युग में मानव जाति में फिर से दैत्य वृत्ति होने का यह साक्षात् प्रमाण है।'

यह समाचार हम ने ज्यूं का त्यूं दिया है। यदि महाशयों को विश्वास न हो तो जाकर जांच करें। यह तो अंग्रेजी पढ़े आपके भाई डाक्टर का कहना है इस पर तो विश्वास करना ही पड़ेगा।

विचित्र बालक का जन्म

दिल्ली का 'नवभारत टाइम्स' ता० २१ मार्च १९५७ लिखता है कि—

(२५) 'तहसील कुम्हेर (भरतपुर) के ग्राम सोगर में गोघरना जाटव के यहां एक ऐसे बालक ने जन्म लिया जिसके दो चेहरे थे। दोनों चेहरो पर दो दो आँखें एक एक नाक मुंह तथा कान आदि थे। पैदा होते ही बच्चे ने परात पकड़ ली तथा रोया तक नहीं। उसका शरीर सुन्दर तथा प्रत्येक अवयव सुडौल था। मुंह में दाँत आदि करीब एक साल के बालक के समान और सिर पर घुंघराले बाल थे।'

अद्भुत कन्या का जन्म

'वीर अर्जुन' (दिल्ली) ता० १०-९-५६ में छपा है कि—

(२७) 'फर्रुखाबाद ८ सितम्बर। समाचार प्राप्त हुआ है कि ग्राम डमौड़ा तहसील कन्नौज निवासी ठाकुर गुलाब सिंह भूतपूर्व हवलदार

के घर पर २६ अगस्त को एक अद्भुत कन्या का जन्म हुआ है। सायं-काल पैदा होते समय कन्या गौर वर्ण की थी परन्तु दाई द्वारा बाल काटे जाने के पश्चात् काली पड़ गई और उसी समय पंथी मार कर वह हाथ जोड़ कर बैठ गई। परिवार वाले हैरान हो गये। कन्या के बाल दो चोटियों में गुंथे हुए हैं और उसकी गर्दन के दोनों ओर लगभग आठ इञ्च के लटक रहे थे। उसकी गर्दन में लाल रंग की माला के आकार के निशान स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। दूसरे दिन तक हजारों की सख्या में ग्रामीणों ने उस आधुनिक केश शृङ्गार से सुसज्जित कन्या का दर्शन कर अद्भुत लीला की सहराना की।'

तीन नेत्रों वाला बच्चा

'वीर अर्जुन' ता० ३१ अगस्त सन् १९५५ में छपा है कि—

(२७) रामपुर २६ अगस्त। गत सप्ताह तहसील विलासपुर में एक किसान महिला ने एक विचित्र बच्चे को जन्म दिया। उस बच्चे के तीन नेत्र हैं और तीसरा नेत्र माथे के बीच है। बच्चा जीवित है और उसे देखने के लिय लोग भारी संख्या में आ रहे हैं।'

क्या इससे पुराणों में आई भगवान् श्रीशङ्कर जी के तीन नेत्रों वाली बात की सत्यता प्रगट नहीं होती ?

सर्पजिह्वा शिशु का जन्म

दैनिक 'प्रभात' मेरठ २२ फरवरी १९५७ लिखता है कि—

(२८) लखनऊ (डाक से) लखनऊ में एक सर्पजिह्वा शिशु का जन्म हुआ है। यह शिशु स्थानीय लालबाग के एक फैशनेबिल दर्जी की स्त्री के उत्पन्न हुआ है। बालक के मुख में दो जीभें हैं। यद्यपि वह छः दिन का हो गया है किन्तु अभी पूर्ण स्वस्थ और नीरोग है। परन्तु न

वह जन्म के समय रोया और न अब तक रोता है। उसके मुख से केवल गो गो की सी ध्वनि निकलती है।"

दशमुख रावण का निदर्शन

'सन्मार्ग' दैनिक दिल्ली, १८ सितम्बर १६५० पृष्ठ ४ कालम ६ पर छपा है कि—

(२६) 'अररिया (पूर्णिया विहार) १७ सितम्तबर। अररिया सब डिवीजन के कमरफोड़ा नामक ग्राम में एक स्त्री को एक बच्चा हुआ जिसके सिर दस, पाँच दश, हाथ दश थे लेकिन धड़ शरीर एक ही था।'

पुराणोक्त पूर्वजन्मवेत्ताओं के निदर्शन

आज मुसलमान, ईसाई, कम्युनिस्ट आदि तो पुनर्जन्म को बिल्कुल मानते ही नहीं पर आज लाखों पथभ्रष्ट हिन्दू भी ऐसे हो गये हैं कि जो पुराणों में आई पुनर्जन्म-सम्वन्धी कथाओं को कपोलकल्पित मनघड़न्त मानने लगे हैं। अतः हम कुछ पुनर्जन्म सम्बन्धी बिल्कुल सत्य घटनायें सामने रखते हैं, जो आँखें खोल देने वाली हैं।

पिछले जन्म का घर और संबंधी दो वर्षीय बच्चे ने पहचान लिए

(३०) 'कानपुर ३१ मई। भगवतीपुर थाना के फिरोजपुर गांव में एक दो वर्षीय बच्चा पुनर्जन्म का जीता-जागता प्रमाण है। इस बच्चे ने बतलाया है कि वह पिछले जन्म में पंसडिया गाँव में रहता था। जब उसे उस गांव में ले लाया गया तो उसने अपने घर और सम्बन्धियों को पहचान लिया।' ('सन्मार्ग' काशी ता० २ जून ५६)

तीन वर्ष की आयु में पूर्वजन्म का हाल

'नवभारत टाइम्स' दिल्ली ता० १६-५-५७ में छपा है कि—

(३१) 'सीतापुर १० मई। मिसरिस तहसीलान्तर्गत पहाड़ी नामक ग्राम में एक ऐसा बच्चा उत्पन्न हुआ है जो तीन वर्ष की आयु में अपने पूर्वजन्म का सब हाल बताता है। उसने स्वयं को पिछले जन्म में निकटवर्ती ग्राम पोताबोझ निवासी श्री रघुवर सिंह का पुत्र बताया है उसका पिछला जन्म २० वर्ष पूर्व इसी गांव में हुआ था। मृत्यु के समय उसके एक पुत्र भी था जिसका नाम उसने उदयवीर सिंह बताया है और जो अभी जीवित है। उसे भी उसने पहचान लिया है। पिछले जन्म में किसी युवती से अनुचित सम्बन्ध होने के कारण गांव के पाँच व्यक्तियों द्वारा उसे मार डाले जाने की बात भी बताता है। लाश पास से बहने वाली कठिना नदी में फेंक दी गई थी। तब से तीन वर्ष तक वह प्रेत योनि में भटकता रहा। उसने यह भी कहा है कि उसके इस प्रेत योनि से मुक्त होकर पुनर्जीवन प्राप्त होने का कारण उसके एक पूर्व सम्बन्धी द्वारा तीर्थयात्रा से उपार्जित पुण्य है।'

इस उद्धरण से पुराणों की पुनर्जन्म, प्रेतयोनि आदि बातें अक्षर २ सत्य सिद्ध हो जाती हैं क्या अब भी इन्हें गप्प कहा जायगा ?

'ब्राह्मणवाणी' मासिक पत्रिका मुजफ्फरनगर वर्ष १ अंक १ अक्तूबर सन् १९५१ पृष्ठ २८ में पत्रिका व्यवस्थापक महोदय आंखों देखी सत्य घटना इस प्रकार लिखते हैं जो ज्यों की त्यों दी जाती है—

१४ वर्ष पूर्व की घटना बताने वाला पंचवर्षीय बालक। ९ वर्ष प्रेतयोनि में रहा

(३२) 'जिला मुजफ्फरनगर में यह बात फैली हुई है कि शिकार

पुर जिला मुजफ्फरनगर में पाँच वर्ष का बालक पिछले जन्म की बातें बतलाता है। सन्मार्ग काशी में भी यह समाचार प्रकाशित हुआ है। मुझे इस बात में न तो विश्वास था और न ही दिलचस्पी। कहने सुनने पर २६-१-५१ को मैं शिकारपुर ६॥ बजे पहुंच गया। यह लड़का सोता हुआ मिला इसे उठवाया गया। लड़का चेष्टावान् पांच वर्ष का है कुछ तुतला कर बोलता है। पंडित श्री लक्ष्मीचन्द के यहाँ २८-४-५१ से आया हुआ है। इन्हें पिता और इनकी स्त्री को माता कहता है। लक्ष्मीचन्द के तीन कन्यायें प्रकाशवती, कैलाशवती, सरला देवी हैं जो क्रम से १७-२०, २८ वर्ष की हैं, इसी प्रकार २ लड़के रविदत्त विष्णुदत्त १०, १२ वर्ष के हैं इन सब में यह बालक बड़े प्रेम से रहता है। गांव खेड़ी अलीपुर जिला मुजफ्फर नगर में यह लड़का कलीराम जाट के यहाँ पैदा हुआ जिसका नाम वीरसिंह है। गत वर्ष जब यह ३॥ वर्ष का हुआ तब से यही कहता रहा कि मैं शिकारपुर का हूं। मेरा नाम सोमदत्त और पिता का नाम लक्ष्मीचन्द है, मेरी माता मुझे मेले में बहुत पैसा दिया करती थी। यह चर्चा बहुत फैली। खबर पाकर २४-४-५१ को लक्ष्मीचन्द भी खेड़ी, जो शिकारपुर से पाँच कोस है, पहुंच गया। सैंकड़ों आदमी जमा हो गये। लड़का लाया गया। जनसमूह में यह लड़का लक्ष्मीचन्द से लिपट गया और पिता पिता पुकारने लगा। इसे शिकारपुर लेजाया गया। गाँव के पास लड़के ने पुकारना शुरू कर दिया हमारा गाँव शिकारपुर आ गया। रास्ते में लक्ष्मीचन्द का जंगल कूंआ देखकर कहने लगा यह हमारे हैं। गाँव में घुसते ही इसे छोड़ दिया गया, स्वयं ही गलियों के रास्ते चौराहे पर पहुंच गया। हजारों आदमी यह कौतुक देख रहे थे। इसी चौराहे के पास लक्ष्मीचन्द का मकान था इसे दूसरे घर में लेजाया गया, कहने लगा यह हमारा घर नहीं, पटवारी का है। धीरे-धीरे लक्ष्मीचन्द का मकान जा पकड़ा और

उसमें घुस गया जहाँ पचासों स्त्रियाँ, लड़कियाँ इकट्ठी हो रही थीं। लक्ष्मीचन्द की सब लड़कियों को वारी २ से पहचान कर वतलाया। लक्ष्मीचन्द की स्त्री को देखकर कहा यह मेरी माँ है। परन्तु उससे दूर ही रहा। पूछा गया दूर क्यों हो, ता कहने लगा कि मेरी माँ ने कुछ दिया तो है ही नहीं। ज्यों ही पाँच का नोट दिलाया गया लक्ष्मीचन्द की स्त्री की गोद में जा बैठा और माँ माँ कहने लगा। अन्य बातें पूछने पर वतलाया कि मैं ९ वर्ष तक इस पीपल पर रहा हूं। (लक्ष्मीचन्द के मकान के पास ही यह पीपल का पेड़ है) कूँए में घुस कर पानी पी लेता था और घर में घुसकर रोटी खा लिया करता था। एक नौकर—जो लक्ष्मीचन्द के यहाँ बहुत पहले था—के बारे में पूछने लगा कि वह कहाँ है। उसे भी पहचाना, भाइयों को भी पहचाना। अब यह लड़का खेड़ी गाँव में जहां यह पैदा हुआ है जाना नहीं चाहता। बलात्कार से दो बार ले जाया भी गया परन्तु वहां खाना नहीं खाया। कहता है मैं ब्राह्मण का हूं जाटों के यहाँ का कच्चा खाना, कच्चे बर्तन (हांडी) का दूध नहीं पीऊँगा। चार पाँच दिन इसे अलग वर्तन में दूध पिलाते रहे। तंग होकर शिकारपुर ही भेजा गया। अब यह शिकारपुर में ही है। स्कूल पढ़ने जाना आरम्भ किया है। स्कूल में रहते २ मास्टरों तथा कई प्रतिष्ठित गाँव के लोगों के सामने मैंने लड़के से बातें कीं। उपर्युक्त बातें बतलाने के अतिरिक्त आश्चर्यजनक अन्य बातें भी बतलाईं। पं० लक्ष्मीचन्द उसके लड़के तथा अन्य लोगों से पहिचानने वाली बातें सच्ची सच्ची सिद्ध हुईं।

पं० लक्ष्मीचन्द ने मुझ से पूछा कि इसे स्कूल में प्रविष्ट करना है। पिता का क्या नाम लिखाऊँ, शरीर नाते से तो यह कलीराम जाट का है और पूर्व सम्बन्ध मुझ से सिद्ध होता है क्या करूँ? मेरे पास रहते इसका कौन वर्ण रहेगा और किस वर्ण में विवाहादि सम्बन्ध होंगे?

इस घटना से जहाँ पुनर्जन्म सिद्धान्त सत्य प्रतीत होता है वहाँ

९ वर्ष तक पीपल पर प्रेत बन कर रहना एक अपूर्व बात है। सबको पहचानना इस बात का प्रमाण है कि यह अवश्य ही पीपल पर रहा है। और किस समय क्या २ गाँव में ९ वर्ष तक होता रहा ऐसी भी बातें यह लड़का बतलाता है। पं० लक्ष्मीचन्द का कहना है कि १४ वर्ष हुवे मेरा लड़का सोमदत्त ३।। वर्ष का मर गया था, उस समय कैलासवती ६ वर्ष, प्रकाशवती ३ वर्ष की, विष्णुदत्त २ वर्ष का था, और सरला रविदत्त मरने के पश्चात् पैदा हुवे। अब कैलाशवती (२० वर्ष) और प्रकाशवती (१७ वर्ष) तथा विष्णुदत्त को कैसे पहचान लिया और पश्चात् के होने वाले बच्चे का भी। क्योंकि यह लड़का (सोमदत्त) मरने के पश्चात् पीपल पर ९ वर्ष तक रहना बतलाता है ऐसी दशा में सबको पहिचानना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। सोमदत्त की आत्मा पीपल पर बैठी सब को देखती रही।

क्या पीपल पर रहना पुराणोक्त 'प्रेतयोनिसत्ता' की सत्यता को पुष्ट नहीं करता ?

नोट—इसी प्रकार अलीगढ़ के मध्यवर्ग के परिवार में नरेशकुमार पंचवर्षीय बालक ने सब को आश्चर्य में डाल दिया है। यह बालक वेद गीता तथा अंग्रेजी बिल्कुल शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ लेता है।

(व्यवस्थापक पत्रिका)

देखी आपने पुनर्जन्म के तथा प्रेतयोनि के सम्बन्ध की सत्य घटना। पुराणों में जब पीपल पर प्रेत रहते हैं यह आता है, या वृद्ध मातायें पीपल के नीचे बच्चों को जाने से रोकती हैं ता इसे अंधविश्वास बताया जाता है, पर क्या अब भी—प्रत्यक्ष घटना सामने होने पर भी पुराणों की बातों को झूठ मानना उचित है ?

(३३) 'सन्मार्ग' मासिक बनारस, वर्ष २ अंक ३ पौष शुक्ला द्वि० सं० १९९७ पृष्ठ १४१ पर लिखता है कि—

पुनर्जन्म की स्मृति

'अखण्डज्योति' के इसी दिसम्बर के अंक में एक जातिस्मर कन्या का वर्णन दिया हुआ है। उसकी उम्र ६ वर्ष की है। वह आरा के माहम्मदावाद गाँव में पैदा हुई है, अपने घर वालों के हाथ की रोटी नहीं खाती, पक्की रसोई खाती है। क्योंकि वह लोध जाति के हैं और वह अपने को पूर्वजन्म की ब्राह्मणी बतलाती है। कहती है कि मुहल्ला जीन की मण्डी, शहर आगरे की मैं रहने वाली हूँ। अपने पति का नाम प्रेमसिंह, बेटे का नाम तेजसिंह बतलाती है, जो मिल में काम करता है। लोग उसे ले गये उसने अपने पुत्र को पहचाना, चालीस रु० और चाँदी का हुमेल जो उसने गाड़ रक्खा था खुदवा कर निकलवाया। अब वह अपने बाप के पास रहती है। अपनी शादी करने से पिता को रोकती है। कहती है कि थोड़े ही दिन मुझे और जीना है उसके बाद जैनी वैश्य के यहाँ जन्म लूँगी। पं० श्री भोजराज जी शुक्ल एत्मादपुर आगरा, स्थानीय डाक्टर, हेडमास्टर, सबरजिस्ट्रार, वकील और कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ उसे देखने गये और सब घटनाओं की जाँच पड़ताल की। डाक्टर साहिब ने उस कन्या के सिर की परीक्षा की और ठीक पाया। उक्त शुक्ल जी लिखते हैं कि लड़की अभी तक मोहम्मदाबाद में है जो चाहे परीक्षा कर सकते हैं।

पुनर्जन्म की प्रत्यक्ष सिद्धि

आर्यसमाज के बड़े २ नेताओं द्वारा स्वयं जांच की हुई एक विश्व-विख्यात सत्य घटना इस प्रकार है। हम ने भी शान्ति को स्वयं जाकर देखा था और उससे बातें भी की थीं, सब घटनायें सत्य पाईं ; यह सत्य घटना उर्दू के 'तेज' हिन्दी 'हिन्दुस्तान' 'कल्याण' आदि भारत के सभी

पत्रों में छपी थी । हम उसे कल्याण अंक ६ जनवरी १९३६ पृष्ठ ११२३ से यहां देते हैं—

(३४) आत्मा की नित्यता, पुनर्जन्म, परलोक आदि सत्य सिद्धांत हिन्दू सनातनधर्म की विशेषता हैं । महर्षियों ने भलीभांति देख जांच करके प्रत्यक्ष अनुभव करके इन सिद्धान्तों की स्थापना की । समय २ पर इनका सत्य स्वरूप ऐसे विलक्षण रूप में प्रकाशित होता है कि जिससे जगत् चकित हो जाता है और अविश्वासियों को भी वाध्य होकर इनके सत्य होने पर विश्वास करना पड़ता है । अभी कुछ दिनों पूर्व दिल्ली में एक जातिस्मर नौ वर्ष की कन्या ने अपने पूर्वजन्म को प्रमाणित कर दिखाया है । यह घटना अपूर्व नहीं है । कुछ ही समय पूर्व वस्ती में तथा वरेली में भी दो लड़कों ने अपने पूर्वजन्म का हाल वतलाया है और कहते हैं कि उनकी वतलायी हुई वातें सच्ची सावित हुई थीं । परन्तु दिल्ली की यह ताजी घटना तो अभी हाल में ही जांच पड़ताल के द्वारा सच्ची सावित हुई है। इसके सम्वन्ध में एसोशियेटेड प्रेस ने जो वक्तव्य दिया है उसका सार इस प्रकार है—

'इस लड़की का नाम शांति है, जो ११ दिसम्बर को ९ वर्ष की हुई है । उसने जवरदस्त प्रमाणों से यह सावित कर दिया कि आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में जाता है । उसने अपनी पूर्वजन्म की बात ठीक बता कर सनसनी पैदा कर दी है। वह श्री रंगवहादुर माथुर की पुत्री है जो दिल्ली के चीराखाने मोहल्ले में रहते हैं । कहा जाता है कि शान्ति जव ५ वर्ष की थी तभी वह मथुरा जाने की इच्छा प्रकट किया करती थी और कहती थी कि मेरे पहिले माता पिता और पति सपरिवार मथुरा में रहते हैं । पर उस समय किसी ने उसकी वातों पर ध्यान नहीं दिया, पर हाल में युक्तप्रांत के एक रिटायर्ड प्रिंसिपल श्रीकृष्णचंद्र की इस लड़की में वहुत दिलचस्पी वढ़ गई और वे विशेष हाल जानने के लिए उत्सुक हुवे । वह लड़की के एक रिश्तेदार मास्टर विशनचन्द और

श्री ताराचन्द एडवोकेट के साथ लड़की के घर गये और लड़की से उसके पूर्व जन्म के सम्वन्ध में वातें कीं। लड़की ने विश्वास करने योग्य उत्तर दिये। उसने कहा कि मैं पूर्वजन्म में एक चौवे के घर में पैदा हुई थी और वहीं के एक चौवे से मेरा विवाह हुआ था। जब लड़की से उसके पति का नाम पूछा गया तो पहिले तो वह बहुत शर्माई। पर जब अधिक आग्रह किया गया तो उसने प्रिंसिपल किशनचंद के कान में धीरे से पति का नाम केदारनाथ वताया। उसने वह जगह भी वतलाई जहां कि केदारनाथ की कपड़े की दुकान थी।

लड़की की यह वातें सुनने के वाद प्रिंसिपल किशनचन्द ने पं० केदारनाथ के नाम एक चिट्ठी डाक से भेजी और कई दिन के बाद चिठ्ठी का जवाव आया। इस पर सब लोगों को वड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ दिनों वाद पं० केदारनाथ स्वयं अपने पुत्र, दूसरी स्त्री, और कई मनुष्यों के साथ दिल्ली आये और इन सब लोगों से मिले। लड़की ने तुरन्त अपने पति का पहचान लिया और कुछ शर्माई पर जब उसने अपने पुत्र को देखा तो वह रोने लगी और प्रायः एक घंटे तक सिसकियां भरती रही। यह दृश्य देख कर सवके दिल भर आये। इसके बाद लड़की अपनी गुड़ियां और ताश के पत्ते उस लड़के के खेलने के लिए ले आई। लड़की ने कहा कि जव यह लड़का सिर्फ दस दिन का था तभी मैं मर गई थी। पं० केदारनाथ ने इस वात को सत्य वतलाया। जव पं० केदारनाथ अपने पुत्र के साथ मथुरा विदा हुवे तो शान्ति भी उनके साथ जाने के लिए तैयार हुई पर उसके माता पिता ने यह उचित नहीं समझा और लड़की का मन वहलाने के लिए उसे मोटर में घुमाने के लिये ले गये।

जब यह समाचार नगरों में फैला तो वहुतेरे मनुष्य लड़की को देखने के लिये आये। तीन दिन तक उत्सुक मनुष्यों की भीड़ लगी रही लगभग डेढ़ लाख मनुष्यों ने शान्ति को देखा होगा।'

लड़की की मथुरा यात्रा

शान्ति मथुरा जाने की प्रवल इच्छा प्रकट किया करती थी और कहा करती थी कि यदि मुझे मथुरा ले चलो तो मैं अपने पति का घर दिखा दूंगी। वह मथुरा घाटों, गलियों और द्वारकाधीश जी महाराज के मन्दिर की चर्चा किया करती थी। लड़की की वातों को आजमाने के लिये एक दिन २० आदमी मथुरा रवाना हुवे। इन मनुष्यों में लड़की के पिता के अतिरिक्त तेज पत्र के डाइरेक्टर ला० देशवन्धु गुप्ता, कांग्रेसी नेता पं० नेकीराम शर्मा, श्री गुरुदयाल और श्री ताराचन्द थे। जब इनकी रेल मथुरा स्टेशन के निकट पहुँची तो लड़की वहुत प्रसन्न मालूम हुई और उसने चिल्ला कर कहा 'मथुरा आ गया।'

लड़की के साथ के आदमियों से यह अच्छी तरह से कह दिया गया था कि लड़की को मथुरा की कोई वात न वतलाई जाय। शान्ति ला० देशवन्धु की गोद में थी पर ज्यों ही उसने अपने पति के वड़े भाई वावूलाल चौवे को देखा जिसे उसने इस जन्म में पहिले कभी नहीं देखा था वह उनके पास गई और उनके पैर छुए। लोगों ने पूछा कि यह कौन हैं। उसने कहा कि ये मेरे जेठ हैं। शान्ति जव ताँगे पर बैठी तो उसके साथ चार सज्जन भी थे। ताँगे वाले से कह दिया गया था कि लड़की जिधर जिधर से कहे उधर उधर से ताँगा ले चलो।

शान्ति ने मार्ग में कहा कि सड़क पहिले अलकतरे से नहीं वनी थी और अब रास्ते में नये मकान भी वन गये हैं। लड़की ने कहा• हम लोग मोती दरवाजे की ओर जा रहे हैं वहाँ एक घड़ी लगी है। जव ताँगा वहाँ पहुँचा तो उसने वह स्थान पहचान लिया। ताँगा जब एक गली के पास पहुँचा ता उसने कहा कि शायद यह गली मेरे घर की ओर जाती है।' ताँगा छोड़ कर अव सब लोग पैदल चले और अव लड़की ताराचन्द की गोद में थी। पर इतने ही में लड़की ने भीड़ में

एक वृद्ध ब्राह्मण को देखकर कहा कि—ये मेरे ससुर हैं।' यह भी उसने ठीक बताया और इस पर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ और आगे बढ़ने पर लड़की ने एक घर को दिखाकर कहा कि हम लोग पहिले इस घर में रहा करते थे किन्तु बाद में यह घर किराये पर दे दिया गया था। उसने यह भी कहा कि मेरे समय में इस घर की पोताई पीले रंग में थी पर अब उस पर सफेदी है। घर के भीतर जाने पर उसने एक कमरा दिखा कर कहा कि मैं इस कमरे में रहा करती थी।

मेरठ के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी लड़की की बातों की सत्यता का पता लगाने साथ में आये थे। उन्होंने लड़की से पूछा 'अच्छा बताओ पाखाना कहाँ है ?' लड़की तुरन्त नीचे उतर गई और उसने पाखाने की कोठरी बतलाई। कुछ देर बाद वे धर्मशाला में गये जहाँ लड़की ने अपने पूर्वजन्म के खास भाई विट्ठलदास और अपने चचिया ससुर वनमाली को पहचाना। कुछ देर बाद शान्ति ने कहा कि मुझे एक दूसरे घर में ले चलो वहाँ मैंने गुप्त स्थान में कुछ रुपये गाड़े थे। उसने घर में जाने पर कूँआ भी बताया जिसकी चर्चा वह दिल्ली में किया करती थी। वहाँ से पत्थर हटाने पर कूँआ दिखलाई दिया। इसके बाद वह ऊपर ऐसे चली गई मानो उसकी रोज की आदत है। उसने एक कमरे के कोने में दिखाया कि यहीं मेरा धन गड़ा हुआ है। वहाँ जब खोदा गया तो रुपया नहीं मिला, पर वह जगह देखकर ऐसा मालूम पड़ा कि किसी ने हाल ही में वह जगह खोद कर रुपया निकाल लिया है।

मथुरा में एक और मनोरंजक दृश्य यह दिखाई दिया कि भीड़ में जब लड़की के पहिले के माता-पिता दिखलाई दिये तो उस लड़की ने उन्हें भी पहचाना। वह अपनी माता की गोद में चली गई और उसकी गोद से उतरना नहीं चाहती थी।

इसके बाद नदी की ओर जाते हुए उसने श्री द्वारकाधीश जी महाराज के मन्दिर को पहचाना। वहाँ पहुंचने पर उसने अपना मस्तक

झुकाया और कहा कि ११ वजे इस मन्दिर के पट (दरवाजे) वन्द हो जाते हैं।

शान्ति जितने दिन मथुरा में रही उतने दिन उसने अपने पहिले पुत्र को अपने पास रक्खा।

पं० नेकीराम शर्मा और ला० देशबन्धु गुप्त ने एक संयुक्त वक्तव्य प्रकाशित किया है, जिसमें लिखा है कि सब मामले की जांच करने के बाद हमें इसमें कुछ भी सन्देह नहीं रहा है कि पहिले जो पं० केदारनाथ की पत्नी थी अब उसका आत्मा शान्ति के शरीर में आ गई है। इस सम्बन्ध में हमने शान्ति की जो कुछ बातें स्वयं अपनी आंखों से देखीं उनमें हमें जरा भी सन्देह नहीं।'

स्व० पं० नेकीराम शर्मा ने इस सम्बन्ध में एक सार्वजनिक सभा की थी जिसमें लड़की के सम्बन्ध में उन्होंने व्याख्यान भी दिया था।

कहिये यह सब घटनायें आर्यसमाज के महान् नेता स्व० देशबन्धु गुप्त की आंखों देखी हैं अब तो इन्हें झूठ नहीं बता सकते ?

पूर्वजन्म-स्मर बालक

'संसार' दैनिक देहली ११।६।२६ ने लिखा है कि—

(३५) 'बरेली के वकील श्रीयुत कैकेयीनन्दन के पुत्र जगदीश ने अपने पूर्व जन्म का जो हाल बताया था वह प्रकाशित किया जा चुका है। इस समाचार के प्रकाशित होने पर कई आदमियों ने उन्हें अपने बच्चों की पूर्वजन्मस्मृति के सम्बन्ध में पत्र लिखे हैं। इसमें से एक ५।। वर्ष के बच्चे की आश्चर्यजनक पूर्वजन्म स्मृति का हाल स्वयं जांच कर वकील साहिब ने इस प्रकार लिखा है:—

मुझे ऐसे कितने ही वालकों के विषय में सूचनायें मिल रही हैं । मैं उन की सचाई की जांच कर रहा हूँ और उनका जो फल होगा उससे समय समय पर सर्व सावारण को अवगत कराता रहूँगा ।

विश्वनाथ का जन्म ७ फरवरी १९२१ को वरेली के खन्नू महल्ले में हुआ । १।। वर्ष का हाते ही वह पीलीभीत के विषय में पूछने लगा । उसने पूछा कि वरेली से पीलीभीत कितनी दूर है और मेरे पिता मुझे वहां कव ले जायेंगे । तीन वर्ष का होने पर वह अपने पूर्व जन्म की वात विस्तार से वताने लगा । उसके मां वाप डरे और इन आश्चर्यजनक वातों को छिपाने का प्रयत्न किया । ऐसा विश्वास है कि ऐसे वालक अधिक दिन नहीं जीते और वे जितनी ही जल्दी इन वातों को भूल जायें उतना ही अच्छा है ।

मुझे हाल में ही प्रांतीय कौंसिल के भूतपूर्व सदस्य ठाकुर मोतीसिंह जी वकील से इस वालक की वात मालूम हुई और मैं २९ जून को वावू रामगुलाम और विश्वनाथ से मिलने गया । मैंने वावू रामगुलाम से पीलीभीत जाकर वालक की वातों की सचाई की जांच करने को कहा और खुद भी साथ चलने का तैयार हुआ । पहली अगस्त को हम लोग पीलीभीत गये । हम सीधे वहां के गवर्नमेंट हाईस्कूल में गए वालक ने इसे अपना स्कूल नहीं वताया । स्कूल का वर्तमान-भवन नया है और हाल में ही वना है । विश्वनाथ ने अपने चाचा का नाम हरनारायण, जाति कायस्थ, महल्ला गञ्ज, पीलीभीत, उम्र २० साल और अविवाहित वताया था । अपने पड़ोसी का नाम सुन्दरलाल वताया था और कहा था कि उनके मकान में हरे रंग का फाटक है, उसके पास एक तलवार और एक वन्दूक है और उनके सहन में नाच हुआ करता था । अपनें मकान को दो-मंजिला वताता था जिसमें पुरुषों के रहने के लिये अलग २ खण्ड था । उसमें गाने की महफिलें और दावतें अक्सर होती

रहती थीं। उसने कहा था कि मेरे पिता जमींदार थे, मुझे बहुत प्यार करते थे, मुझे सदा रेशमी कपड़े पहनाते थे और जेवखर्च के लिये रुपये दिया करते थे। मुझे शराव, रोहू मछली और नर्तकियों का वड़ा शौक था। मैं नदी के निकटवर्ती सरकारी स्कूल में छठे दर्जे तक पढ़ा था और उर्दू हिन्दी तथा अंग्रेजी जानता था। उसने अपने मकान में एक ठाकुर द्वारा होना वताया था और उसका वर्णन किया था।

जब हम लोग परलोकगत बाबू श्यामसुन्दर लाल के फाटक पर पहुंचे, वालक ताँगे पर से उतर पड़ा और कहा कि यही वावू सुन्दरलाल का हरा फाटक है। उसने उस सहन को भी बताया जिसमें नाच की महफिलें हुआ करती थीं। आसपास के दुकानदारों ने उसके कथन को ठीक वताया। मैंने फाटक को खुद देखा। उसपर हरा वार्निश पुता हुआ था जो वहुत दिन का हो जाने से बहुत धुन्धला हो गया था। अनन्तर हम लोग स्वर्गीय लाला देवीप्रसाद रईस के मकान पर गये। वालक ने इसे अपना मकान वताया। उसने चिल्लाकर कहा कि यही हरनारायण का मकान है। हरनारायण लाला देवीप्रसाद के लड़के थे।

इस विशाल प्राचीन भवन के वहुतेरे हिस्से गिर गये हैं और कुटुम्वियों ने भी उसकी हिफाजत की ओर ध्यान नहीं दिया है। पड़ोसियों ने वताया कि पहिले से उसमें बहुत परिवर्तन हो गया है। लड़के ने फाटक पर पहुंचते ही मकान को पहचान लिया। उसने वे स्थान भी वताये जहाँ वे शराब पीते, रोहू मछली खाते और नर्तकियों का गाना सुनते थे। लड़के से सीढ़ी का स्थान पूछा गया जिसे उसने मिट्टी और ईंटों के ढेर में भी ठीक ठीक वता दिया। इसके वाद उसने जनाने कमरों को पहचाना और कोठे पर के एक कमरे का खास तौर से हवाला दिया जिसमें स्त्रियाँ रहती थीं। कुटुम्ब में केवल श्री व्रजमोहन लाल वच गये हैं जो अलग एक मकान में रहते हैं। उनसे ला० हरनारायण और

उनके पुत्र का एक पुराना अस्पष्ट फोटो मंगाया गया। बहुत से लोगों के सामने लड़के ने तुरन्त ला० हरनारायण लाल की फोटो पर अपनी उंगली रख दी और फोटो में एक कुर्सी पर बैठे हुए एक लड़के को दिखाकर कहा यह मैं हूं और यह लाला हरनारायण लाल हैं। यह अद्भुत बात हुई और इससे उसका श्रीहरनारायण का पुत्र लक्ष्मीनारायण होना निश्चित हो गया।

इसके बाद हम लोग उसे पुराने गवर्नमेंट हाई स्कूल में ले गये जिसे उसने तुरन्त पहचान लिया और अपना स्कूल बताकर उसकी परिक्रमा की। इसके बाद उसने तेजी से सीढ़ी पर चढ़ना शुरू किया। जो दाहिने हाथ के कोने में है। मैं तथा तीन और आदमी उसके पीछे २ ऊपर गये। सब से ऊपर की छत पर पहुँचने के बाद उसने अपना मकान दिखाया जो यहाँ से दीख पड़ता था। दिउहा नदी की ओर भी उसने उंगली उठाई जो पीछे बह रही थी।

इसके बाद लड़के से उस स्थान के बारे में पूछा गया जहाँ उसके समय में छटा दर्जा लगता था। उसने एक कमरा दिखाया जिसे उसके दो पुराने सहपाठियों ने ठीक बताया। इन दोनों में एक श्री दिगम्बर नाथ थे जिसका फोटो लड़के ने पहचाना था और दूसरे सज्जन पीलीभीत निवासी श्रीरामगुलाम थे जिन्होंने भीड़ से निकलकर परिचय दिया। इन दोनों सहपाठियों ने लड़के से शिक्षक का नाम पूछा। उसने कहा कि वह एक मोटे दढ़ियल आदमी थे। एकत्र आदमियों ने उक्त शिक्षक का नाम शाहजहाँपुर निवासी श्रीमुहीउद्दीन बताया। अपने मकान के ठाकुरद्वारे को भी उसने ठीक ठीक बता दिया जिसकी चर्चा वह पहले कर चुका था।

लड़के को एक जोड़ी तबला दिया गया उसने बड़ी आसानी से बजाया। उसके पिता श्री रामगुलाम ने मुझे बताया कि लड़के ने अपने जीवन में कभी तबला देखा भी नहीं है। लोगों ने लड़के से बार बार उस वेश्या का नाम पूछा जिसके साथ वह पूर्व जन्म में रह चुका था। लड़के ने

उदासीनता के साथ पद्मा नाम लिया जिसे लोगों ने ठीक वताया। इस मामले की सूचना जिला के पुलिस सुपरिण्टेडेण्ट और सिविलसर्जन को दे दी गई थी : पुलिस सुपरि० आये लड़के को देखा और अपनी मोटर में विठला कर ले गये। हम लोगों के विदा होने के समय स्टेशन के प्लेटफार्म पर भीड़ हो गई थी। प्लेटफार्म पर उपस्थित लागों में राय-वहादुर लाला रामस्वरूप और रायसाहव श्री अशर्फीलाल उल्लेखनीय व्यक्ति हैं।'

जाको राखे सांइयां

जलते भट्टे में चिड़िया सुरक्षित रहीं

'हिन्दुस्तान' देहली, ता० २६ जून सन् १९५४ लिखता है कि—

(४३) 'जवलपुर (डाक से) भक्त प्रह्लाद के काल में घटी उस घटना की पुनरावृत्ति इस कलियुग में हुई जिसमें कुम्हार के जलते हुये भट्टे में ईश्वर ने विल्ली और उसके वच्चों की रक्षा की थी। अन्तर केवल यह था कि वे विल्ली के वच्चे थे और इस समय चिड़िया के अण्डे। पन्ना से मिले, एक समाचार में कहा गया है कि पन्ना जिले के धर्मपुर स्थान में कच्ची ईंटों को आग में पकाने के लिये एक बहुत वड़ा भट्टा लगाया गया। भट्टे को जिस समय वन्द किया गया और आग लगाई गई किसी को पता नहीं चला कि ईंटों के वीच एक चिड़िया ने घोंसला वनाया है और उसमें अपने अण्डे सेये हैं। एक सप्ताह तक वह भट्टा जलता रहा और ईंटें उसकी आँच में पकती रहीं। आठवें दिन जैसे ही भट्टे को खोला गया एक चिड़िया उड़कर वाहर निकल भागी जिससे भट्टा खोलने वाले को आश्चर्य हुआ। वाद में उन्होंने पाया कि जिस स्थान पर चिड़िया ने अण्डे दिये वहाँ तक आग नहीं पहुंची थी

तथा वहाँ ईंटें पूर्ववत् कच्ची थीं जिससे अण्डे सुरक्षित थे और वे जल न पाये थे। यह घटना देखकर वहाँ प्रत्यक्षदर्शियों को विश्वास करना पड़ा कि ईश्वर का अस्तित्व है।'

जलते भट्टें में नेवला बच्चों सहित जीवित रहा

'कल्याण' गोरखपुर, दिसम्बर सन् १९३३ में श्रीबृजविहारी लाल गौड़ जी लिखते हैं—

(४४) भक्त प्रह्लाद की कथा चाहे जितनी ही पुरानी क्यों न हो जाय पर एक आस्तिक के हृदय से उसका प्रभाव कभीं नहीं जा सकता। वह उस घटना को अवैज्ञानिक नहीं मानता। उसकी दृष्टि में वह बात उतनी ही सत्य है जितना कि विज्ञान अथवा गणित का एक ठोस नियम। आवे में से बिल्ली के बच्चे को जीवित निकलते देखकर भक्त प्रह्लाद के हृदय में अनुराग का स्रोत फूट पड़ा और वह परमेश्वर के अनन्य भक्त बन गये। आज यह कथा अवैज्ञानिक कह कर टाल दी जाती है। मानों लोगों ने प्रकृति के सारे रहस्यों का ठेका ले लिया है और वह आधुनिक विज्ञान के अवगत रहस्यों को छोड़ किसी दूसरे रहस्य का प्रतिपादन नहीं कर सकती।

आज भी वैसी ही घटनायें नित्य हुआ करती हैं। पर हम अपनी कूपमण्डूकता के कारण उन पर ध्यान नहीं देते या चान्स कह कर चुप हो जाते हैं। लगभग एक महीना हुआ होगा एक ऐसी ही घटना घटी। बी० एन० डब्लू की छोटी लाइन पर बनारस के पास एक राजवारी नामक स्टेशन है। स्टेशन के पास ही ठाकुर उमाशंकर ने एक ईंटों का पंजावा लगवाया। जब पंजावा पुत गया और आग झोंकने का समय

आया तो लोगों ने देखा कि एक नेवला चार पांच हाथ भीतर पंजावे की दीवार में घुआ हुआ है। ठाकुर आस्तिक विचार के थे। उन्होंने उस नेवले को निकालने की वहुत कोशिश की। थोड़ी देर के वाद नेवला दिखाई नहीं पड़ा। नौकरों ने कह दिया वह तो बाहर भाग गया। पंजावे में आग लगाई गई। ईंट पकीं। पंजावा ठण्डा हो जाने के बाद जब ईंटें निकाली जाने लगीं तो ठाकुर ने क्या देखा कि पंजावे के भीतर लगभग सौ ईंटों का थोक नीचे से ऊपर तक पका ही नहीं, ईंटें काली तक नहीं हो पाई थीं। उनको वड़ा आश्चर्य हुआ। ईंटों के बखेरने पर वह नेवला अपने बच्चों सहित उसमें जिन्दा पाया गया। ईश्वर की यह महिमा देख कर लोग आचर्यचकित हो गए। एक भीड़ लग गई। कई प्रतिष्ठित लागों ने देखा। यह आंखों देखी घटना है इस पर कैसे अविश्वास किया जा सकता है? ईश्वर के सामने क्या यह कोई बड़ी बात है? जिन लागों को विश्वास न हो वे वहां जाकर इसकी पूरी तसल्ली कर सकते हैं।

कास्टिक सोडे के खौलते घोलमें चमगादड़ न मरा

यह समाचार अभी सन् १९५७ का ही है 'नवभारत टाइम्स' आदि सभी पत्रों में निकला है, जो इस प्रकार है—

(४५) 'चन्दौसी। स्थानीय रमेश सोप वर्कस के कर्मचारी उस समय स्तम्भित रह गए जब कि उबलते हुये साबुन के नीचे निरन्तर ३ दिन तक दबे रहने के पश्चात् एक चमगादड़ का बच्चा जीवित निकला और थोड़ी देर के वाद उड़ कर चला। इससे सतयुग के प्रह्लाद काल में कुम्हार के आवे से निकले जीवित बिल्ली के बच्चों की पौराणिक गाथा सजीव

हो उठी । घटना इस प्रकार वताई जाती है कि गत सोमवार का उपरोक्त कारखाने में सावुन जमाने के लिए निर्धारित सांचों में पिघलता हुग्रा वहुत गर्म सावुन लौट दिया गया । नियमानुसार सावुन जम जाने पर तीसरे दिन जव सांचे लौटे गये तव एक सांचे की तली पर छोटा सा चमगादड़ का वच्चा चिपका दिखलाई दिया । उसने ग्रपने पंख सांचे में फैला कर कागज जैसा रूप ले लिया था । परन्तु यह देख कर वड़ा ग्राश्चर्य हुग्रा कि खुली हवा लगते ही वह उड़ कर चला गया ।

एक ग्रंग्रेज को भगवान् का दर्शन

('मानस हंस' मार्च १९५४ से उद्धृत)

जनवरी सन् १९५४ में पिलखुवा में उदासीन संत श्री स्वामी श्री रामेशचन्द्र जी महाराज पधारे थे जिनकी कथा की वड़ी धूम मची थी । ग्रापने कथा के वीच में एक ग्रंग्रेज ईन्जीनियर के जीवन की ग्राश्चर्यजनक ग्रद्भुत घटना सुनाई जिसे सुन कर सभी लोग प्रभु श्रीराम के प्रेम में विभोर हो गए ।

यह ग्रंग्रेज इन्जीनियर ग्राप को विहार में साधुवेष में विचरता हुग्रा मिला था। उसने ग्रापको देखते ही कहा—My child please say Sita Ram. मेरे वच्चे, कृपा कर सीता राम कहो । ग्रापको एक ग्रंग्रेज के मुख से 'माई चाइल्ड प्लीज से सीताराम' सुनकर ग्रौर उसे कोट, नकटाई सव कुछ फेंक, काषायवस्त्रधारी परम वैष्णव साधु के वेष में देख कर वड़ा ग्राश्चर्य हुग्रा । ग्रापने उस परम वैष्णव ग्रंग्रेज संत को ग्रपने पास वैठा कर पूछा कि कृपा कर वताइये कि ग्रापके जीवन में यह ग्रद्भुत परिवर्तन कैसे हुग्रा ?

उत्तर में वह ग्रंग्रेज इन्जीनियर फूट-फूट कर रोने लगा ग्रौर लम्वी सांस लेकर वोला—हाय ! मैंने भारत में जन्म नहीं लिया, मेरा इतना

समय व्यर्थ ही व्यतीत हो गया श्री सीताराम जी का भजन नहीं हुआ ?

उसने अपने जीवन की आश्चर्यजनक घटना सुनाते हुए रोते रोते कहा—"मैं एक इन्जीनियर था और इग्लैण्ड से विहार में एक डैम (वांध) वनाने के लिये इंचार्ज के रूप में आया था। बड़ी भयंकर वर्षा होने से बांध टूटने का खतरा पैदा हो गया। बाँध में दरारें पड़ गई तो इस बात की पूरी पूरी सम्भावना हो गई कि बांध अब नहीं वचेगा, अवश्य ही टूट जायगा। मैं बांध के टूटने पर अपनी और अपने देश की बदनामी के डर से उदास और हताश हुआ।

एक दिन मैं इसी चिन्ता में निमग्न हुआ बांध पर फिर रहा था कि मैंने बांध पर काम करने वाले पुरबियों मजदूरों के स्थान पर कीर्तन होते देखा। मैं यह जानने के लिये कि यह सब मिल कर क्या कर रहे हैं—उनके पास गया। उन पुरबियों ने उस स्थान पर भगवती श्री सीता जी का मन्दिर बनाया हुआ था जो कि छोटा सा था। उसी के सामने खड़े होकर वह सब लोग मिलकर कीर्तन कर रहे थे। मैं इस रहस्य को नहीं समझ सका; कारण कि मेरे जीवन की यह एक सबसे पहली घटना थी। मैंने उनसे कीर्तन करने का कारण पूछा तो उत्तर में उन मजदूर पुरबियों ने मुझे बताया कि साहब, यह श्री सीतादेवी जी का मन्दिर है हम उन्हीं का कीर्तन कर रहे हैं। जो इस मन्दिर में श्रीसीता जी के सामने सच्चे मन से प्रार्थना करता है, उसकी भावना पूरी हो जाती है और उसके सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं। मैंने उन मजदूर पुरबियों से कहा कि तुम लोग मेरी ओर से अपनी देवी सीता जी से प्रार्थना करो कि यदि आज मेरा बांध बच जाय, टूटे नहीं तो मैं श्री सीतादेवी जी का बहुत बढ़िया मंदिर बनवा दूंगा और उसका सारा खर्चा मैं दूंगा। उन मजदूरों ने मेरी ओर से अपनी सीतादेवी के सामने प्रार्थना कर दी और कहा—जाओ तुम्हारा काम हो जायगा। मैं

वापिस अपनी कोठी पर आ गया। उसी शाम को जोर की वरसात शुरू हो गई। अव मैंने मन में निश्चय किया कि आज बांध नहीं वचेगा यह अवश्य हीं टूट जायगा। मेरे मन में अव आत्महत्या करने का विचार पैदा हो गया इस लिए मैंने अपने हाथों से वसीयत लिख दी। मैंने लिखा कि मैं अपनी इच्छा से आत्महत्या कर रहा हूँ किसी और का कोई दोष नहीं है। मैं यह लिख कर डैम की ओर चल पड़ा और मनमें यह निश्चय किया कि मैं डैम पर जाकर खड़ा हो जाऊंगा और जव डैम टूटेगा तो उसके साथ साथ ही मेरी भी मृत्यु हो जायगी। मैं डैम पर गया तो उस समय वरसात हो रही थी। मैं डैम पर चढ़ गया तो मैंने उस समय देखा कि वरसात में दो नवयुवक जिन में से एक का रंग सांवला था और दूसरे नवयुवक का रंग गोरा था, दोनों ही डैम के नीचे खड़े हुए हैं। उनमें से गोरा नवयुवक जमीन से मिट्टी उठा कर अपने हाथों वड़े सांवले नवयुवक को दे रहा है और सांवला नवयुवक मिट्टी लेकर दरारों को अपने हाथों से मिट्टी से वंद कर रहा है। मैंने देखा दोनों साँवले और गोरे नवयुवकों ने माथे पर मुकुट वांध रखे हैं और कंधे में धनुष बाण हैं, और दोनों वड़े ही सुन्दर हैं।

यह देखकर मैंने उन मजदूर पुरवियों को जोर २ से आवाज दे कर अपने पास बुलाया और कहा कि जल्दी से यहाँ पर आओ और इन दोनों नवयुवकों को वाँध पर से हटाओ नहीं तो ये दोनों नवयुवक मर जावेंगे। मजदूर दौड़े हुए वाँध पर आये और बाँध पर आकर देखा तो वे दोनों ही नवयुवक उनको दिखाई नहीं दिये। पुरवियों ने कहा साहव, हमें वे नवयुवक नहीं दिखलाई देते। मैंने उन पुरवियों को बताया कि एक नवयुवक साँवला है दूसरा गोरा है, दोनों ही माथे पर मुकुट बाँधे हैं तथा कन्धे पर धनुष वाण लिये हैं। यह सुनकर पुरवियों ने कहा कि साहव, ये नवयुवक नहीं, ये तो साक्षात् श्री राम और लक्ष्मण जी हैं आपको उनके दर्शन हो गये हैं अव आपका डैम नहीं टूटेगा, आप निश्चिन्त

हो जाइये क्योंकि जिन भगवती श्री सीता जी महारानी के सामने आपने प्रार्थना की थी उन्हीं के स्वामी स्वयं अपने हाथों से आपके डैम को बचाने की तैयारी कर रहे हैं। इतना सुनने पर मैं वेहोश हो गया और मुझे वहां से उठा मेरी कोठी पर पहुँचाया गया। होश आने पर 'राम लक्ष्मण ने मेरे लिये अपने हाथों बांध का काम किया' यह सोच मैंने अपना सारा जीवन उनके लिये देने का निश्चय किया। बांध बच गया और मैं उसी समय कोट, बूट, नकटाई, धन माल इत्यादि सब पर एक दम लात मार कर, सन्यास ले कर जङ्गल का चल दिया। अब मैं बस एकमात्र श्री सीताराम जी महाराज का भजन करता हूँ और जो भी कहीं पर काई मुझे मिल जाता है तो मैं उससे यही हाथ जोड़ कर के प्रार्थना करता हूँ कि—My child, please say Sita Ram—

'श्री सीताराम' शब्द के कहने से, उनका नाम लेने से मुझे अपार प्रसन्नता होती है। दुःख है तो मुझे इसी बात का है कि मैंने आपकी इस परम पुण्य भूमि भारत में पहिले से ही जन्म क्यों नहीं लिया। मेरा इतना जीवन श्री सीताराम जी के भजन किये बिना व्यर्थ ही क्यों चला गया ?

वायुयान दुर्घटना में राम मन्त्र से एक बचा

(४७) विश्व जानता है कि नवम्बर १९५१ में दमदम हवाई अड्डे की विमान दुर्घटना में चालक सहित सब यात्री मारे गये। उसी में कांग्रेसी लीडर देशबन्धु गुप्ता भी मारे गये थे। चालक भी नहीं बच सका। वहां एक मात्र श्री पी० एस० मेहता बच गये, यह बड़ी आश्चर्यजनक घटना है। वह क्यों बचे, कैसे बचे, किसने बचाया, यह एक प्रश्न सामने है ? विमान दुर्घटना में बचे इस एकमात्र यात्री ने दुर्घटना का संस्मरण इस प्रकार बताया है जो कि देहली के 'नवभारत टाइम्स' ता० २७ नवम्बर सन् १९५१ पृष्ठ आठ कालम ६ में इस प्रकार छपा है—

'कलकत्ता २६ नवम्बर। गत बुधवार की विमान घटना में एक मात्र वचे हुए यात्री श्री सी. एस. मेहता ने दुर्घटना का संस्मरण बताते हुए कहा कि उक्त रात्री की दुर्घटना मुझे याद है। हम सब १३ के १३ यात्री कम्बलों में लिपटे सो रहे थे या ऊंघ रहे थे। इसी समय दमदम हवाई अड्डे की रोशनी दीख पड़ी। यात्रियों को सचेत कर सीटों से बाँध दिया गया और विमान उतरने का प्रयत्न करने लगा। विमान ने हवाई अड्डे का चार वार चक्कर लगाया और सुरक्षित रूप में उतरने का प्रयत्न करने लगा। श्री मेहता ने बताया इसके बाद क्या हुआ यह स्पष्ट नहीं है पर ऐसा अनुभव हुआ कि विमान किसी वृक्ष की चोटी से छू गया है और जमीन पर आ रहा है। उसके कुछ सेकेण्ड बाद ही विमान ऊपर उठा, अन्त में गिर कर चूर हो गया। मुझे याद है कि मैं उस समय राम राम जप रहा था। दुर्घटना के पश्चात् मैं एक बार फेंका एक किनारे पड़ा था, इतने में गांव वाले आ गए और उन्होंने मेरी प्राथमिक सहायता की।'

जहां सभी मारे गये, विमान-चालक तक न बच सका और विमान भी चूर चूर हो गया वहां मेहता जी के प्राण बच गये, जा विमान-दुर्घटना का आंखों देखा समाचार और राम नाम की महिमा बताने के लिये जगत् के सामने विद्यमान हैं।

पुराणोक्त दीर्घजीवियों के निदर्शन

जब पुराणों में आता है कि ऋषि महर्षि हजारों वर्ष के होते थे या अश्वत्थामा, शुकदेव, वेदव्यास आदि चिरजीवी हैं तो नास्तिक यह बातें झूठ मानते हैं। परन्तु ऐसे अनेक प्रत्यक्ष प्रमाण अब भी विद्यमान हैं जिनसे सिद्ध होता है कि पुराण वर्णित लम्बी आयु असम्भव नहीं है।

हिमालय में हजारों वर्ष की आयु का साधु

दो फ्रांसीसी यात्रियों का आश्चर्यजनक अनुभव

'वीर अर्जुन' २२ दिसम्बर १९५६ में छपा कि—

(४८) नई दिल्ली, २० दिसम्बर। श्री बद्रीनारायण यात्रासे लौटने वाले दो फ्रांसीसी यात्रियों ने यह आश्चर्यजनक रहस्योद्घाटन किया है कि मार्ग में उनकी एक ऐसे साधु से भेंट हुई जिसकी आयु हजारों वर्ष वताई जाती है।

इन दोनों फ्रांसीसियों ने वताया कि वद्रीनारायण मन्दिर से लौटते हुवे वे मार्ग भूल गए। काफी देर तक भटकने के वाद अकस्मात् उनकी भेंट एक अति वृद्ध साधु से हुई जिसके पपोटे दाढ़ी तक पहुँचे हुवे थे। यह वहुत दुवला पतला और अर्ध नग्नावस्था में था। इसने इन भटके विदेशियों को मार्ग दिखाया। दोनों फ्राँसीसियों ने उससे प्रभावित और कृतज्ञ होकर कैमरे से उसके रंगीन चित्र लिये।

इन फ्राँसीसियों ने वताया कि रास्ता पाकर वे गाँव में पहुंचे और गाँव वालों को उस साधु के वारे वतलाया तो गाँव वालों ने कहा कि इसकी आयु हजारों वर्ष की है और वह इस वर्फानी क्षेत्र में कभी कभी किसी भाग्यवान् पुरुष को ही दिखाई देता है।

दिल्ली पहुंच कर इन दोनों विदेशियों ने साधु के लिये हुवे फोटो को डैवलप कराया तो उस चित्र में उस स्थान की वाकी सव पृष्ठभूमि तो आई परन्तु साधु का चित्र गायव पाया गया।

सात सौ वर्ष की आयु वाला लामा

(४९) पाकिस्तान बनने से पूर्व आर्यसमाजी प्रसिद्ध पत्र दैनिक 'हिन्दी मिलाप' लाहौर में तिब्बत के एक लामा का आवरण पृष्ठ

पर चित्र छपा था, जिसकी आयु उस समय सात सौ वर्ष की प्रकट की गई थी। वह चित्र और कटिंग हमारी फाइल में सुरक्षित था परन्तु पाकिस्तान की भगदड़ में वह अन्य बहुत सी उपयोगी सामग्री के साथ वहीं छूट गया। परन्तु उसका उपर्युक्त उद्धरण श्री गुरुनारायण सुकुल साहित्यभूषण विशारद के एक लेख में हमें प्राप्त हो गया जो साप्ताहिक 'सिद्धान्त' बनारस के तारीख १६-११-४० के अङ्क ४।२८ में पृष्ठ २२० पर छपा है और हमारे पास सुरक्षित है।

तीन सौ वर्ष का महात्मा

(५०) 'वर्नगाँव भुसावल में एक दर्शनीय परमहंस महात्मा ऐसे हैं कि जिनकी आयु इस समय तीन सौ वर्ष की है।'

('हिन्दु सर्वस्व' हरिद्वार २-११-२५)

एक सौ इक्कावन वर्ष का बूढ़ा

(५१) 'विलगुडर (सर्विया) में 'नमफी ईरत फन्दी' नामक एक बूढ़ा ऐसा है कि जिसने अपनी १०१ वर्ष की आयु में २७ विवाह करके ११० बच्चे उत्पन्न किये हैं।' ('भारत मित्र' कलकत्ता ३-१२६)

पांच हजार से अधिक आयु वाला जीवित

मासिक पत्रिका 'सुमति' अङ्क २ पृष्ठ ८८ पर श्री वृन्दावन विहारी लिखते हैं कि—

(५२) श्री वद्रीनारायण धाम को यात्रियों की एक टोली जा रही थी। इस टोली में अपने संगी साथियों के साथ मैं भी था, मैं सबके पीछे २ चल रहा था। मुझे देर से लघुशङ्का मालूम हो रही थी। बस, मैं विना उनसे कहे ही बैठ गया—सोचा उनके आगे बढ़ते २ फिर मैं साथ हो लूंगा किन्तु मेरे साथी बहुत आगे निकल गये।

मैं वहाँ से तेजी से लपका लेकिन आगे चल कर नहीं मालूम हुआ कि किधर जाऊँ ? आँखों के आगे तीन मार्ग थे। भगवान् का स्मरण कर एक पर चल पड़ा। ज्यों २ मैं आगे बढ़ता गया मेरा मुख भय से सूखता गया। आँखों के आगे अन्धेरा सा हो उठा। मैं पीछे मुड़ा। पर याद ही न रहा कि किस चट्टान की परिक्रमा कर मैं इधर आया हूं और इस बार एक दूसरे रास्ते पर चल पड़ा। मैं चलता चला गया। मेरे लिये भगवान् का भरोसा मात्र रह गया था।

उस घोर वन में एक ओर धुंआँ सा दीख पड़ा। मैं समझ गया किसी का निवास-स्थल है। मैं उस ओर बढ़ने लगा। पहाड़ की एक गुफा के बाहर आग जल रही थी। गुफा में जब मेरी दृष्टि गई, सन्न रह गया। दीवार पर धनुष और बाणों से भरा तरकश लटक रहा था।,सोचा कहीं मैं किसी नरभक्षी जंगली मानव के चंगुल में तो नहीं आ फँसा। भय से मेरे रोंगटे खड़े हो गये। बस, मैं उल्टे पाँव लौटा। मैं अभी कुछ ही कदम गया होऊँगा कि किसीने संस्कृत में पुकारा—'पण्डित ठहरो !' मैंने मुड़कर देखा एक विशालकाय, दानव के आकार के महात्मा गुफा के पास खड़े २ मेरी ओर देख रहे हैं। 'इधर आओ डर न करो।' मैं सहमा हुआ उनके पास पहुंचा और उनकी आज्ञा पा जलती हुई अग्नि के एक ओर बैठ गया। उन्होंने कमण्डलु के जल से मेरा हाथ धुलाया और एक बड़ा सा पत्ता मेरे आगे डाल दिया। अपने चिमटे द्वारा अग्नि से उन्होंने एक कन्द निकाला, जो पकने के लिए कुछ समय पहले डाला गया था। कन्द का एक सिरा तोड़ कर पत्ते पर झुका उसे हिलाया। उसके भीतर से मालूम हुआ जैसे चावल गिर रहे हों। महात्मा के आदेश से मैंने उसे खाया ! लगा जैसे दूध चीनी में पकी हुई चावल की खीर खा रहा हूं ! उसमें वह सुगन्धी व स्वाद था कि मैं वर्णन करने में असमर्थ हूं। पत्ता फेंक, मुंह हाथ धो, जब मैं बैठा, महात्मा ने कहा—'पण्डित, तुम महाभारत कथा कहते

सुनते हो, किन्तु उसका अर्थ नहीं समझते हो । महाभारत जो समझ जाये वह संसार में निर्भय होकर रहे ।' अब तक मैं बहुत कुछ स्थिर हो गया था । महाभारत मैं कहता हूं जब इसे महात्मा जानते हैं तो मेरी कौन सी बात उनसे छिपी होगी । मैंने कुतूहलवश उनका नाम पूछा । आपने कहा— 'मैं ही आचार्य द्रोण का पुत्र अश्वत्थामा हूं ।'

मैंने उठकर साष्टांग दण्डवत् किया और उन्होंने मुझसे कहा कि— 'तुम्हारे संगी साथी तुम्हारे लिये बहुत घबड़ा रहे हैं । आओ तुम्हें वहां पहुंचा दूं ।'

उन्होंने अपने हाथ से मेरी आंखें मूंद दी । एकाएक मुझे मालूम हुआ मैं उनकी बगल में दबा हुआ आकाश मार्ग से उड़ा जा रहा हूं । दूसरे क्षण ज्यों ही मेरे पैर भूमि पर लगे महात्मा ने मेरी आंखों से अपना हाथ खींच लिया और कहा देखो सामने तुम्हारे साथी जा रहे हैं । मैंने उधर दृष्टि फेरी और इधर महात्मा गायब हो गये ।'

पुराणोक्त देवदर्शन के निदर्शन

मंत्रके बलपर देवताओं का प्रत्यक्ष दर्शन !

आर्यसमाज के धुरन्धर विद्वान् पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर 'परमार्थ' मासिक (शाहजहांपुर) के विशेषाङ्क 'अनुभवांक' १५ जनवरी सन् १९५७ पृष्ठ ११४ पर लिखते हैं कि

'मैं मन्त्र का जप करता था । यह जप मैं भोजनोपरान्त ९ बजे से ११ बजे तक एकान्त में बैठ कर करता था । फल मन्त्र में वर्णित देवता का प्रत्यक्ष दर्शन था । तीन महीने तक घृत का दीप तथा सुगन्धित अगर-बत्तियां जला कर जप किया तो दिव्य प्रकाश दीखने लगा । चौथे महीने में साक्षात् देवता का दर्शन उसी प्रकाश में हुआ । प्रथम प्रकाश अस्थिर रहता था । उसका आकार छोटा या बड़ा होता था,. प्रकाश के रंग भी

वदलते थे। प्रथम पीला सा रंग दीखता था, पश्चात् लाल और अंत में नील वर्ण होता था। किसी समय रंगों के क्रम में परिवर्तन भी होता था। अन्त में जिस समय दिव्य देवता का दर्शन हुआ तव वही रंग स्थिर रहने लगा। देवता का अंग प्रत्यङ्ग स्पष्ट दीखता था। रूप तथा वर्ण अत्यन्त मनोहर और आकर्षक था। चार महीनों के पश्चात् दोढ़ाई महीने मैंने यही साधन किया। पश्चात् किसी कारण वश यह पूर्ण न हो सका। इसी से इष्टदेव का साक्षात्कार होता है ऐसा मुझे अनुभव हुआ।

मेरे जीवन की दूसरी घटना

(५३) मैं विषम ज्वर से छव्वीस दिन लगातार वीमार रहा। सवने मेरी जीवनाशा छोड़ दी थी। मूर्च्छा की अवस्था में आकाश में घने वादलों में एक अतिवृद्ध ऋषि का दर्शन हुआ। वे नीचे मेरे पास आये और कहने लगे कि वेटा! घवड़ाओ मत, तुम मरोगे नहीं। मेरी आंखें खुील उसी समय से ज्वर उतर गया और १० दिनों में ही मैं स्वस्थ हो गया।

तीसरी घटना

(५४) एक साधु जी मेरे घर में आये। आठ दिनरहे। वे पानी पर शवासन करते थे। हमारे घर के पास वड़ा तालाव था। पहिले ही दिन चुपचाप वे गये और उस तालाव के पानी में प्रेत के समान पड़े रहे। लोगों ने समझा कि यह मुर्दा है। पुलिस वुलाई गई, ग्राम के पञ्च जमा हुवे पञ्चनामा लिखा गया और इस मुर्दे का अन्तिम संस्कार करने की तैयारी की। इतने में वे उठे और चुपचाप चलने लगे। तव लोगों को मालूम हुआ कि ये ता पण्डित सातवलेकर जी के अतिथि हैं।'

राम नाम से गूंगे को वाचा मिली

'वीर अर्जुन' (देहली) ता० ६-७-१६५७ लिखता है—

(५५) इन्दौर ८ जौलाई। परगना शुजापुर के ग्राम लीवड़ी में

रामायण के अखण्ड कीर्तन में भाग ले रहे २९ वर्षीय जन्म के गूंगे युवक को १० मिनट की मूर्छा के वाद वाचा मिल गई और वह बोलने लगा। 'श्री राम जय राम जय जय राम' संकीर्तन वाक्यके भजन में लीन ग्रामीणों के झुण्ड में सम्मिलित गूंगा कीर्तन में वेहोश होकर गिर पड़ा १० मिनट के वाद चेतना आई तो उसने वातचीत प्रारम्भ कर दी। पौराणिक श्लोक का अनुवाद रामायण का चमत्कारी सोरठा 'मूक होय वचाल पंगु चढ़त गिरिवर गहन' लोगों की जवान पर नाचने लगा।'

परियों ने भगवान् की पूजा की

'वीर अर्जुन' ता० २४-८-१९५५ में छपा है—

(५६) 'कोटद्वार २२ अगस्त। ताजे समाचारों से ज्ञात हुआ है कि श्री केदारनाथ भगवान् की परियों ने पूजा की है। जव परियाँ पूजा कर रही थीं उस समय स्वयं ही शंख और घण्टे वजने लगे। जव भगत लोग वहां पहुँचे तो उन्हें परियों के दर्शन तो न हुवे किन्तु धक्के लगने लगे और किसी व्यक्ति के स्पर्श का अनुभव हुआ। प्रयत्न करने पर भी भक्त लोग मन्दिर के अन्दर प्रविष्ट नहीं हो सके।'

पुराणोक्त मंत्रशक्ति के निदर्शन

जव पुराणों में मन्त्र शक्ति के चमत्कारों की वातें आती हैं तो सहसा बुद्धिवादी इसे गप्प वताने लगते हैं। हम मन्त्रशक्ति के चमत्कारों की सत्य घटनाएं समाचार पत्रों तथा आर्यसमाज के धुरंधर विद्वानों द्वारा वताई गई उद्धृत करते हैं, यथा—

दिन में तोता रात में आदमी

'नवभारत टाइम्स' (देहली) ता० १४-१२-५६ में छपा है कि—

(५७) उरई। मुझे दिन में तोता तथा रात में आदमी वना दिया

जाता है। उक्त सूचना देने वाला एक पत्र स्थानीय डी० ए० वी० इण्टर कालेज के अध्यापक श्री राजहंस को अभी हाल में यहां मिला है। श्री राजहंस का कहना है कि यह पत्र उनके बहुत दिनों से लापता पुत्र के हाथ का लिखा हुआ है। पत्र में आगे लिखा है कि सुन्दर स्त्रियां मुझे घेरे रहती हैं और घर जाने की बात पर मुझे पीटा जाता है। उक्त पत्र का उसके लिखे अनुसार बड़ी मुश्किल से एक साधु द्वारा डाकखाने में डलवाया गया है। पत्र पर जिला जलपाईगुड्डी (आसाम) के नारहर डाकखाने की मोहर हैं।'

सर्प दंश से मरा मंत्र द्वारा जी उठा

'जनसत्ता' (देहली) ता० २९-५-५४ लिखता है कि—

(५८) 'मथुरा में एक युवक को सांप ने काट लिया था और वह मरने के करीब था। डाक्टरों ने जवाब दे दिया। तब श्री वृन्दावन के गोपीनाथ जी के मन्दिर के भण्डारी को वहां बुलाया गया। उसने मन्त्र पढ़ कर चार कौड़ियां उसी सांप को बुलाने को चारों तरफ फेंकी। उनमें तीन कौड़ियां तो लौट आईं एक न लौटी। एक घण्टे बाद वही सर्प गुस्से में भरा हुआ वहां पर आया और उसके माथे पर वही कौड़ी चिपक रही थी। मन्त्र पढ़ने वाले ने फिर दो कौड़ियां उस सर्प को मारीं और उससे मृत नवयुवक के शरीर से ज़हर पीने को कहा। सांप ने काटे हुये स्थान पर अपना मुंह लगा दिया और तीन घण्टे तक ज़हर को खींचता रहा। फिर वह सर्प बेहोशी की हालत में चला गया। नवयुवक अच्छा हो गया। वह घटना सैंकड़ों आदमियों की आंखों देखी है।'

मंत्र द्वारा ७२ घण्टे बाद जीवित

'नवभारत टाइम्स' (देहली) ता० १०-१९५६ लिखता है कि—

(५९) धामपुर ६ अक्तूबर। बिजनौर के पास एक ग्राम में सर्प के काटने से मरा व्यक्ति ७२ घण्टे के बाद जीवित हो गया।

घटना इस प्रकार वताते हैं कि एक व्यक्ति की सर्प द्वारा काटे जाने पर काफी उपचार करने के उपरान्त भी मृत्यु हो गई। इस पर गांव के व्यक्ति एक इलाज करने वाले को ढूंढते २ हरिद्वार से लेकर वहां पहुंचे। उक्त व्यक्ति सर्प के काटने के ६६ घण्टे के पश्चात् वहां पहुंचा। इलाज करने वाले ने मन्त्रों के वल से चार सरवे चारों दिशाओं को छोड़े। तीन घण्टे वाद पूर्व दिशा को गया हुआ सरवा एक सर्प के फन को वींध कर सर्प सहित वापस आ गया। शेष सरवे उसके आधे घण्टे वाद खाली वापस आ गये। दो नांदे रक्खी गई जिनमें से एक खाली तथा एक को दूध से भर दिया गया था। सर्प ने आकर जिस स्थान पर काटा था वहाँ से दूध पी पीकर ज़हर चूसना शुरू कर दिया तथा खाली नांद में डालना शुरू कर दिया। कुछ घण्टों के उपरान्त मृतक में चेतना आ गई जो अव वह पूर्ण स्वस्थ है।'

(६०) सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ 'संकीर्तन' मासिक (मेरठ) के विशेषांक मंत्राङ्क अङ्क १ सितम्बर सन् १९३८ पृष्ठ ४१ पर लिखते हैं कि—

मंत्रों द्वारा विष उतारने के चमत्कार

मन्त्र शक्ति अवश्य होती है और यह मानना ही पड़ेगा कि भारत-वर्ष में ऐसे व्यक्ति कम नहीं हैं। मैं जव बालक था तो पूने में पढ़ता था तव एक सपेरे को देखा था। उसने ताजे पकड़े हुए विषैले सर्प के चारों ओर एक गोल कुण्डली खेंची थी और सांप को ललकार कर के कहा था कि इसके वाहर निकल जाओगे तो मारे जाओगे। जव वह सांप उस कुंडली में वैठा था तव वह मान्त्रिक मुख से कुछ वोलता हुआ एक एक चावल का दाना सांँप के ऊपर फेंक कर मारता था और उस मार से इतना वड़ा साँप मुख फैला कर व्याकुल हो जाता था, पर उसकी हिम्मत नहीं होती थी कि वह उस कुण्डली से वाहर निकल आवे। विच्छू

उतारने वाले तो मैंने वहुत देखे जिनके अपने विशेष मन्त्र होते हैं। वेद के मंत्रों में भी वड़ी शक्ति है यदि एकतानता से कोई इनका स्वाध्याय और जप करे।

सन्यासी श्री सत्यानन्द जी द्वारा मन्त्र दीक्षा

(६१) स्वामी सत्यानन्द जी महाराज आर्यसमाज की, दयानन्द की और सत्यार्थप्रकाश आदि किसी की भी परवाह न करते हुए सवको श्रीराम नाम मंत्र की दीक्षा देते हैं और श्रीराम नाम महिमा के सम्वन्ध की कितनी ही पुस्तकें आपने लिखी हैं जिनका आपके शिष्य पाठ करते हैं और श्रीराम नाम का जप करते हैं। इससे वढ़कर श्रीराम नाम का प्रत्यक्ष चमत्कार और क्या कि विरोधी भी उसे सादर जपते हैं।

मंत्र से हीरालाल मगरमच्छ बन गया

यह अद्भुत आश्चर्यजनक सत्य घटना सन् १९३६ के सितम्वर के 'हिन्दुस्तान' और 'हिन्दुस्तान टाइम्स' आदि सभी समाचार पत्रों में छपी थी। 'सङ्कीर्तन' मासिक (मेरठ) के विशेषाँक 'मन्त्राङ्क' पृ० १७४ से ज्यों की त्यों देते हैं—

(६२) 'सितम्वर सन् १९३६ का समाचार है कि दिनाजपुर जिले के वालूर घाट में हीरालाल साधु मन्त्रविद्या का चमत्कार दिखाने लगा। उसने एक लोटे जल को अभिमन्त्रित करके रख दिया और दूसरे लोटे के जल को अभिमन्त्रित करके देखने वाले लोगों से कहने लगा कि देखिये मैं इस लौटे जल को अपने ऊपर डाले लेता हूँ इसके प्रभाव के कारण आपके सामने अभी मनुष्य से घड़ियाल वन जाऊंगा। तव आपमें से कोई महानुभाव मेरे ऊपर उस रखे हुये लोटे का जल डाल देना, मैं फिर घड़ियाल के रूप से मनुष्य के रूप में हो जाऊंगा।' उसने पहले लोटे का जल अपने ऊपर डाल लिया। वह तुरन्त मनुष्य से घड़ियाल वन

गया । तभी लोगों के कौतुहल की गड़बड़ी में दूसरा लोटा लुड़क गया । मन्त्रित जल न रहने के कारण वह घड़ियाल ही वना रहा । तव उस घड़ियाल रूपी हीरालाल के कुटुम्वी उसको फिर से मनुष्य करने के विचार से उसके गुरु को लिवा लाने के लिये कामरूप गये । गुरु जी ने उनकी प्रार्थना सुनकर ध्यान लगाया और कहा कि अब उसको घड़ि-याल से आदमी वनाना मेरी शक्ति से वाहर है कारण कि अपवित्र वस्तुओं के भक्षण कर लेने से अब वह अपवित्र हो गया । किन्तु उन कुटुम्बियों के बहुत रोने गिड़गड़ाने से गुरु जी फिर बोले कि यह मनुष्य तो नहीं बन सकता, हां मगरमच्छ वनाये देता हूँ क्योंकि मगर-मच्छ ही श्री गङ्गा जी की सवारी है, इससे यह होगा कि जव यह संयोग-वश श्री गङ्गा जी में चलता जायगा तो श्री गङ्गा जी की हवा से इसकी सद्गति हो जावेगी । गुरु जी ने मन्त्र पढ़कर छींटा दिया और घड़ियाल रूपी हीरालाल घड़ियाल के शरीर को तुरन्त बदल कर मगरमच्छ बन गया । अव इस समय वह हीरालाल मगरमच्छ के रूप में आत्रेयी नदी में विचर रहा है । लम्वाई में वह दस हाथ है और इसका फोटो लेने का प्रयत्न किया जा रहा है । किनारे पर खड़े होकर जव इसे 'हीरालाल !' नाम से पुकारा जाता है तो वह तत्काल ऊपर मुंह निकाल कर खड़ा रहता है और शिर धुनता है ।

मन्त्र विद्या के चमत्कारिक निदर्शन

बाबा गोपालदास ने ताँबे को सोना, पानी को दूध और ईंट को मिश्री बना दिया

'हिन्दुस्तान' (देहली) ता० १० अक्तूबर १९५२ पृ० ८ पर छपा है कि—

(९३) 'विरला हाउस नई दिल्ली से' मास्टर श्रीराम जी लिखते हैं

कि दिल्ली में अनुमान दो ढाई मास से एक वैष्णव साधु आये हुए थे जिनका नाम बाबा श्रीगोपाल दास है। वह यहाँ पर आर्यनिवास नं० १ डाक्टर लेन पर ठहरे थे। छत के ऊपर एक गोल सा कमरा है उसी कमरे में रहते थे। उन्होंने गोपाल का चित्र, काष्ठ की चौकी पर रख छोड़ा था। उस चित्र के चारों तरफ कनेर के पुष्प चढ़ाये हुये रखे रहते थे। गोपालदास बाबा उस चौकी के पास ही एक दरी पर बैठे श्रीतुलसी की माला फेरते थे। जो लोग उनके पास जाते वे भी उसी दरी पर बैठ जाते थे। अपने पास जाने वालों को प्रसाद देने के लिये बाबा जी ईंट के छोटे २ टुकड़े अनुमान ४-६ तोला वजन के, हरे केले के पत्ते में गोपाल की मूर्ति के सामने आधा मिनट रखकर उठा लेते थे तो ईंट के टुकड़े सफेद मिश्री के टुकड़ों में बदल जाते थे और उन मिश्री के टुकड़ों को उन लोगों को दे देते थे जो उनके दर्शन के लिये जाते थे।

मिट्टी को कलाकन्द बना दिया

(६४) कभी-कभी ईंट का टुकड़ा कलाकन्द में बदल जाता था। वह अद्भुत परिवर्तन कैसे हो जाता था सो तो यह बाबा जी ही जानते हैं और किसी को पता चला नहीं है। विज्ञानवेत्ता इसके कारण को ढूंढ निकालें तो दूसरी बात है।

उक्त बाबा जी के पास जर्मन के राजदूत, जापानी राजदूत, मावलंकर जी, श्रीसत्यनारायण सिंह, रायबहादुर लक्ष्मीकांत मिश्र आदि गये थे। इनको भी इसी प्रकार का प्रसाद दिया गया। जर्मन राजदूत के साथ एक जर्मन महाशय भी थे। उन्होंने तो यह चमत्कार देखकर बाबा जी से अपना शिष्य बना लेने की प्रार्थना भी की थी।

तांबे की चमची सोने की बना दी

(६५) इन दो चमत्कारों के अतिरिक्त तीन चमत्कार विशेष उल्लेखनीय हैं। पहला चमत्कार तो यह है कि श्री जुगलकिशोर बिड़ला ने एक

ताम्वे का चमची को एक केले के हरे पत्ते में लपेट कर अपने हाथ में लिया और वावा जी के कहने के अनुसार श्री विरला जी सूर्य के सामने खड़े हो गये। वावा जी भी पास में खड़े कुछ मन्त्र जपते रहे। दो तीन मिनट वाद ही चमची निकाली गई जो सोने की वन गई थी। अभी तक वह चमची श्री विरला जी के मुनीम डालूराम जी के पास उसी आर्यभवन में रखी हुई है।

भट्टे की नम्बरी ईंट मिश्री की बनी

(६६) दूसरा चमत्कार यह हुआ कि इस मिश्री के प्रसाद का वृत्तान्त सुन कर एक महाशय ने वावा जी के पास जाने वालों में से किसी को यह वात कह दी कि हम तो वावा जी का मन्त्र तव मानें कि वह पूरी की पूरी किसी नम्वरी ईंट को मिश्री की ईंट वनादें। ऐसी वात वावा जी को सुनाई गई तो वावा जी ने झट कह दिया कि गोपाल जी की कृपा से जव मिट्टी की ईंट के टुकड़े मिश्री के टुकड़े वन जाते हैं तो पूरी मिट्टी की ईंट का मिश्री की ईंट बन जाना कौन सी बड़ी बात है? अतएव १८ सितम्बर वृहस्पतिवार को रात्रि के ८ वजे श्री विरला जी तथा और कई सज्जनों के सामने एक नम्वरी ईंट मंगाई गई और धो पोंछ कर एक सज्जन के हाथ से काष्ठ की एक चौंकी पर वह ईंट रखवा दी गई। एक केले के पत्ते से उस ईंट को ढकवा दिया गया। तीन चार मिनट तक वावा जी कुछ मन्त्र जपते रहे। फिर उस ईंट को उठाया गया तो केले के पत्ते में से एक दम श्वेत मिश्री की ईंट निकली। वह ईंट श्री जुगलकिशोर बिरला जी के पास रखी हुई है। ये दोनों चीजें आज भी मौजूद हैं कोई भी देख सकता है। हमारे प्रतिनिधि श्री भक्त रामशरणदास जी ने श्री वी. जी. देशपाण्डे संसद् सदस्य, प्रधान मन्त्री हिन्दू महासभा तथा अन्य कई सज्जनों की उपस्थिति में इस ईंट का चित्र लिया जो कि ३ मार्च [illegible] के नवभारत में प्रकाशित

भक्त रामशरण दास जी अ० भा० हिन्दू महासभा के मंत्री श्री बी० जी० देशपांडे अ० भा० हिन्दू विद्यार्थी परिषद् के मंत्री श्री नृसिंह जोशी व शिवकुमार गोयल मिश्री की ईंट को देख रहे हैं।

हो चुका है। सामने के इस चित्र में भक्त जी, देशपाण्डे जी आदि सज्जन मिश्री की ईंट के पीछे खड़े दिखाई दे रहे हैं।

पानी की भरी बालटी दूध बन गई

(६७) तीसरी अद्भुत घटना तो हम ने स्वयं अपनी आँखों से देखी है। उस समय बाबू श्री जुगलकिशोर जी विड़ला, गायनाचार्य पंडित रमेश जी ठाकुर, तथा नवनीत के संचालक श्री गोपाल जी नेवटिया उपस्थित थे। अनुमान दिन के १० बजे होंगे। उस समय किसी ने बाबा जी से कहा कि एक दिन आप ने पानी से दूध बनाया था परन्तु उस दिन श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, माधव प्रसाद जी विरला आदि जो सज्जन देखते थे उनको संतोष नहीं हुआ था, सो बाबा जी इस प्रकार से दूध बनायें कि किसी को संदेह न रहे। इस पर बाबा जी वहुत हंसे और बोले—उन लोगों की श्रद्धा की स्यात् परीक्षा की गई होगी। इसके बाद बाबा जी ने कहा—अच्छा, एक काष्टपट्ट बाहर रखा और उस पर यह पानी की वालटी रख दो। बाबा जी ने जैसा कहा वैसा ही किया गया। बाबा जी ने अपनी चादर जो ओढ़ रखी थी, वह भी उतार दी और एक कौपीन तथा उस पर एक तौलिया ही रखा। वे स्वयं दूर खड़े हो गये। सब को कह दिया कि उस बाल्टी को एक बार फिर अपनी आँखों से देख लो। सब ने वैसा ही किया। बाबा जी ने एक आदमी से कहा कि तुम इस पट्टे पर बाल्टी के पास बैठकर ओम् का जप करते रहो। फिर बाबा जी उस बाल्टी के पास गये और उसमें से पानी भरा और सब को वह पानी दिया गया। सब ने कहा कि यह तो पानी ही है। फिर बाबा जी श्रीगोपाल जी की मूर्ति के पास जा बैठे और वह बाल्टी अपने पास मंगवा ली। बाल्टी अंगोछे से ढक दी गई और एक लाल फूल जो श्री गोपाल जी की मूर्ति पर चढ़ा हुआ था अपने हाथ से बाल्टी में डाल दिया। उसके पश्चात् जब गमछा हटाया गया तो

एकदम सफेद दूध देखने में आया। सब को एक एक कटोरी दूध दिया गया, शेष दूध विरला हाऊस पहुँचाया गया जो अनुमान ढाई सेर था। वहां उसे गरम करके जमाया और दूसरे दिन उसमें से मक्खन निकाला गया।

बाबा जी की ऐसी ही अनेकों सिद्धियों का हाल गोस्वामी गणेशदत्त जी सुनाया करते हैं। परन्तु यहाँ पर तो संक्षेप में इतना ही उल्लेख किया गया है। इन कुछ आश्चर्यजनक बातों को देखकर मन में आया कि विज्ञान-वेत्ताओं से विनय पूर्वक निवेदन करें कि आर्य ऋषियों और मुनियों द्वारा सम्मानित पातञ्जल योगदर्शन के सूत्र 'जन्मौषधिमन्त्र-तपस्समाधिजा सिद्धयः' में एक मन्त्र सिद्धि भी मानी गई है। मन्त्र सिद्धि का चमत्कार देखने का अब तक हमें कोई अवसर नहीं मिला था परन्तु ये कुछ चमत्कार अपनी आँखों से देखकर हमें अब मन्त्रसिद्धि में विश्वास हो गया है। साथ ही एक प्रकार का विस्मय भी उत्पन्न हा गया है। उसी विस्मय के कारण आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं से यह निवेदन करने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई है कि आप पातञ्जल योगदर्शन के उपर्युक्त मन्त्र की वर्णित मन्त्रसिद्धि को मानते हैं या नहीं? और यदि नहीं मानते हैं ता या तो आप ऐसे ही चमत्कार अपने विज्ञान द्वारा करके दिखायें और यदि आप दिखाने में समर्थ नहीं तो आप अपने अभिमान को त्याग कर भारतीय आर्यशास्त्रों में बताई मन्त्र सिद्धि को सहर्ष स्वीकार करलें; क्योंकि आप तो अपने को बराबर ही सत्य का पुजारी घोषित करते रहते हैं। आशा है बुद्धिमान् विज्ञानवेत्ता इन रहस्यों की जाँच पड़ताल करके एक निर्णय पर पहुँचेंगे। केवल यह कह देने से कि यह सब निराधार है काम नहीं चलेगा। किसी वस्तु को उसकी पूरी जाँच पड़ताल किये बिना ही निराधार कह देना तो बहुत आसान है। जो अपने का सत्य का पुजारी कहता है उसका कर्तव्य है कि यदि इन घटनाओं की जड़ में कोई धूर्तता या वंचना हो तो उसको

सावित कर दे या यह स्वीकार करले कि हम को विज्ञान के द्वारा तो इनका कोई रहस्य मालूम नहीं हो सकता, इसलिए योगदर्शन के उक्त सूत्र में वर्णित मन्त्रसिद्धि को ही मानना न्यायसंगत होगा।

योगी देव ने कई मनुष्यों को लोकान्तर भेजा

'हिन्दु संसार' (देहली) ५-१२-२५ लिखता है कि—

(६८) 'हाल में ही योगी देव ने एक मनुष्य की आत्म को अपने योगवल से सूर्यलोक में भेजा। इससे पूर्व ने देश देशान्तर के समाचार मंगा चुके थे, जो कि सच्चे निकले। सूर्यलोक में आत्मा ने दूर तक अग्नि ही अग्नि देखी। वहां पर मनुष्यों की बस्ती है, पर यहाँ के मनुष्यों से वहाँ की शकल-सूरत भिन्न हैं। उस मनुष्य की आत्मा ने लौट कर वताया कि मैं काले-काले विचित्र मनुष्यों को वहां देखता था दूर-दूर तक जल का नाम नहीं था। अग्नि ही के कुछ वृक्ष दिखाई देते थे। जब आत्मा को (लिङ्ग शरीर को) चन्द्रमा मण्डल में भेजा गया तो लौटकर उसने कहा कि वहां हम लोगों की तरह वस्ती है। वहां के मनुष्य सुन्दर हैं, आँखें वड़ी वड़ी और कान भी वड़े २ हैं, पर गोरे बहुत हैं। जब मैं और आगे वढ़ा तो पानी ही पानी दिखाई दिया। जमीन का हिस्सा मुझको घूमते समय कम मालूम पड़ा। वर्फीली जमीन ज्यादा है। लोग सुखी मालूम पड़ते थे। चन्द्रलोक में योगी जी ने दिन के १२ वजे भेजा था। वह कहता था कि मैं जब वहां पहुंचा तो अन्धेरी रात थी, नहीं तो मैं बहुत कुछ देखता।' यह बातें कहां तक सच हैं इसको खगोल विद्या वाले समझ सकते हैं।

—ठाकुर दर्शनसिंह
मैनेजर रियासत जनमतपुर,
जि० जलौन।

आदमी को पत्थर का शेर बना दिया

'हिन्दू संसार' (देहली) २२-११-२५ में लिखा है कि—

श्री ठाकुर दर्शनसिंह मैनेज़र रियासत जनमतपुर (जालौन) लिखते हैं कि यहां के किले में कई आदमियों के सामने श्रीयोगीश्वर देव ने विचित्र चमत्कार दिखाये ।—

(३६) पहले आपने एक आदमी को पत्थर वना दिया, फिर लात मार उसको ठीक कर दिया । फिर एक आदमी को शेर वना दिया जो शेर की तरह दहाड़ने और आदमियों को फाड़ खाने को दौड़ने लगा । योगीराज ने उसके सामने झट से एक दुपट्टा फैंक दिया जिसे उसने चीर चीर कर डाला । साधु ने उसके पास पहुँच कर फिर उसे मनुष्य बना दिया ।

दो रूप और विराट् रूप

(७०) थोड़े देर में योगीराज ने अपने दो रूप कर लिये और दोनों योगी उस मनुष्य के हाथों पर जा बैठे । इन्हें लेकर वह नाचने कूदने लगा । एक योगी ने अपना मुंह फाड़ा जो जमीन से आकाश तक हो गया । मुंह के भीतर हजारों दाढ़ियां दिखाई देने लगीं आंखें सूर्यों की तरह चमकने लगीं । थोड़ी देर में मुंह से आग निकलने लगी । वह मनुष्य डरकर भागने लगा । दाढ़ियों से भीतर हजारों सिर चूर चूर किये जा रहे थे । प्रार्थना करने पर फिर वही मनुष्य रूप धारण कर लिया ।

शरीर को छोटा बड़ा बनाने वाला योगी

'भारतमित्र' (कलकत्ता) ७-६-२६ में निम्न दो घटनाओं का वर्णन करता है—

'अनेक वर्तमान पत्रों में एक साधु के विषय में अनहोनी बातें सुनकर

हम लोग दर्शनार्थ गये। साधु का सिर बड़ा था और मुख से उनका महान् पुरुष होना प्रतीत होता था: इस साधु के पास ग्रेजुएट वकील, गँवार सब पहुँच कर प्रथम अपनी शङ्काएँ जो कि नास्तिक जगत् में उत्पन्न हो रही हैं करते हैं। उनके उत्तर में जंची सुई युक्तियों को सुन कर सब का दिल भर जाता है। साधु कभी कभी प्रसन्न होकर ऐसा कार्य कर बैठते हैं, जो कि श्रीकृष्ण जी की लीला में हम लोग पढ़ते चले आये हैं।

(७१) जिस दिन मैं पहुँचा तो वामनावतार पर कुछ बातें चल रही थीं। प्रश्न यह था कि क्या बड़ा शरीर छोडा हो सकता है। अचानक बात करते हुए हँस कर साधु उठ खड़े हुए, और उन्होंने कहा—देखो ! सब देखने लगे। साधु कोई दस हाथ दूर खड़े थे। वे पैर पसारते हुए पास आने लगे। एक एक कदम पर उनका शरीर लघु होता जाता था। सब लोग बड़े आश्चर्य में थे। वे जैसे ही सब की ओर बढ़ते गये वैसे वैसे उनका शरीर लघु होता गया। जब वे दो हाथ दूर रह गये तो ५। फीट कद के साधु दो फीट रह गये। साधु का दो फीट का वामन शरीर बड़ा कुतूहल उत्पन्न करता था। विस्मय के कारण सब की आंखें फटी ही रह गईं। फिर वे थोड़ी देर बाद उतने बड़े होकर अपने स्थान पर जा बैठे। मुझ को तथा मेरे साथ कई मनुष्यों को यह विचित्र अनहोना चमत्कार देखने को मिला। इधर इन साधु की बड़ी धूम है। लोगों का पूर्ण विश्वास है कि यह कोई अवतार हैं इनका नाम योगीदेव' है। मैं अत्यन्त विस्मय में हूं। मेरा भी विश्वास है कि यह कोई महान् आत्मा है।'

चन्द्र सूर्य का प्रकाश स्तम्भित कर दिया

भरतपुर राज्य के घेवड़ी ग्राम निवासी मि० मदनमोहन बी० ए० लिखते हैं :—घेवड़ी गांव के जङ्गल की एक गुफा में मैंने एक साधु को देखा। उसका शिर बहुत बड़ा, पर शरीर दुबला पतला था। साधु ने

मुझे ईश्वर मानने के लिये विवश कर दिया। उनका ज्ञान शास्त्रीय नहीं वल्कि व्यावहारिक भी मालूम पड़ता था। मेरे पूछने पर उन्होंने वताया कि मैं जङ्गल में एक बड़े कार्य के किये रहा करता हूँ। तुम उसको स्वप्न में भी नहीं समझ सकते। इसके वाद उन्होंने योग अध्यात्म-विद्या का उपदेश दिया और कहा सन्ध्या तक तुम यहां ठहरो तो तुम्हें मैं दिखला सकूंगा कि मेरा सूर्य और चन्द्रमा पर कैसा शासन है। हम लोग ठहर गये।

(७२) चांदनी छिटकी और साधु मैदान में आये। उन्होंने कहा कि देखो चन्द्रमा की रोशनी मुझ पर अब नहीं पड़ेगी। देखते-देखते ५ मिनट में ही वह अन्धकारमय हो गये। दूसरे दिन ८ बजे दिन में हम लोग उनके यहाँ फिर पहुंचे। साधु अतिशय प्रसन्न मालूम पड़ते थे धीरे धीरे उनके चेहरे से उजाला हटता गया और दो मिनट के भीतर कालिमा भी हट गई। हमारे सामने एक विना शिर की आकृति मालूम पड़ने लगी। मुझे तो भय मालूम पड़ा परन्तु मेरे मित्र ने मुझे धैर्य दिया। अन्त में वह शरीर भी अन्तर्ध्यान हो गया। हम लोग अन्तर्ध्यान की वात ही कर रहे थे कि फिर वह मूर्ति पूर्ववत् क्रमशः आ गई और वह साधु अपने रूप में दीख पड़े।

पं० रामस्वरूप,
स्टेशन 'नदबई' ग्राम वेवड़ी, स्टेट भरतपुर

बाबा बंशी वाला ने आकाश से अनेक पदार्थ मंगा दिये

श्री राजयोगी वंशीवाला वावा की सिद्धियों की ये चमत्कारिक घटनायें किसी से सुनी सुनाई नहीं हैं किन्तु स्वयं अपनी आंखों से देखी हुई हैं और आर्यसमाजियों को ले जाकर दिखाई हुई हैं।
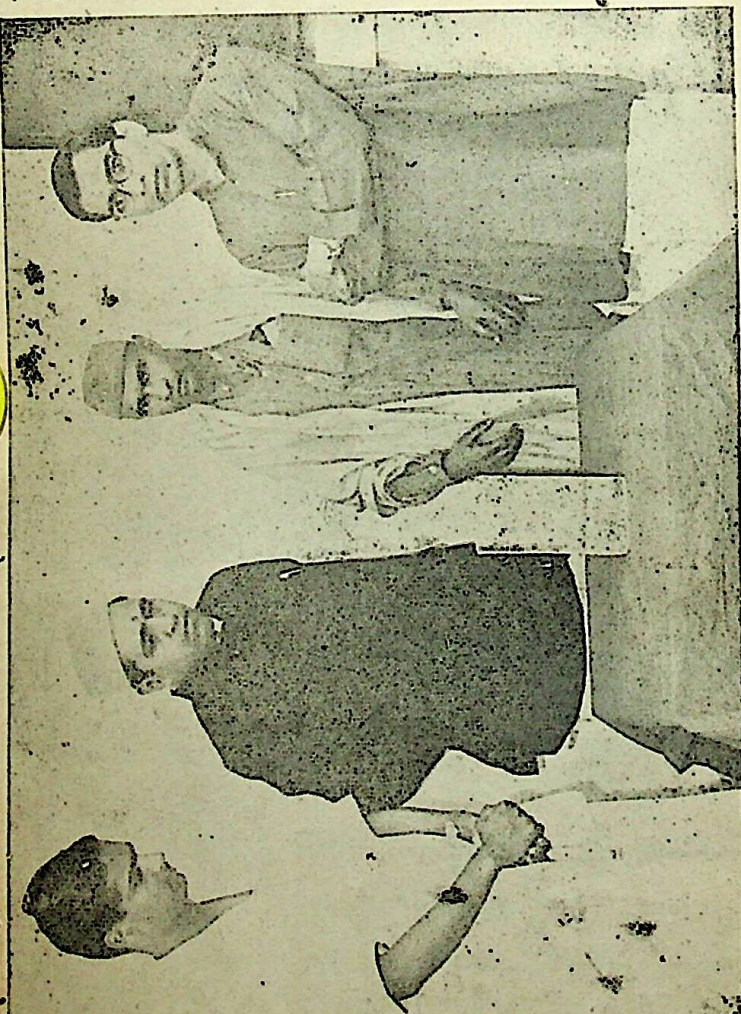
भक्त रामशरण दास जी अ० भा० हिन्दू महासभा के मंत्री श्री वी० जी० देशपांडे अ० भा० हिन्दू

शून्य अन्तरिक्ष से स्वादिष्ट मोदक

(७३) सन् १९५३ की वात है दिल्ली में सुना कि एक वगीची में एक सिद्ध महात्मा पधारे हैं कि जिनके पास इतनी बड़ी माला है जिस से कुवें से पानी खैंच लो। वे जो चाहे सो मंगा देते हैं। मैं अपने साथ ला० गणपतराय बजाज पिलखुवा वालों को लेकर आपके पास जा पहुंचा। दर्शन किये और वैठ गये। महात्मा जी उस समय नंगे वैठे हुये थे नीचे धोती मात्र थी। पहिले तो उन्होंने हमें खूब कीर्तन भजन गा गाकर सुनाये। वाद में हाथ ऊपर को किया तो एक दम ऊपर से हाथों में लड्डू आ गये जिसे आपने हमें और पास में वैठे सभी दर्शकों को दिया। मैंने तो खाया नहीं, पर और सब ने खाया तो वड़ा स्वादिष्ट वताया था।

अन्तरिक्ष से रुपया

(७४) झट से अपने हाथ दीवार की ओर किया तो रुपया आ गया जिसे एक दर्शक को देकर कहा इसे भुना कर चार पान लाओ। रुपया भुनाया गया पान आये जो कई जनों को दिये गये।

आर्यसमाजी को अन्तरिक्ष से पेठे की मिठाई दी

(७५) थोड़ी देर वाद आपने हाथ ऊपर को किया तो झट से हाथ में बड़े सुन्दर श्री नर्मदेश्वर और शालिग्राम आ गये हमने प्रार्थना की कि महाराज एक हमें दे दो। आपने हाथ ऊपर को किया तो बिलकुल सफेद नर्मदेश्वर की प्रतिमा आ गई। वह वड़ी थी उसे अंगुली के नीचे दवाया तो छोटी हो गई, जिसे उन्होंने हमें दे दिया जो आज भी हमारी पूजा में है। अव तो वड़ा आश्चर्य हुआ! हमने प्रार्थना की कि महाराज जी धर्म पर घोर विपत्ति आई हुई है धर्म की रक्षा करो। आपने झट से हाथ ऊपर को किया तो श्री राधाकृष्ण की पीतल की सुन्दर प्रतिमायें आ गईं जिन्हें दिखा कर आपने कहा धर्म की रक्षा यह

करेंगे और उन पर गुलाव के फूल चढ़ा कर वैठा दीं। थोड़ी देर वाद वे उठाई, ऊपर को कीं तो वे अदृश्य हो गईं और दूसरी सीताराम की प्रतिमा आ गयी उसे वैठा कर कहा वह राक्षसों को मारेंगे। कुछ देर पश्चात् वे भी भेज दीं और सिंहवाहिनी दुर्गा की प्रतिमा मंगा कर कहा—लो यह दुष्टों का खून पीयेंगी।

प्रतिमा को दबा बोतल बना डाला

(७६) आर्यसमाज वाजार सीताराम में कट्टर आर्यसमाजी ला० श्यामलाल जी रहते हैं, मैं उनके पास गया और उनसे जाकर कहा कि चलो हमारे साथ आपको एक महात्मा की सिद्धि के चमत्कार दिखायेंगे। जो वैठे २ जो चाहें मंगा लेते हैं। उन्होंने कहा 'यह सब वाजीगरी के खेल हैं मैं इनमें कोई विश्वास नहीं करता।' मैंने कहा यदि यह वास्तव में पाखण्डवाजी है, तो उस साधु का भंड फोड़ करना। मैं आपके साथ हूँ और यदि वात सत्य है तो सत्यार्थप्रकाश को मानना छोड़ देना। मेरे वहुत कहने पर वह मेरे साथ हो लिए और हम दोनों महात्मा जी के पास पहुंचे। महात्मा जी ने कुछ देर पश्चात् हाथ ऊपर को किया तो आपके हाथ में धड़ाम से पेठे की मिठाई का वहुत वड़ा टुकड़ा गिरा और उसकी विशेषता थी कि इधर तो जो पेठे की मिठाई होती है वह टुकड़े टुकड़े होते हैं पर यह एक वहुत लम्बा बड़ा टुकड़ा चासनी में पका हुआ था। हम ने और उन्होंने कभी जीवन भर ऐसी मिठाई नहीं देखी थी। उन्होंने तोड़ तोड़ कर हम को दी और फिर जो उन्होंने हाथ ऊपर को किया तो ऊपर से केले, संतरे, अंगूर, मिठाई आने लगी और वह हमें देने लगे जिससे महाशय जी के दोनों हाथ भर गये और विलकुल ताजी रसदार मिठाई के कारण हाथ चिपकने लगे। महाशय जी ने कहा—महाराज कागज दो। महाराज ने कहा अभी से ही, और लो। झट से आपने हाथ ऊपर को किया तो श्री राधाकृष्ण, सीताराम,

श्रीदुर्गा जी की पीतल की मूर्तियां आने लगीं और जिस मूर्ति को वह उठाते एकदम ऊपर जाकर अदृश्य हो जाती।

(७७) एक मूर्ति को दिखा कर आपने कहा कि बताओ यह किस की मूर्ति है ? महाशय श्यामलाल जी ने कहा कि यह सीताराम की मूर्ति है। आपने कहा कि नहीं यह तो बुड्डे की दवा है ऐसा कहते ही ज्यों ही हाथ घुमाया झट से वह मूर्ति एकदम दवा की शीशी के रूप में परिणत हो गई। उसपर बढ़िया चिकना कागज लगा हुआ था जिस पर अंग्रेजी में 'मेड इन इंग्लैन्ड' लिखा हुआ था जैसे कि अभी ताजी आई हो। देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गए और दांतों तले अंगुली दबाने लगे।*

ईश्वरीय सहायता के निदर्शन

उदयपुर की बिलकुल आश्चर्यजनक अद्भुत सत्य घटना

महाराणा फतहसिंह और मि० विलकिसन साहब रेजीडेंट ने प्रत्यक्ष क्या चमत्कार देखा ?

'कल्याण' (गोरखपुर) वर्ष २३ अङ्क २३ दिसम्बर १९४९ पृष्ठ १४७८ पर श्री अमरनाथ जी सत्संगी लिखते हैं—

टिप्पणी* ये बंसरी वाले बाबा जी आज भी जीवित हैं और भोपाल में सैक्रिटेरियट के पास भूमि लेकर वहाँ आश्रम बनाया हुआ है मार्च १९५८ में हिन्दु महासभा के जनरल सैक्रेटरी श्री वी. जी. देशपाण्डे आपके दर्शनों के लिये गये थे। आपने उन्हें भी एक नर्मदेश्वर शिवलिंग की प्रतिमा आशीर्वाद के रूप मे दी जो अब भी उनके पास सुरक्षित है। जो सज्जन इस विषय में तसल्ली करना चाहें वे देशपाण्डे जी से मिल कर या बाबा जी के दर्शन करके बखूबी कर सकते हैं।

(७८) बात है सन् १९२२ का। उस समय रियासत उदयपुर में मि० विलकिसन साहब रेजीडेंट और आबू में मि० कालोन एलियट् ए० जी० जी० थे। मेरे ससुर उदयपुर रेजीडेंसी में हेडक्लर्क थे। ये रहने वाले तो थे अलवर राज्य के, किन्तु मेरा विवाह उन्होंने उदयपुर से ही किया था।

आर० ई० ई० कालेज आगरा तीन महीने के लिये बन्द हो गया था, इस कारण गर्मी की छुट्टी बिताने के लिये मैं उदयपुर में चला गया। एक दिन संध्या समय मैं और मेरे ससुर बगीचे में बैठे हुए टहलने का कार्यक्रम बना रहे थे कि अचानक पंडित जी (मेरे ससुर) ने कहा कल प्रातःकाल एक आवश्यक मुकदमे का फैसला करने रेजीडेंट और ए० जी० जी० सियारवाँ गाँव जायेंगे। महाराणा साहब भी पास रहेंगे इच्छा हो तो तुम भी चल सकते हो। स्थान सुन्दर और आकर्षक है और जिस मामले का फैसला करना है वह विचित्र और पेचीदा है। मामले के विचित्र होने का तो मुझे विश्वास हो गया क्योंकि महाराणा फतहसिंह जैसे चतुर नरेश के लिये कोई मामला भी मुश्किल नहीं था। किन्तु इस मामले के लिए रेजीडेंट और ए० जी० जी० को खासतौर से बुलाया गया था। बात यह थी कि सियारवाँ-गाँव महाराज सज्जन सिंह ने ब्राह्मणों को माफी में दे रखा था और गाँव के ब्राह्मण सरकार को कोई लगान तो देते नहीं थे, ऊपर से १२००) रु० ब्रह्मभेंट के रूप में प्राप्त करते थे जिसे कि अब महाराणा फतहसिंह ने बन्द कर दिया था और गांव वालों पर वे जबरदस्ती लगान लगाना चाहते थे। इसी कारण सियारवां गाँव के ब्राह्मणों ने ए० जी० जी० से अपील की थी कि वे महाराणा को ऐसा करने से रोकें। यद्यपि कानूनी तौर से तो पोलिटिकल डिपार्टमेंट राज्य के आन्तरिक मामले में हस्तक्षेप नहीं कर सकता था परन्तु इस मामले में महाराणा साहब ने स्वयं आदेश दे दिया था। उन्हें विश्वास था कि गांव वालों के पास किसी प्रकार का लिखित

प्रमाण नहीं है, फलतः ए० जी० जी० का फैसला निश्चय ही राज्य के पक्ष में होगा। दूसरे दिन हम लोग प्रातःकाल ही सियारवां गांव के लिये चल पड़े। नाव से चलने पर तो यह गांव उदयपुर से केवल छः फलांग पड़ता है किन्तु हम लोग गाड़ियों से गये थे इसलिए साढ़े पांच मील की दूरी तै करनी थी क्योंकि सड़क सागर के पास से घूम कर जाती थी। हमें हौदी नामक स्थान पर उतरना पड़ा। यहाँ से डेढ़ मील तक पहाड़ी रास्ता पैदल चलना था। हौदी उदयपुर से चार मील पर एक अत्यन्त सुन्दर स्थान है जहां प्रतिदिन सन्ध्या को पांच बजे जङ्गली सूअरों को मकई डाली जाती थी और मेवाड़ के जङ्गली सूअर शाम को वहां एकत्रित हो जाते थे। अब पता नहीं राज्य की ओर से इन सूअरों को मकई डाली जाती है या नहीं। कुछ मोटे मोटे जङ्गली सूअर प्रदर्शनी के लिए एक मकान में वन्द भी किये हुये थे। यहाँ से चल कर लगभग दो घण्टे की यात्रा के वाद हम लोग सियारवां गांव पहुँचे ए० जी० जी० और महाराणा साहव पालकी में थे। इसलिये वे आराम से रहे पर हम लोग थकान का अनुभव कर रहे थे।

जहां पड़ाव डाला गया था वह अत्यन्त आकर्षक स्थान था। एक वहुत बड़ी वावली थी जिसके चारों तरफ किनारों पर दूर दूर तक संगमर्मर का फर्श विछा हुआ था। वहीं एक अत्यन्त पुरातन सघन वट वृक्ष वावली के एक कोने पर था जिसकी दाढ़ी बढ़ती हुई भूमि में प्रवेश कर गई थी और वह विशाल वृक्ष समस्त वावली के वाहर संगमर्मर के फर्श पर एक शानदार छत का काम दे रहा था। यह स्थान चारों तरफ से कुछ जगह छोड़ कर पहाड़ों और घने जङ्गलों से ढका हुआ था।

गांव सियारवां के ब्राह्मण एक फर्श पर बैठे थे और दूसरी तरफ हम लोगों के लिये मोढ़ों का प्रबन्ध था। सव पर एक दृष्टि डालने के वाद ए०जी०जी० मिस्टर कालोन एलियट ने गांव के मुखिया को अपने

सामने बुला कर कहा—तुम्हारे पास कोई ताम्रपत्र या लिखित प्रमाण हो तो उपस्थित करो। मुखिया बीस बाईस वर्ष का युवक था। वह कोई उत्तर न दे सका। दूसरा एक अधेड़ वयः का व्यक्ति सामने लाया गया। उसने वताया कि महाराज सज्जनसिंह ने जिस समय यह गाँव ब्राह्मणों को माफी में दिया था उस समय ताम्रपत्र पर उन्होंने हस्ताक्षर अवश्य किया था यह हम अपने पूर्वजों से सुनते आये हैं। किन्तु अव यह ताम्र-पत्र कहाँ या किसके पास है यह हमें विदित नहीं। अधेड़ व्यक्ति के इस कथन पर मुस्काते हुए महाराणा साहव बोल उठे—यदि ऐसा कोई भी ताम्रपत्र होता तो अवश्य ही सुरक्षित रक्खा जाता। ए. जी. जी. ने गांव के आदमियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुये कहा—यदि तुम लोग कोई लिखित प्रमाण उपस्थित नहीं कर सकते तो निर्णय महाराणा साहव के पक्ष में होगा।

गाँव के ब्राह्मण परस्पर एक दूसरे का मुंह ताकने लगे, किन्तु उसी समय एक वृद्ध ब्राह्मण लकड़ी के सहारे खड़ा हुआ और आंखें बन्द करके कुछ गुनगुनाने लगा। मैं मेवाड़ी भाषा से परिचित नहीं था इस कारण उस समय तो उसका अर्थ मेरी समझ में नहीं आया किन्तु वाद में विदित हुआ कि उसने कहा था कि दयामय प्रभो! यदि आज तक मेरे गांव के आदमियों ने कोई अनर्थ नहीं किया हो और सच्चे हृदय से मातृभूमि की सेवा की हो तो आज इस सङ्कट में आप हमारी सहायता करें।

जन-समुदाय वृद्ध की ओर देख रहा था कि अचानक वृक्ष पर से मनुष्य के वरावर कद का एक बन्दर बावली में कूद पड़ा। फलतः सबका ध्यान उस वृद्ध ब्राह्मण की ओर से हट कर वावली की ओर चला गया। पंद्रह सेकण्ड बाद बन्दर पानी से बाहर निकला और एक ताम्र-पत्र ए. जी. जी. के सामने रख कर वृक्ष पर चढ़ गया। ए० जी० जी० देवनागरी लिपि नहीं जानते थे, इस कारण उन्होंने वह पत्र दूसरे

आदमी को पढ़ने के लिये दिया । उसने पढ़ कर बताया कि यह महाराजा सज्जनसिंह का उस समय का दस्तावेज है जब कि उन्होंने ब्राह्मणों की भक्ति से प्रसन्न हो कर यह गांव उनको माफी में दिया था। उस ताम्रपत्र को सब ने बारी बारी से देखा और जब सब लोग देख चुके तब वही बन्दर वृक्ष से नीचे उतरा और पत्र हाथ से छीन कर पुनः बावली में कूद पड़ा और फिर वापस नहीं आया । सब चकित थे और ए० जी० जी० के कोई निर्णय देने के पूर्व ही महाराणा साहब ने खड़े हो कर घोषित कर दिया कि जब तक मेवाड़ सिंहासन पर राजपूत हैं तब तक यह गांव माफी में ब्राह्मणों के पास ही रहेगा और उन्हें १२००) रु० वार्षिक सरकारी कोष से पूर्ववत् मिलते रहेंगे ।

इस घटना पर सम्भव है कि आज के युवक विश्वास न करें. किन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि आज भी भगवान् के दरबार में सत्य और ईमानदारी का पूर्ण सम्मान है और अब भी वे सच्चे और ईमानदार लोगों की सहायता किया करते हैं ।

(दिल्ली के उर्दू पत्र 'रियासत' के गत ३१ अक्तूबर सन् १९४९ के अङ्क में प्रकाशित)

पुराणोक्त भगवत्प्रतिमाओं के बोलने रोने के निदर्शन

जब पुराणों में यह आता है कि भगवत्-प्रतिमायें तथा देव प्रतिमायें रोती हैं, हंसती हैं, बोलती हैं तो चार्वाक के चेले गप्प बताने लगते हैं । वे लोग जब गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी की चौपाई को पढ़ते हैं कि—

विनय प्रेमबस भई भवानी । खसि माल मूरति मुसुकानी ।

—आपे से बाहर होकर अंट संट बकने लगते हैं । लो सुनो मूर्तियों के अद्भुत चमत्कारों की सत्य घटनायें ।

प्रतिमा बोली सावधान भक्त !

'वीर अर्जुन' (देहली) १७-६-१९५७ में छपा है कि—

(७९) 'विराट् नगर (वैराट) यहां वैष्णव सम्प्रदाय के श्री केशव राय भगवान् के पञ्चायती मन्दिर में सभा मण्डप की टूट फूट सुधारते समय भगवान् श्रीकृष्ण की श्याम वर्ण की पाषाण प्रतिमा निकली। जीर्णोद्धार करने वाले शिल्पकार श्री गणपत राम जी अनुरागी का कथन है कि खोदते समय एक पत्थर को हथोड़े से तोड़ने का प्रयास करते हुए जब मैंने हथोड़ा तीन चार बार पत्थर पर मारा ही था उसके नीचे से 'सावधान भक्त' की अति बारीक आवाज आई। आवाज को सुनकर श्री अनुरागी जी बाहर आ गये और पुजारी जी एवं अन्य व्यक्तियों को सब कुछ सुनाया । जबकि धीरे धीरे उस स्थाने को खोद कर देखा गया तो उसमें श्री मुरलीमनोहर भगवान् की अति सुन्दर प्रतिमा निकली । प्रतिमा डेढ़ फुट लम्बी सर्वथा अखण्डित एवं अत्यन्त कलापूर्ण है । अनुमान है कि अत्याचारी औरङ्गजेब के युग में जब मूर्तियों पर संकट आया हुआ था तभी इस मूर्ति को किसी पुजारीने इस प्रकार छुपा दिया होगा और उसकी तात्कालिक मृत्यु हो जाने के कारण यह रहस्य छुपा का छुपा ही रह गया जिसे परिमाणतः ४०० वर्ष हो गये । जनता मूर्ति के दर्शनार्थ आ जा रही है और अब मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा की योजना बनाई जाएगी'

मेरी की मूर्ति की आंख से आंसू

'हिन्दुस्तान' (देहली) ता० १४-१२-१९५३ लिखा है कि—

(८०) 'साइराक्यूज (सिसली) १३ दिसम्बर । रोमन कैथोलिक

गिर्जे में अधिकृत रूप से उन आँसुओं का चमत्कार स्वीकार कर लिया है जो यात्रियों के कथनानुसार ईसा की माता कुमारी की आंख से गिरते हुए देखे गये थे। यह रोने वाली मूर्ति सिसली के एक साम्यवादी की गर्भवती पत्नी के सिरहाने टंगी हुई थी और मिट्टी की प्रतिमा थी। पत्नी का कहना है मि मैंने मूर्ति को रोते हुए देखा और आँसू मेरे माथे पर गिर रहे थे। यह आंसू चार दिन तक २६ अगस्त से १ सितम्बर तक गिरते रहे। हजारों दर्शनार्थियों का कहना है कि उन्होंने इस दृश्य को देखा है और निराश रोगियों का कहना है कि मूर्ति ने आश्चर्यजनक रूप से उन्हें स्वस्थ कर दिया। रोम तथा सिसली की राजधानी पालेर्मो में गिरजों की अनेक बैठकें हुईं, जिनमें बहुत से गवाहों के बयान सुने गये और शुक्रवार की रात को अन्तिम रूप से यह स्वीकार कर लिया कि ये आंसू दैवी थे। पालेर्मो के बड़े पादरी के कथनानुसार इन आँसुओं की रासायनिक परीक्षा की गई और वे वास्तविक पाए गये। मूर्ति के लिये एक विशेष गिरजा बनाने की बात तय हुई। ख्याल है कि एक दिन यह नया गिरजा पुर्तगाल की प्रतिमा के गिरजे के मुकाबले का यात्री-केन्द्र हो जायगा। खास बात यह है कि यह चमत्कार पोप द्वारा कुमारी मेरी की विशेष पूजा अर्चना के पर्व का उद्घाटन करने के केवल चार दिन बाद ही घटित हुआ।'

हनुमान् और भीम के निदर्शन

पिछले दिनों मेरठ में और २ नवम्बर सन १९५७ को दिल्ली में विश्वविख्यात योगीराज रामानुजी-सम्प्रदाय के संत श्री स्वामी देव-मूर्ति जी महाराज ने अपने योग का अद्भुत चमत्कार दिखाया, जिसे देखने जनता उमड़ पड़ी और आश्चर्यचकित हो गई। हमने मेरठ में स्वयं अपनी आँखों से यह अद्भुत चमत्कार देखे। आप लम्बा वैष्णव तिलक लगाते हैं और श्री हनुमान् जी महाराज की मूर्ति को हाथ में,

लिये स्टेज पर आते हैं और पहिले उनकी धूपदीप से पूजा कर फिर चमत्कार दिखाने प्रारम्भ करते हैं।

(८१) अपनी छाती पर दो दो हाथियों को खड़ा कर लेते हैं, लोहे के तसले को कागज की भान्ति फाड़ डालते हैं, चार चार मोटरों को एक साथ रोक लेते हैं और डेढ़ सौ मन की भारी गाड़ी को सिर के बालों से खैंच लेते हैं। नंगे पाँवों आग पर स्वयं चलते हैं और देखने वालोंको भी चलाते हैं और सौ नवयुवकों से अपने गले में फांसी लगवाते हैं। ३०० मन वजनी सड़क कूटने वाले इञ्जन को छाती पर चलाते हैं, ३०० मन के लदे हुए मोटर ट्रक को छाती पर खड़ा करके गेंद की तरह उछालते हैं और भी बड़े २ आश्चर्यजनक चमत्कार दिखाते हैं। रूस के मार्शल बुल्गानिन, निकेता क्रुश्चेव को

बुलगानिन भारतीय योगी के सामने हाथ जोड़े खड़ा है और चकित हो रहा है

भी जिस समय रोहतक में यह आश्चर्यजनक अद्भुत चमत्कार दिखाये थे तो उन्होंने आश्चर्यचकित होकर कहा—

'स्वामी जी के योग के चमत्कारों को अपनी आंखों से देखे विना विश्वास करना असम्भव है। क्या इन अद्भुत चमत्कारों देखकर भी पुराणों की वातों को गप्प वताया जाएगा।'

पूरे घोड़े को उठाकर रस्सा पार किया

'नवभारत टाइम्स' ८६ जनवरी सन् १९५५ पृष्ठ अन्तिम पर एक सचित्र विवरण छपा है जिसमें लिखा है कि—

(८२) फुटवाल स्टेडियम में शुक्रवार को दिखाये गये खेलों के समारोह में पंजाव का एक गूजर ज़ीवित्त घोड़े को पीठ पर लाद कर रस्सी को पार कर रहा है।

कहिये क्या अव भी भीम का हाथी को उठा लेना गप्प कहियेगा ?

पुराणोक्त भूतप्रेतों के प्रत्यक्ष निदर्शन

बिना सिर का भूत

'हिन्दुस्तान' (दिल्ली) ता० १४-८-१९५७ लिखता है कि—

(८३) लन्दन १३ अगस्त। 'वताया जाता है कि शाही वायु सेना के एक विमान चालक के सिर रहित भूत से स्टफोर्ड शायर में शाही हवाई अड्डे पर आतंक छाया हुआ है। वहुत से चौकीदार भी वहां जाने से घवड़ाते हैं। कुछ व्यक्तियों को छोड़ कर सभी का कहना है कि भूत एक विलिंगटन वमवर्षक विमान के चालक का है जो कि युद्ध के दौरान में उक्त स्थान पर गिर गया था। उक्त भूत से सम्बन्धित जो अजीव प्रकार की चीजें देखने में आई हैं वे इस प्रकार हैं—

कण्ट्रोल टावर में रोशनी कभी चमकती है और कभी नहीं चमकती। जहाज खड़े होने के स्थान पर रोशनी (बिजली) एक दम जले

उठती है। रात में कुत्ते उस स्थान से ६० गज परे ही रहते हैं। भूत का वेश विलकुल एक सैनिक का सा है, वह जूते भी पहनता है किन्तु उसका सिर नहीं है। उक्त विना सिर का भूत हवाई अड्डे से कण्ट्रोल टावर तक के वीच में ही आम तौर पर घूमता है। क्या यह मजाक हो सकता है, नहीं, क्योंकि ऐसा देखा गया है कि यदि इस प्रकार की वात में कोई मजाक हो तो कुत्तों के वाल खड़े नहीं होते परन्तु यहाँ पर कुत्तों के वाल खड़े होते देखे गये हैं।'

ब्रिटेन में भूत

'सन्मार्ग' (दिल्ली) २७ मई १९४६ लिखता है कि—

(८४) 'कहा जाता है कि इधर ब्रिटेन में भूतों ने वहुत जोर बाँधा है, युनाइटेड प्रेस अमरीका ने इसके कई समाचार भेजे हैं। कितने ही मकानों में विचित्र शव्द सुन पड़ते हैं। हाल ही में ब्रिटिश ब्राडकास्ट कम्पनी में सूचना निकाली थी कि जिस मकान में ऐसे शव्द सुन पड़ते हों वहां वह मैक्रोफोन लगा कर सब को उन शव्दों के सुनाने का प्रयत्न करेगी। इस पर कितने ही लोगों के यहाँ से मैक्रोफोन की मांग आई। हाल ही में पार्लियामेंट में भी भूतों पर वात छिड़ गई। स्वास्थ्य मन्त्री ने जितने मकान खाली पड़े हैं उनमें गृहहीनों को आवाद करने की मांग की थी। लन्दन का एक मकान कई वर्षों से खाली है पर उसमें कोई भी रहना नहीं चाहता क्योंकि उसके 'भुतहा' होने की प्रसिद्धि है। मकान के सम्वन्ध में प्रश्न किये जाने पर स्वास्थ्यमन्त्री ने उत्तर दिया कि मकान खाली नहीं आवाद है। लंन्दन के एक पत्र का कहना है कि कंजर्वेटिव सरकार के समय तो पुराने किलों और खण्डहरों में ही भूतों का निवास था पर जव से मजदूर सरकार हुई है ता साधारण घरों में भी भूतों का डेरा जम गया है।'

कहिये महाशयो, अव क्या कहते हो? अव तो वीसयीं सदी के तीर्थस्थान लन्दन में भी भूतों ने अड्डा जमा लिया। और सुनिये—

प्रेत लीला के शिकार पत्रकार

सन्मार्ग ता० २३-४-१९५६ में छपा है कि—

(८५) '(बम्बई डाक से) थाना उपनगर निवासी बम्बई के मराठी दैनिक लोकयान्य के उपसम्पादक श्री भड़कनकर को इधर प्रेतलीला का विचित्र अनुभव हुआ। पहिले आपके परिवार के लोगों को घर में अस्वाभाविक रूप से ताजे फूल मिलने लगे और इसके बाद वेणियों की वर्षा प्रतिदिन होने लगी। इसके बाद घर में इधर उधर अस्वाभाविक रूप से रुपये और नोटों का मिलना शुरू हुआ। यह घटना यहां तक बढ़ी कि चाय और दूध में तथा भोजन में भी दुवन्नी-चवन्नी आदि निकलने लगीं। इस प्रकार लगभग ८५) रु० प्राप्त हुये। आश्चर्य की बात यह है कि तीसरे दिन ये सब पैसे गायब हो गये और फिर जो नई समस्या सामने आयी उसके कारण घर में भोजन करना दूभर हो गया। अब भोजन पेय आदि सभी चीजों में से साबुन के टुकड़े निकलने लगे। फलतः कई दिन होटलों की शरण लेनी पड़ी। आश्चर्य यह था खूब चौकसी करने पर भी साबुन के टुकड़े भोजन में निकल ही आते थे। एक दिन कार्यालय से आकर आपने स्वतः भोजन बनाने का निर्णय किया। आश्चर्य था उनके भोजन बनाने पर साबुन के टुकड़े नहीं निकले। अब यह समस्या उत्पन्न है कि जब पत्रकार महोदय स्वयं भोजन बनाते हैं और साबुन निकलने पर भी भोजन करने का निश्चय व्यक्त करते है तब साबुन नहीं निकलता और स्त्री और पुत्री जब भोजन बनाती हैं तो चौकसी करने पर भी साबुन निकल पड़ता है।'

रोटियां और दूध के बर्तन आकाश में उड़ते हैं

हिन्दुस्तान १५ जनवरी सन् १९४४ में लिखा है कि—

(८६) इलाहाबाद १४ जनवरी। यहां पहुंचने वाली खबरों का कहना

है कि बहुत दिनों से हसनपुर गांव में विशेषकर मुस्लिम घरों में विचित्र घटनायें हो रही हैं। वताया जाता है कि बहुधा ग्रामीणों के चूल्हों से रोटियों को हवा में उड़ते व गायव होते देखा है। दूध के भरे हुये मिट्टी के वर्तन भी हवा में उड़ते हैं और खाली होकर जमीन पर गिर पड़ते हैं। कभी कभी आग लगती हुई भी देखी जाती है लेकिन ज्यों ही लोग आग बुझाने के लिये दौड़ते हैं तो वे आग लगी हुई नहीं पाते। कहा जाता है कि आजकल इस गांव पर भूतों ने चढ़ाई की हुई है और विचित्र घटनायें उन्हीं के कारण घट रही हैं।'

कपड़ों में अपने आप आग

'नवभारत टाइम्स' (दिल्ली) ३१-१-५७ में निकला है कि—

(८७) 'जोधपुर ३० जनवरी। आज के वैज्ञानिक युग में भले ही कोई विश्वास न करे परन्तु यह सत्य है कि एक निकट के गांव में एक अध्यापक के घर में उसके कपड़ों में अपने आप आग लग जाती है और कपड़े जलने लग जाते हैं। अध्यापक का कहना है कि अभी तक वह इसका कारण नहीं समझ सका। अध्यापक ने वताया कि इसके पहिले भी एक वार इसी प्रकार की घटना उसके साथ घटी थी। इस सम्बन्ध में अनेक झाड़ फूंक वालों से पूजा आदि कराने के वाद भी इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ा है।'

लड़के के पीछे भूतनी

'नवभारत टाइम्स' (दिल्ली) ता० ६-१०-५४ में लिखता है कि—

(८८) धनवाद ५ अक्तूबर। धनवाद के रोजगार दफ्तर के अधिकारी के लड़के को गत सात आठ दिन से बिना सोये ही रात गुजारनी पड़ रही है क्योंकि उसको रोज रात को एक भूतनी दिखाई देती है। इस लड़के का कहना है कि यह भूतनी उसका गला घोंटने का

प्रयत्न करती हैं। जब लड़का चिल्लाता है तो वह गायब हो जाती है। लड़के के माता पिता इस नित्य की घटना से परेशान हैं। लड़के के गले पर भूतनी की उंगलियों के निशान पड़ गये हैं।

रोम के ब्राडकास्टिंग कार्यालय में भूत

'वीर अर्जुन' (देहली) ता० २६-११-१९५६ में छपा है—

(८९ 'रोम २४ दिसम्बर। यहां इस सूचना पर रोम बड़ी गम्भीरता पूर्वक विचार विमर्श कर रहा है कि इटालियन ब्राडकास्टिग कार्पोरेशन का कार्यालय भूतग्रस्त हो गया है। यद्यपि काफी संख्या में गवाहियां यह कहती हैं कि उन्होंने देखा और सुना भी है। वहां पर विचार शक्ति के दो विद्यालय हैं जिनके बारे में कि यह भूत है। कुछ लोगों का यह विश्वास है कि यह नीरो है। कुछ लोगों का यह भी कथन है कि यह एक मेहमान था जिसकी मृत्यु १०० वर्ष पूर्व होटल में हो गई थी। अब यह होटल आई. बी. सी. के कार्यालय में तब्दील हो गया है। कहानी यूं है कि यह भूत प्रातः और सायं लगभग तीन बजे सीढ़ियों पर से उतर कर घूमता है एक पहरेदार, जिसने कि इस भूत को देखा और सुना है इससे इतना भयभीत हो गया है कि अब उसे दिन के काम में लगा दिया गया है। उक्त पहरेदारों को भूत की प्रभाविकता पर पूरा भरोसा होगया है।'

गरुड़ और काकभुशुण्ड के निदर्शन

एकादशी का व्रत रखने वाला कुत्ता

आर्यसमाजी नेता महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती भूतपूर्व महाशय खुशहालचन्द सम्पादक 'मिलाप' पिलखुवा पधारे थे और तीन दिन सनातनधर्म के प्लेटफार्म से उनके महत्वपूर्ण भाषण हुए थे। एक

दिन हमारे प्रतिनिधि भक्त रामशरणदास जी ने आपको 'जनसत्ता' का आश्चर्यजनक कटिंग दिखाया जिसमें था कि—

(६०) 'गोहाटी १७ मई। यहाँ के एक सरकारी अफसर के पास भोलू नाम का एक कुत्ता है जो गत छः माह से मास में तीन दिन उपवास रखता है। कुत्ते के मालिक का कहना है कि भोलू में कुछ अजीब शक्ति है कि वह प्रति पूर्णिमा, अमावस्या और एकादशी को खाना नहीं खाता। भोलू का वजन २४ पौंड उसकी ऊँचाई १८ ईञ्च और लम्वाई ३ फुट ४ इञ्च है। एक बार कुटुम्व के लोग इन उपवास के दिनों को भले ही भूल जायें पर यह कुत्ता नहीं भूलता।'

आपने यह पढ़ कर कहा कि भक्त जी, यह विल्कुल सत्य बात है झूठ नहीं है। कारण कि मैंने भी स्वयं अपनी आँखों से एक कुत्ते को हर एकादशी को व्रत रखते देखा है।

(६१) देहरादून में एक तपोवन आश्रम है जिसे श्री गुरुमुखसिंह जी ने वनवाया है। उसी तपोवन आश्रम में एक कुत्ता है, जो हर एकादशी के दिन व्रत, उपवास रखता है। वह कुत्ता कालापानी निवासी ठाकुर श्री रामसिंह जी का है। यदि एकादशी के दिन उस कुत्ते के सामने रोटी डाली जाती है तो वह रोटी खाता नहीं पीछे हट जाता है। और यदि उसे रोटी खाने को वाध्य किया जाता है तो मुंह से रोटी को उठा कर किसी वृक्ष के नीचे छुपा आता है। अगले दिन द्वादशी को वहाँ से निकाल कर खा लेता है। यह देखकर सभी को वड़ा आश्चर्य होता है। उसे द्वादशी के दिन का पता कैसे लग जाता है।

इस कुत्ते की यह भी एक विशेषता है कि यह भूल कर भी कभी किसी जानवर का मांस नहीं खाता। जब कभी उसके सामने मांस रखा जाता है तो वह मांस खाता नहीं वल्कि मुंह हटा लेता है। यह सब हमारी आंखों देखी सत्य घटना है, किसी की सुनाई हुई नहीं।''

(६२) मिलहुरा में अभी दो तीन वर्ष हुए देहरादून में रहने वाले

पंजाब के प्रो० रामदयाल जी पधारे थे जिनके पास ऐसा विलक्षण कुत्ता था कि जो अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी तीन भाषाओं का ज्ञाता था और जो करोड़ों का हिसाब—जोड़, घटाना क्षणमात्र में निकाल डालता था। यह कुत्ता प्रोफेसर साहब भक्त जी के मकान पर भी लाये थे।

राजपूत इन्टर कालेज के प्रिन्सिपल बाबू बैजनाथ सिंह एम. ए. की अध्यक्षता में हजारों लड़कों, प्रोफेसरों, मास्टरों के बीच और चण्डी विद्यालय, कन्या पाठशाला आदि में भी इस कुत्ते का चमत्कार दिखाया गया। हमने अपनी आँखों से देखा कि एक बोर्ड पर करोड़ों का हिसाब लिखा गया और कुत्ते से जोड़ने को कहा गया। बी. ए., एम. ए. मास्टर भी जहाँ हिसाब जोड़ने में लगे रहे और इतनी जल्दी जोड़ न लगा सके उस कुत्ते ने तत्क्षण जोड़ घटाना निकाल कर सब को आश्चर्य में डाल दिया। उसके सामने १ से लेकर १० तक की गिनती के हरफ काट कर अलग अलग रख दिये गये थे और बोर्ड पर गिनती में लिखा जैसे कि—

५६६४५
१०५५४
१२४३६
———

अब कुत्ता क्या करता था कि जैसे जोड़ में आया १५ तो वह ५ का अङ्क उठा कर ले आया और सब के सामने रख दिया और फिर हासिल जोड़ा एक और फिर अगली लाइन जोड़ी, जो आया उसको रख दिया इस प्रकार पूरा हिसाब निकाल दिया। तीन चार लड़कों के अंग्रेजी उर्दू, हिन्दी में नाम लिख लिख कर सब कागज एक जगह रख दिये गये और कुत्ते से कहा गया कि इनमें से अमुक लड़के के नाम का पर्चा पढ़ कर लाओ। कुत्ता गया और उसने मुंह से कागजों को इधर उधर किया और जिस नाम का पर्चा मंगाया गया था वही लाकर दे दिया।

कुत्ते से कहा गया कि यह जो रुपया नोट खरीज रखी हुई है इसमें से ७ रु० ५ आने ३ पाई लाओ। कुत्ता गया और मुंह में पाँच रु० का नोट दूसरा दो का नोट, एक चवन्नी, एक इकन्नी और एक पैसा उठा कर ले आया जिसे देख कर सभी दांतों तले अंगुली दबा गये और आश्चर्यचकित रह गए। प्रोफेसर श्री हनुमान् जी के उपासक हैं। यह हमने ही नहीं हजारों आदमियों ने देखा था क्या इसे भी गप्प मानोगे ?

कुंभकर्ण की नानी

'हिन्दुसर्वस्व' हरिद्वार २४-८-२५ में छपा है कि—

(६३) भारत में कुंभकर्ण की निद्रा अधिक से अधिक छः मास की प्रसिद्ध है। किन्तु विलायत में मिस कैंसिन नाम की एक स्त्री है कि जिसे निद्रा में कुंभकर्ण की नानी भी कह दिया जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं, क्योंकि वह एक निद्रा में १० मास तक सोई थी।

कुम्भकर्ण का ताऊ

'हिन्दुपञ्च' कलकत्ता ३-६-२६ में छपा है कि—

(६४) 'रायबरेली जिले के बरगधा नामक एक गाँव का अंगू नामक एक अहीर ४० वर्ष से एकदम सोता ही नहीं है। यह ७५ वर्ष का होने पर भी अभी हट्टा-कट्टा है और खेती गृहस्थी का काम खुद चलाता है। मालूम होता है, यही पिछले जन्म में कुंभकर्ण था। उस समय साल में छः महीने सो लेता था। पर इस जन्म में सोने के नाम कसम ही खा ली है ! जमाना भी अब तरक्की कर गया है।'

जल मानुषों के वंशधर

'भारत मित्र' कलकत्ता २५-१०-२५ में छपा है।

(६५) आजकल मेघना नदी और उसकी शाखा नदियों में एक

प्रकार का विचित्र जीव देखा जा रहा है। यह जीव देखने में मनुष्य के ही समान है और इसकी लम्बाई ३ फुट है। इसका मुखमण्डल, केश तथा वक्षःस्थल सभी स्त्रियों की तरह हैं किन्तु केश किंचित् कुञ्चित हैं। यह विशेष काला नहीं है परन्तु आकार छोटा है। इसका बायाँ हाथ ऊपर ही रहता है और दाहिना हाथ भी कमर से नीचे नहीं रहता। यह जल के भीतर भी चलता है और छाती तक जल में हवा की तरह चलता है। मेघना के किनारे पर अष्टग्राम नामक गांव है। वहां बहुसंख्यक लोगों ने इसे देखा और खिलाया भी था। इसकी भाषा समझ में नहीं आती, छोड़ने पर यह तुरन्त जल में चला गया। सुनते हैं नदी के कई स्थानों पर यह इस समय देखा जाता है।

पुराणोक्त रसायन सिद्धि के निदर्शन

पुराणों में जब किसी स्थान पर स्वर्णाभरणों स्वर्ण-पात्रों 'स्वर्ण-गृहों तथा अन्य स्वर्ण बहुमूल्य प्रदर्शित करने वाली वस्तुओं का वर्णन पढ़ते हैं तो लोग इसे अतिशयोक्ति समझ बैठते हैं। स्वर्णमयी लङ्का का वर्णन तो सर्वथा अतिरंजित ही समझा जाता है। वस्तुतः पुराणोक्त रसायन सिद्धि के अभाव में ही आज हमारे देश में ऐसी निर्धनता छा गई है कि हम ऐसे वर्णनों को काल्पनिक और अत्युक्तिपूर्ण मानने लगे हैं। रसायनविद्यापारंगत पुरुष कभी निर्धन नहीं रह सकता वह आवश्यतानुसार यथेच्छ स्वर्ण बना कर न केवल अपना, अपने पड़ोसियों अपितु सारे देश का भला कर सकता है। इस विषय में लक्ष्मी नारायण मन्दिर (बिरला मन्दिर) नई दिल्ली की यज्ञशाला में प्रस्तरपट्टिका पर खुदा हुआ निम्नलिखित उद्धरण बड़े काम का है। इससे ज्ञात होता है कि आज भी इस विद्या के जानकार व्यक्ति खोज करने पर यत्र-तत्र मिल सकते हैं।

महायोगो रसायनाचार्य तथा रसवैद्य सिद्ध नागार्जुन
सिद्धे रसे करिष्यामि निर्दारिद्रयमिदं जगत् ।

(६६) जिन्होंने प्राचीन आर्य रसायन शास्त्र के अनेक गुप्त रहस्यों को प्रत्यक्ष करते हुए कहा था कि पारद के द्वारा सुवर्ण बनाने की रसायन विद्या जानने पर कोई भी मनुष्य दरिद्र नहीं रह सकेगा।

यद्यपि रसायन विद्या का यह रहस्य इस वर्तमान समय में लुप्त प्रायः हो गया है। किन्तु इस समय भी उक्त विद्या के जानने वाले भारत में कोई कोई हैं। एक उदाहरण नीचे दिया जाता है।

विक्रमी संवत् १९९९ चैत्र मास में ऋषिकेश में पञ्जाब निवासी श्रीकृष्णपाल शर्मा रसवैद्य शास्त्री ने पारद से सुवर्ण बनाने की इस क्रिया को प्रत्यक्ष कर दिखा दिया। दर्शकों में उस समय महात्मा गांधी के मन्त्री श्री महादेव देसाई, श्री गो० गणेशदत्त तथा श्री जुगलकिशोर बिड़ला थे। जिनकी उपस्थिति में २०० तोला (२॥ सेर) पारद में १ तोला अन्य औषधी (चूर्ण) मिला कर अग्नि में रखने से आध घण्टा में समूचा पारद सुवर्ण बन कर जम गया। इस प्रकार कुल बना हुआ १८ सेर सोना जो अनुमान पचहत्तर सहस्र रुपये मूल्य का था, दान करने के लिये उन लोगों के हाथ में उसी समय दे दिया गया।

आर्य विद्या के गौरव को प्रकट करने के लिये इस ऐतिहासिक घटना का उल्लेख किया गया है।

पुनश्च—

ज्येष्ठ शुक्ला १ संवत् १९९९ ता० २७ मई १९४१ ई० को बिरला हाऊस नई दिल्ली में श्री पं० कृष्णपाल शर्मा ने हम लोगों के सामने १ तो० पारे से लगभग ११ तोला सोना बनाया था। पारा १ रीठे के अन्दर डलवाया। उसमें १ जड़ी बूटी का सफेद चूर्ण और दूसरा पीला चूर्ण जो शायद ही वजन में १ या १॥ रत्ती होगा पारे में डाले गये। रीठे को गीली मिट्टी से बन्द कर दिया गया। और रीठे को मिट्टी

के दियों के सम्पुट में वन्द करके अग्नि पर रखवा दिया। लगभग तीन घण्ठों तक पंखों से आग को धोंक कर तेज कराया गया। जब कोयले जल कर राख होने लगे तब उसे पानी में छुड़वाया। दियों के सम्पुट के अन्दर से सोना वन कर निकल आया। तोलने पर कोई २-२ रत्ती कम १ तोला निकला। विलकुल खरा था। इस क्रिया के अन्दर क्या रहस्य था। वह दोनों चूर्ण क्या थे? यह हमें मालूम न हो सका। पण्डित कृष्णपाल इस सारी क्रिया के कराते समय हमसे १०-१५ फुट की दूरी पर खड़े रहे। उस समय श्री अमृतलाल वि० ठक्कर (प्रधान मंत्री आ० भा० हरिजन सेवक संघ) श्री गोस्वामी गणेशदत्त जी लाहौर विरला मिल दिल्ली के सेक्रेटरी श्री सीताराम जी खेमका, चीफ इञ्जीनियर श्री विल्सन और श्री वियोगीहरि उपस्थित थे। हम सबकी यह क्रिया देख कर आश्चर्य हुआ। श्रीमान् जुगलकिशोर बिरला ने वह क्रिया कृपा कर हम लोगों को दिखलाई।

मार्गशीर्ष कृष्ण ५ सं० २००० दिल्ली—

१—ह० अमृतलाल वि० ठक्कर २—सीताराम खेमका

३—वियोगी हरि—

स्वर्गीय पं० कृष्णपाल शर्मा रसवैद्य शास्त्री को यह विद्या १ साधु ने बताई थी, किन्तु उनकी दृष्टि में सुपात्र व्यक्ति न मिलने के कारण उन्होंने यह विद्या किसी को भी न बताई।'

इस विषय में हमने श्री जुगलकिशोर जी बिड़ला को पत्र लिखा था उसके उत्तर में हमें हरिजन आश्रम, साबर मती के अधिकारी श्री नरहरि जी का नीचे लिखा पत्र उन की ओर से मिला है जिस को पढ़ने पर इस घटना को सचाई के बारे में कोई सन्देह नहीं रह जाता यथा—

હરિજન આશ્રમ
સાબરમતી તા. ૨૦-૧૧-૫૦

પ્રિય શ્રી. ઘનશ્યામદાસજી,

આપને પૂછવાયા થા કિ મહાદેવભાઈકી ડાયરીમેં પારા સે સોના બનાનેકા ઋષિકેશમેં ઉન્હોંને દેખાથા ઉસકે બારે મેં કુછ લિખા હુઆ હૈ ક્યા? ડાયરી તો અબતક મૈં નહીં દેખ પાયા હૂં લેકિન તા. ૧૨-૬-૪૨ કા ઋષિકેશ સે મહાદેવભાઈકા લિખા હુઆ એક પોસ્ટકાર્ડમેં નીચે લિખા ઉલ્લેખ હૈ :

"પછી પારામાંથી સોનું બનાવનારને જોયા અને તેની ક્રિયા જોઈ. ક્રિયા તો સીધી અને સાદી છે એમાં કાંઈ ગૂઢ નથી. માત્ર મૂળ જે ઔષધિ કે જે રસાયણ છે તે ગૂઢ છે. સોનું તો કુંદન જેવું બને છે." --

આપ કુશલ હોંગે.

આપકા

નરહરિ

अर्थात्-महादेव देसाई अपनी डायरी में लिखते हैं:—

"वाद में पारे में से सोना वनाने वाले को देखा और उसकी क्रिया देखी। क्रिया तो सीधी और सादी है उसमें कोई गूढ़ नहीं है। केवल असल वह दवाई या वह रसायण है वह गूढ़ है। सोना तो कुन्दन जैसा वनता है"

ये आज भी विद्यमान हैं
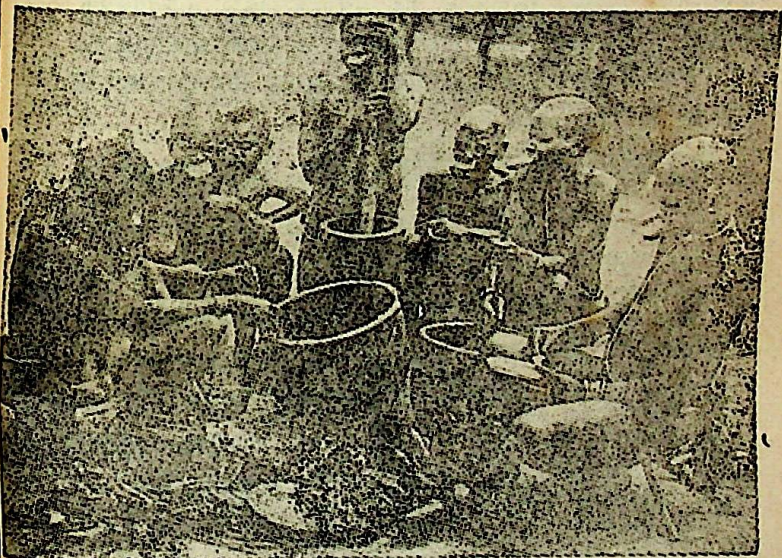
(९७) पुराणों में नर-माँसाहारी नग्न घूमने वाले भूत, प्रेत, पिशाच राक्षस और उनकी विचित्र आकृतियों का वर्णन आता है। साधारण मनुष्य इसे केवल परिहासात्मक वर्णन समझ लेते हैं। खास कर शङ्कर भगवान् के बरातियों का तादृश वर्णन तो आलङ्कारिक अत्युक्ति ही समझा जाता है परन्तु वास्तव में इस प्रकार का वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण और केवल परिहासात्मक कोटि के ही नहीं होते किन्तु उनमें कुछ तथ्य भी होता है। यदि हम युगण्डा (अफरीका) के जङ्गली हबशियों का प्रस्तुत चित्र उपस्थित किये विना यह कहते कि भारतादि देशों में जैसे स्त्रियाँ नाक और कान में छेद करके आभूभण पहनती हैं अफरीका में इसी प्रकार हबसी महिलायें अपने होठों में चार इञ्च से भी ज्यादा

चौड़ा छेद करके उसमें सौन्दर्य वृद्धि के लिए लकड़ी का खूंटा सा ठोक लेती हैं—तो अधिकाँश सज्जन हमारी इस उक्ति को अविश्वसनीय मानते परन्तु प्रत्यक्ष चित्र देख कर इस अभूतपूर्व सौन्दर्यवर्धक अलङ्करण पर विश्वास किया जा सकता है । इनकी आकृतियों की तुलना लंका की अशोकवाटिका में सीता की रक्षा में नियुक्त स्त्रियों से कीजिए, कितना साम्य है ।

११ फुट लम्बे हाथी दांत, तो हाथी की लम्बाई ?

(९८) सामनेके चित्र में अफरीका के केनिया प्रान्त के तीन हवशी हाथी के ११ फुट लम्वे तीन विशाल दाँत लेकर खड़े दिखाई दे रहे हैं । इन दाँतों की लम्वाई मनुष्य के शरीर से दुगुनी है यह स्पष्ट है । जिन हाथियों के यह दांत हैं उनकी शरीर की लम्बाई और चौड़ाई का अनुमान पाठक स्वयं लगा सकते है । अफ्रीका के घने जङ्गलों में ऐसे विशालकाय हाथी बहुतायत से मिलते हैं । पुराणों में हाथी सिंह आदि अन्य पशुओं की शारीरिक लंबाई चौड़ाई का वर्णन पढ़ कर और उसका साधारण हाथियों से सामञ्जस्य न वैठते देख कर हम उन वर्णनों को अतिरंजित कह वैठते हैं परन्तु इस विशाल पृथ्वीतल का परिपूर्ण रहस्य जाने विना—जो कि जान सकना असम्भव है—किसी वस्तु को असत्य ठहरानी मनुष्य की अल्पज्ञता का निदर्शन नहीं तो क्या है ?

हिमालय में अनेक महात्मा

(९९) विख्यात आर्यसमाजी नेता आनन्द स्वामी सरस्वती सम्पादक 'मिलाप' कैलाश मानसरोवर की यात्रा से लौटे तो पिलखुवा में अपने भाषण में आपने कहा कि तीर्थयात्रा करने से मन को अनुपम शान्ति मिलती है और समाधि का सुख प्राप्त होता है।

मैंने वहाँ पर एक बड़ा ही अद्भुत दिव्य स्थान भी देखा कि जहाँ पर सारा पहाड़ तो बरफ से जमा हुआ है और वहीं पर चारों ओर बरफ के बीच में एक ऐसा स्थान है कि जहां पर कुछ स्थान में बिल्कुल ही बरफ नहीं है यह वही स्थान है कि जहां पर श्री शिवजी महाराज ने श्री पार्वती जी महारानी को बैठ कर अमर कथा सुनाई थी।

वहां पर बैठते ही मेरा मन एक दम एकाग्र हो गया और एक प्रकार की समाधि सी लगने लगी जिससे मैंने उस स्थान की दिव्य शक्ति का अनुभव किया।

आसनोत्थान सिद्धि प्राप्त योगी

(१००) योगी श्री स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज मानसरोवर में २० वर्ष से रहते हैं। जब उनके दर्शन करने उनकी कुटिया में घुसा तो मैंने देखा कि यह तो मेरे पहिले देखे हुए पूर्व परिचित से मालूम पड़ते हैं। मैंने एकदम कहा 'सोमयाजी! सोमयाजी'। वह भी मेरी ओर देखने लगे। २० वर्ष पहिले जब वह लाहौर में रहते थे तब उस समय कुछ दिन तक मेरे पास में रहे थे। उस वक्त वे राजनीति में भाग लिया करते थे। मैंने जब उन्हें इस बात का स्मरण कराया तो उन्हें भी याद आ गया और उहोंने मुझे बताया कि जब मैंने आंखों देखा कि राजनीति में भाग लेने वाले प्रायः सभी नेताओं के चरित्र भ्रष्ट हैं तो मेरे मन में बड़ी ग्लानि हुई और मैं एकदम उनसे हट कर यहाँ चला आया और

योगाभ्यास करने लगा हूं। मैंने पूछा कि योग में आपकी कहाँ तक गति है ? तो उन्होंने मुझे दिखाया। प्राणायाम द्वारा लम्बे लम्बे स्वास लिए और पेट छाती, टांग बांह, सिर सभी स्वास द्वारा फुटवाल की तरह फुला लिये और एक दम बैंठे बैंठे उनका आसन पृथ्वी से ऊपर उठता गया और छत तक लग गया और फिर नीचे आ गया। यह योग का अद्भुत चमत्कार मैंने अपनी आँखों देखा।

अदृश्य हो जाने वाला योगी

(१०१) मुझे यात्रा में लौटती बार एक दूसरे सिद्ध योगी मिले। संध्या का समय था और बरफ खूब पड़ रही थी। सब साथी अपने तम्बुओं में बैंठें हुये थे। मैं अपने तम्बू से बाहर निकला और मन में कहने लगा कि सुना करते थे कि कैलाश में बड़े २ सिद्ध योगी रहते हैं पर यहां हमें तो कोई मिला नहीं। इतने में मैं क्या देखता हूं कि एकदम एक योगी प्रगट हुये और मेरे सामने खड़े हो गये। इनके सारे शरीर पर भस्म लगी हुई थी और आप बड़े ही सुन्दर प्रतीत होते थे। मैंने नमस्कार किया तो उन्होंने मुझे अपनी छाती से अपने हृदय से लगा लिया और उन्होंने मुझ से कहा कि तुम जो कहते थे कि यहाँ पर कोई योगी नहीं मिलते सो मिले कहां से ? योगी की कोई खोज भी तो नहीं करता ? इतने में मैंने देखा कि मेरे देखते ही देखते वे एकदम अदृश्य हो गये। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ ? मुझे लगा कि कहीं यह मैंने स्वप्न तो नहीं देखा ? मैंने अपने तम्बू में आकर टार्च जला कर रोशनी करके देखा तो सचमुच मुरे कपड़ों पर योगी के शरीर की भस्म लगी हुई थी जिससे मुझे पूरा पूरा निश्चय हो गया कि यह स्वप्न नहीं था यह बिल्कुल सत्य घटना थी।

परचित्तज्ञाता योगी

(१०२) दूसरे दिन मैंने अपने गाइड शीशखम्भा जी से कहा कि यहां

कोई योगी हो तो दर्शन कराओ। उसने कहा कि महाराज एक योगी तो है परन्तु जो उसके पास जाता है उसे मार कर खा जाता है। मैंने कहा भले ही मुझे खा जायें पर तुम हमें उनका दर्शन अवश्य ही कराओ। उसने कहा कि महाराज, मेरी हिम्मत नहीं कि मैं वहाँ पर जाऊँ, वह मुझे जाते ही खा जायगा। मैंने कहा कि अच्छा तुम मुझे वहाँ का रास्ता बताओ मैं स्वयं वहाँ पर चला जाऊँगा। वह बहुत मना करता रहा और अन्त में मेरे बार बार आग्रह करने पर वह कुछ दूरी से ही रास्ता बताने के लिये तैयार हो गया। मेरे साथ वह कुछ दूर चला और बोला कि महाराज वह यदि तुम्हें खा गया तो हम जिम्मेवार नहीं हैं। नीचे की ओर एक इस प्रकार का पत्थर आयगा उसके पास एक और पत्थर है उसे हटा देना बस उसी गुफा के अन्दर योगी रहता है। ऐसा बता कर गाइड पीछे हट गया। मैं धीरे धीरे वहाँ पर पहुंच गया। मैंने जाकर वह पत्थर हटाया और देखा तो वह रात्री को दर्शन देने वाले योगी भस्म रमाये बैठे हुये हैं। उन्होंने बड़े प्रेम से मुझे अन्दर अपनी गुफा में बुला लिया। अब तो मेरी उनसे खूब बातें हुईं। मैंने उनसे पूछा कि महाराज, क्या यह बात सत्य है कि आप से जो कोई मिलने आता है आप उसे खा जाते हैं? उत्तर में उन्होंने मुझे हँसते हुए कहा कि क्या मैं राक्षस हूं कि जो मनुष्य को खा जाता हूं? कोई भी मनुष्य व्यर्थ हमारे पास न आये इसीलिये यह डर दिखाया हुआ है और कोई बात नहीं है।

योगी ने वहां पर बैठे २ हम से कहा कि अच्छा अब तुम जाओ तुम्हें तुम्हारे साथी बहुत याद कर रहे हैं और तुम्हारे न जाने के कारण बड़ी चिन्ता में हैं। मैंने कहा कि महाराज, आपको कैसे मालूम हुआ आप तो यहां पर बैठे हुए हैं। उन्होंने कहा कि मुझे यह कैसे मालूम पड़ गया था कि रात्रि में जब तुम ने मन ही मन कहा था कि यहां पर कोई योगी नहीं मिले। मैंने उसी समय तत्काल प्रकट होकर दर्शन दिये थे? हमें भूत, भविष्य, वर्तमान सब का ज्ञान है। हमें अमरीका में

इङ्गलैण्ड में, रूस में, हिन्दुस्थान में क्या २ हो रहा है इसका भी सव पता है ? मैं उन्हें नमस्कार करके अपने स्थान पर आया तो आकर मैंने देखा कि मेरे साथी वास्तव में मेरे कारण वड़े ही घवड़ाये हुये हैं और वड़े ही चिन्तित हैं। मुझे जिन्दा वापिस आया हुआ देखकर वह सव वड़े ही प्रसन्न हुये। मैंने उन योगियों से भेंट कर अपने जन्म को सफल माना।

जीवात्मा का दर्शन कराने वाला लामा

(१०३) मैंने वहाँ पर वहुत से वौद्ध तामसिक सिद्धि वाले साधु भी देखे कि जो कच्चा मांस तक खा जाते हैं पर उन्हें तान्त्रिक सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। मैं एक वहुत वड़े वौद्ध लामा योगी के दर्शनार्थ गया। वह न तो हमारी भाषा जानते हैं और न हम ही उनकी। एक दुभाषिया बुलाया गया। इस प्रकार उनकी हमारी खूव वातें हुईं। हम ने जव उनसे कुछ योग के सम्वन्ध में गुप्त वातें पूछीं तो उस योगी ने कहा कि यह दुभाषिया अनधिकारी है इसके सामने यह वातें नहीं वताई जा सकती इसलिये इसे हमारे सामने से हटा दो। हमने उसे वहाँ से हटा दिया। और फिर उनकी हमारी यौगिक भाषा में खूव वातें होती रहीं। उन्होंने प्राणायाम द्वारा अपने शरीर और छाती को फूलाया और हृदय स्थान के पास छमकती जलती मणि के रूप में अंगूठे के वरावर जीवात्मा का प्रत्यक्ष दर्शन कराया जिसका दर्शन करके वड़ा ही आनन्द प्राप्त हुआ।

बिना छुवे रामनाम की छाप

गवर्नर कन्हैयालाल माणिकलाल मुँशी का चमत्कारिक वक्तव्य

मैं सिद्धियों में क्यों विश्वास करने लगा ?

'हिन्दुस्तान' (दिल्ली) ता० १३ फरवरी १९५५ पृष्ठ ९-१०

(१०४) गोरखपुर में श्रीगोरख नाथ मन्दिर में मैंने यज्ञाग्नि के चारों

ओर कुछ हठयोगियों को बैठे देखा। मेरी इच्छा थी कि मैं उनसे बात कर पाता क्योंकि मेरा विश्वास है कि ऐसे योगी विद्यमान हैं जिन्हें अति तान्त्रिक सिद्धियाँ प्राप्त हैं। कुछ भी क्यों न हो एक घुमक्कड़ कनपटे बावा ने ही सर्व प्रथम एक बार चमत्कार दिखा कर मेरी सन्देहात्मक वृत्ति को दूर कर दिया था। सन् १६१८ से १६२१ के बीच की बात है कि सांझ के समय मुकद्दमों के कागज निपटा कर मैं अपने कमरे में बैठा पढ़ रहा था उसी समय एक कनपटा नाथ योगी मेरे दरवाजे पर आया और दस रुपये का नोट माँगने लगा। मुझे बहुत ही गुस्सा आया और मैंने चपरासी को पुकार कर कहा कि इस बाबा को चले जाने को कह दो। यह भीख मांगने की जगह नहीं है। मैंने जोर से कहा—चले जाओ !

वह वृद्ध निर्द्वन्द्व भाव से द्वार के सामने खड़ा रहा। बोला 'बेटे राम जी की तुम पर कृपा है।' मैं फिर चीखा पर वह मुस्कराकर खड़ा रहा।

'मुझे दस रुपये दे दो। अपने हाथ पर देखो। राम जी तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं। लाओ मुझे दस रुपये दे दो।'

उत्सुकतावश मैंने हाथ उठा कर देखे। मेरे बाईं हथेली पर देवनागरी में काले अक्षरों में लिखा था 'श्रीराम'। मैं स्तब्ध रह गया। वह व्यक्ति मुझसे आठ फीट की दूरी पर था और जहां मैं बैठा था वहाँ से वह इतनी दूर नहीं था कि मुझे छूआ तक जा सके।

मैंने अपना बटुआ निकाला, जहां तक मुझे स्मरण है उसमें २५ रुपये थे मैंने वे सब के सब चपरासी को दिये कि वह इस साधु को दे दे। साधु ने वह राशि लेकर मुझे आशीर्वाद दिया और चला गया। मैंने अपनी आंखें मलीं। मुझे सम्मोहित करने का प्रश्न ही नहीं उठता था क्योंकि उस कालिख को साफ करने के लिये मुझे साबुन से हाथ धोने पड़े थे। ये वे प्रारम्भिक दिन थे जब कि मैंने यौगिक सिद्धि को मूर्त रूप में देखा था। कुछ भी हो यह एक ऐसी घटना थी कि जिसमें यौगिक शक्तियों के बारे मे मेरा विश्वास जम गया। मैंने और भी बहुत से जीवन में चमत्कार देखे हैं जो फिर कभी बताऊँगा।

१४ वर्षीय बालक की ५ इंच लंबी पूँछ

जगदलपुर, एक जनवरी १९६९ (प्रे. ट्र.)। यहां पर प्राप्त सूचनाओं के अनुसार एक १४ वर्षीय बालक के पृष्ठ भाग में एक पूंछनुमा वस्तु का विकास हो रहा है जिसने डाक्टरी क्षेत्रों में काफी दिलचस्पी पैदा कर दी है। बताया जाता है कि इस बालक के जन्म से ही यह अंग वर्तमान था।

यह लड़का बस्तर के दक्षिण में भोपालपतनम तहसील का है तथा उसका नाम हनुमैया है। जन्म के समय उसकी पूंछ एक इंच लम्बी थी, जो धीरे धीरे बढ़ती हुई अब ४.५ इंच लम्बी हो गई है।

बस्तर के सिविल सर्जन डा० ए० सी० गौड़ ने महारानी हस्पताल में इस बालक की परीक्षा की है और बताया कि बालक का सामान्य रूप से विकास हो रहा है। डाक्टर के अनुसार यह पुंछनुमा अंग रीढ़ की हड्डी के अन्त में, एक इंच ऊपर है।

पुनश्च—नवांशहर (पंजाब) में इसी प्रकार एक पूंछ वाला युवक हमने खुद अपनी आँखों देखा है। यह लड़का उस वक्त दसवीं कक्षा में पढ़ता था। ब्राह्मण बालक था इसके २० इंच लम्बी पूंछ थी जिसे वह अपनी कटि के चारों ओर लपेटे रखता था। बचपन में इसके घर वालों ने पूंछ पर के बाल साफ कर दिये थे तो बालक बीमार पड़ गया और बड़ी कठिनता से अच्छा हो सका।

तमाशाई बनने से बचने के लिये लड़के ने हमें उस पूंछ का चित्र नहीं लेने दिया।
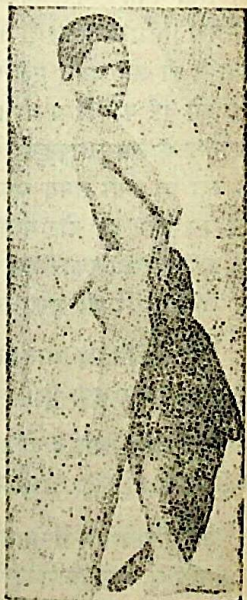
दोहरे अंगोंवाले विचित्र बच्चे

अप्रैल में, कासरूर जिले के रामपुर गाँव में एक चार हाथ और चार पैरों वाला बच्चा पैदा हुआ। जन सामान्य ही नहीं, डाक्टरों के लिये भी यह एक अजूबा था। वह बच्चा अभी जीवित है और डाक्टर उसकी शरीर-रचना का अध्ययन करके उसके अतिरिक्त हाथ पैरों को अलग करने का प्रयास कर रहे हैं।

अक्तूवर, ६९ में २४ परगना जिले (पश्चिम बंगाल) के एक छोटे से गाँव में भी, इसी तरह के दो सिर, चार हाथ और चार पैर वाली बच्ची का जन्म हुआ था। हाल ही में प्राप्त समाचार के अनुसार यह बच्ची अभी भी जीवित है और उसके घर वाले जगह-जगह घूम कर उसका प्रदर्शन करते हैं और दर्शकों से पैसा लेते हैं। इस बच्ची के एक सिर से रोने की आवाज आती है और दूसरे से हंसने की। यह समाचार हमें २४ परगना के श्री विहारी साह ने दिया है और साथ ही बच्ची का चित्र भी भेजा है, जो यहाँ प्रस्तुत है।—धर्मयुग ७ जून ७०

एक ग्रामीण महिला का चमत्कार

सन् १९६८ की बात है। महाराष्ट्र प्रान्त के धुलिया जिले के मसावद नामक ग्राम में यज्ञ और सनातनधर्म सम्मेलन हो रहा था जिस में अनेक महात्मा और विद्वानों के अतिरिक्त पूज्य करपात्री जी महाराज तथा शास्त्रार्थ पञ्चानन पं० प्रेमाचार्य शास्त्री सहित हम भी गये हुये थे। उत्सव में देहाती जनता बहुत आती थी। उसी क्षेत्र की एक कृषक लुवाणा जाति की महिला स्वामी करपात्री जी महाराज के दर्शनार्थ आई तो वह अपने दोनों हाथों को जोड़ कर ज्यों २ मलने लगी तो उसके हाथों के बीच से दानेदार चीनी और रोली झड़ने लगी।

पूज्य स्वामी जी यह देखकर चकित रह गए। महिला दर्शन करके चली गई परन्तु मिलने पर जब यह घटना महाराज ने हमें बतलाई तो हम स्वयं देखने को उत्कण्ठित हुए। महाराज की मोटर द्वारा वहाँ पहुँचे जहां वह देवी अपने परिचित सम्बन्धियों के यहाँ ठहरी हुई थी। घर वालों ने अपना सौभाग्य समझा। सब लोगों ने हमारा स्वागत किया। वह देवी आटा गूंध रही थी, हाथ धो कर झटपट आई और प्रणाम करके बैठ गई। महारथीजी ने चीनी रोली वाला चमत्कार पुनः दिखाने को कहा। वह सीधी सादी ग्राणीण स्त्री एक बार तो कुछ लज्जित सी हुई परन्तु पुनः हाथ जोड़ कर बैठ गई। एक कांसी की थाली हाथों के नीचे रक्खी गई। देवी में कुछ आवेश सा हुआ और वह जोर जोर से कुछ ऊंचे स्वर में बुदबुदाने लगी। हम उसके शब्दों को तो नहीं समझ सके पर थोड़ी देर बाद हाथों से चीनी और रोली झड़ने लगी।

हमने कहा कि ये दोनों मिली जुली वस्तुवें किसी उपयोग में नहीं आ सकतीं। यदि पृथक् २ झड़ें तो बहुत अच्छा हो। तत्काल केवल चीनी झड़ने लगी और जब चीनी थाली में से निकाल ली तो फिर

केवल रोंली झड़ने लगी। अन्यून तीन चार तोले रोली हम ने पुड़िया में बांध ली जो कई दिन तक तिलक के मध्य में श्री की भांति प्रयुक्त हुई। उसका ही कुछ अंश एक शीशी में भर कर पिलखुवा निवासी श्री भक्त रामशरणदास जी को उनके संग्रहालय में सुरक्षित रखने के लिए प्रदान किया गया। जो अन्यान्य अनेक चमत्कारिक वस्तुओं की भांति भक्त जी के यहाँ अब भी सुरक्षित है।

यह देवी सर्वथा अपठित एक ग्राम्य किसान महिला है। छल कपट और प्रपञ्च का इस में कोई प्रश्न ही नहीं है, कोई दिव्य शक्ति उसमें प्रविष्ट होकर यह चमत्कार दिखाती है, ऐसा हमारा अनुभव है।

तान्त्रिक परम्परा जीवित है

युवक के शरीर से सुइयां निकलीं

'नवभारत टाइम्स' (दिल्ली ता० ४ मार्च सन् १९५४ में छपा है कि—

(१०५) भोपाल। आज से कुछ मास पूर्व समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ था कि एक युवक के शरीर से लोहे की सुइयां निकल रही हैं। परन्तु इस पर किसी ने विश्वास नहीं किया। इसी सप्ताह की बात है कि 'आड ऐण्ड कल्चर' के सम्पादक श्री इरफ़ान साहिब ने बताया कि उन्होंने डाक्टर जफर द्वारा इस युवक के शरीर से सुई निकालते हुये पूरी फिल्म उतारी है। श्री इरफान ने अपना वक्तव्य देते हुये बताया कि जब एक सुई निकली तो उन्होंने विश्वास नहीं किया और कहा कि दूसरी मेरे सामने ही निकालो। दूसरी सुई निकालने की उन्होंने फिल्म भी ली जो कि कभी भी देखी जा सकती है। आपने यह भी बताया कि सुई में छेद भी रहता है। जिस तरह कपड़े सीने की सुई में रहता है।

इस युवक का नाम शराफत मोहम्मदखाँ है जो कि [illegible]दभंद (भूपाल,

से २ मील दूर) में रहता है और पी० डब्लू० डी० गंगा का मुलाजिम है। इसके शरीर को ये सुइयां १।। साल से सता रही हैं और अभी तक ३६० सुईयां शरीर से निकल चुकी हैं । हमीदिया अस्पताल में इसके चार आपरेशन किये गये। उनमें से खून आना कई दिन तक बन्द नहीं हुआ और अन्त वे नासूर बन गये। इस कारण वह सरजीकल इलाज से नफरत करने लगा है। पहले शराफत को सुईयाँ रोज परेशान करती थीं। अब २०-२५ दिन में हैरान करती है तब उन्हें निकालना पड़ता है। डा० जफर जिनके मातहत यह इलाज करवाता रहा है उन्होंने बताया कि ये सुंइयां जर्मनी, अमरीका, और पाकिस्तान में जाँच के लिए भेजी जा चुकी हैं परन्तु वहां से अभी तक रिपोर्ट नहीं आई।'

भूत, जो चाय का शौकीन है और किरायेदारों का दुश्मन

'नवभारत टाइम्स' दिल्ली १६-३-७०।

भारत में ही बहुत से लोग भूतप्रेत पर विश्वास करते हों ऐसी बात नहीं। शिक्षित और विकसित कहे जाने वाले देशों के बहुत से लोग भी प्रेतात्माओं पर विश्वास करते हैं, और जो लोग यकीन नहीं करते थे, देख सुनकर करने को मजबूर हैं।

सिडनी (आस्ट्रेलया) के स्टाकटन की एक बस्ती न्यूकासल के निवासी श्री माकलं कुक और उनकी पत्नी का कहना है कि 'हरी आंखों वाले' एक भूत के कारण उन्हें हाल ही में मकान छोड़ देना पड़ा है।

इस भूत ने उनकी चार मास की बेटी को न जाने क्या कर दिया कि बेचारी की आंखें अब झपकतीं ही नहीं। इस प्यारी-सी बच्ची की आंखों के सामने उंगली हिलाने पर भी वह बस शून्यमें देखती रहती है।

श्री कुक का कहना है कि मैंने भूत को नजदीक से देखा है। वह मर्द है और उसका चेहरा राख जैसा है—बड़ा ही भयानक। उसकी आंखें सफेद थीं लेकिन बीच में उनका रंग हरा है। मैं उसे देखकर बस चीख पड़ा था—बाद में फूट-फूट कर रो दिया।

श्री कुक का बयान है कि ताला बन्द दरवाजों में से यह भूत कमरों में घुस आता है और बिस्तरों को उठा फेंकता है। भूत को चाय पीने का बड़ा ही शौक है। खुद चाय बना कई-कई केतलियां पी जाता है।

इस भूत के डर से श्री कुक सपरिवार मकान छोड़ गये। अब पुलिस ने जांच-पड़ताल शुरू कर दी। एक कांस्टेबल मकान में आया। उसने एक-एक कोना छान मारा लेकिन भूत का कहीं कोई निशान नहीं मिला। आखिर बुड़बुड़ाते हुये सिपाही ने दरवाजों और खिड़कियों को ताले लगा दिये और अपने अफसरों को आकर रिपोर्ट दी कि वहां कोई भूत नहीं है।

दूसरे दिन कांस्टेबल मकान में फिर पहुंचा। उसने ताले खोले तो देखा कि कोई व्यक्ति बिस्तरों को उलट-पलट गया है रसोई घर में गया तो उसे चाय की केतली में चाय मिली—जैसे अभी-अभी कोई चाय पीकर गया है।

श्री कुक ने यह भी बताया कि इस मकान को छोड़ देने के बाद यह मालूम हुआ है कि यह भूत मुझ से पहले दो और किरायेदारों को इस मकान से खदेड़ चुका है। मुझ से पहले जो किरायेदार था, वह एक रात हड़बड़ा कर उठा तो कोई उसके कंधे को झकझोर रहा था लेकिन उसे कहीं कोई दिखाई नहीं दिया, वह उसी दम मकान छोड़ कर जो भागा तो फिर कभी नहीं लौटा।

उपसंहार

श्री भक्त रामशरण दास जी के संग्रह में और हमारे संग्रह में इस तरह की इतनी घटनायें इकट्ठी हो रही हैं कि यदि उन सब को प्रकाशित किया जाये तो 'पुराण-दिग्दर्शन' से भी वृहत्काय ग्रन्थ तैयार हो जाये। हमने जानबूझ कर प्रत्येक विषय की दो चार घटनाओं को ही उक्त परिशिष्ट में स्थान दिया है। विशेष कर वे ही घटनाएँ इसमें आने दी हैं जिन की पुष्टि हम अपने प्रामाणिक विश्वस्त व्यक्तियों से कर चुके हैं। पाठक इन्हें पढ़कर वर्तमान घटनाओं द्वारा भी पुराणोक्त घटनाओं की सत्यता का दृढ़ विश्वास कर सकेंगे ऐसी हमें आशा है।

जो नास्तिक 'कर्तुम्-अकर्तुम्'—अन्यथा 'कर्तुम्' प्रभु की अघटित घटना पटीयसी महीयसी माया को भी अपनी मुष्टिमेय बुद्धि द्वारा 'इदमित्थम्' जान सकने के स्वप्न देखते हैं वे अवश्य ही 'भूमि परे चहें गहन आकाशा' के निदर्शन हैं। यदि हमारे इस प्रयास से उनको भी कुछ—'अति विचित्र भगवन्त गति को जग जानन जोग' का आभास मिल सका तो हम अपने प्रयत्न को सफल समझेंगे। किमधिकम्—बस इन्हीं पंक्तियों के साथ 'मङ्गलं लेखकानाञ्च पाठकानाञ्च मङ्गलम्' कहते हुवे हम परिशिष्टाध्याय को यहीं समाप्त करते हैं। श्रीरस्तु—

मन्त्र-तपोबल-योगसिद्धि के चमत्कार युत नाना कृत्य।
तीन लोक में आदि सृष्टि से नर्तित प्रकृति नटीके नृत्य॥
जैसे हैं पुराण में वर्णित वैसे अब भी होते रोज।
सिद्ध किया, परिशिष्ट भागमें इस युगकी घटनाएँ खोज॥